

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ مُحَمَّدٌ وَنُصَلِّي عَلَى رَسُولِهِ الْكَرِيمِ وَعَلَى عِبْدِهِ الْمَسِيحِ الْمَوْعُودِ

हजरत मुस्लेह मौऊद ^{रि.} की 1924 ई. में
यूरोप की पहली यात्रा और उसकी बरकतें

अंक
51-52
मूल्य
600 रुपए



वर्ष
9
संपादक
शेख मुजाहिद अहमद
उप-संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

www.akhbarbadr.in

16-23 जमादिउस्सानी 1446 हिज्री क्रमि. 19-26 फ़तह 1403 हिज्री शम्सी. 19-26 दिसम्बर 2024 ई. Postal Reg. No. GDP/45 /2023-25

**हे खुदा ! तेरा प्रताप दुनिया में प्रकट हो
और यह मस्जिद तेरे नाम को उजागर करने का एक बड़ा केंद्र बने। आमीन।**

तिथि 3 अक्टूबर 1926 ई. को मस्जिद फज़ल, लंदन का बड़े धूमधाम के साथ उद्घाटन हुआ। इस अवसर पर सय्यदना हजरत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो दूरदर्शी संदेश भेजा, वह उद्घाटन के अवसर पर पढ़कर उपस्थित लोगों को सुनाया गया। उसका एक अंश नीचे प्रस्तुत है :

सय्यदना हजरत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

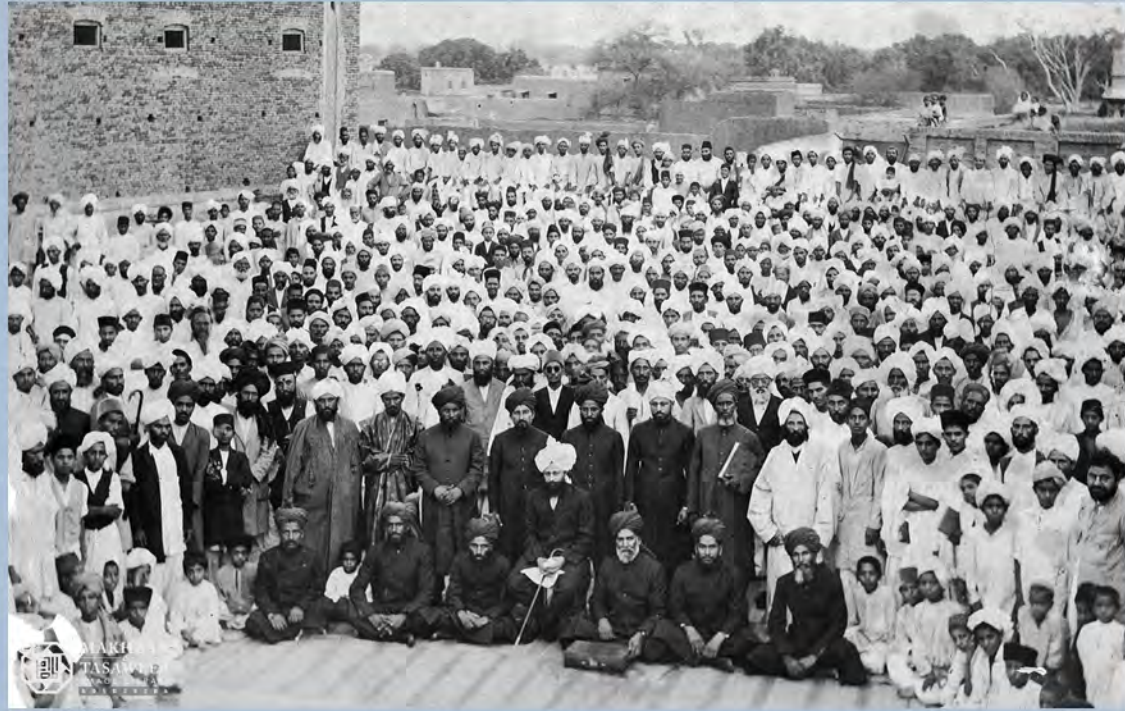
“हे भाइयो! दुनिया शिर्क, नास्तिकता, खुदा से बेरुखी, देशों के परस्पर द्वेष, राष्ट्रीय मतभेद और सामूहिक संघर्षों का अखाड़ा बन रही है। अतः हर व्यक्ति, जो अल्लाह से प्रेम करता है, उसका कर्तव्य है कि वह अपनी लापरवाही को छोड़ दे और अल्लाह के नाम पर बनाए गए घरों को नास्तिकता और फूट का केंद्र बनाने के बजाय एकेश्वरवाद और एकता का केंद्र बनाए। आओ हम सब मिलकर एकेश्वरवाद को जिस पर सब सहमत है स्थापित करें। हम लोगों के भीतर यह भावना पैदा करें कि वे सबसे बड़े मूर्ति, अर्थात् पक्षपात से मुक्त होकर, सच्चे दिल से एकमात्र अल्लाह की खोज करें। चाहे वह किसी भी धर्म में हो, उसे स्वीकार करें। हम उस खुदा की ओर न झुकें, जो हमारे दिमागों ने बनाया है, क्योंकि चाहे हम उसका नाम कुछ भी रखें, वह एक मूर्ति है। बल्कि उस खुदा की ओर झुकें, जो सारी दुनिया का निर्माता है, जिसकी झलक हर कण में दिखाई देती है, जो अपनी जीवित ताकतों को हमेशा अपने पवित्र अवतारों के माध्यम से प्रकट करता रहता है। और फिर उस पूरब और पश्चिम के खुदा पर ईमान लाते हुए यह प्रयास करें कि दुनिया में शांति और सुरक्षा स्थापित हो। एक देश के अंदरूनी मामलों में भी और विभिन्न देशों के बीच भी। हमारी महानता इसमें न हो कि हम अपने धन और ताकत के माध्यम दूसरों को दबाएं, न ही इसमें कि हम अपने गुटों के जरिए लोगों को उनके अधिकारों से वंचित करने का प्रयास करें, बल्कि हमारी महानता कमजोरों पर दया करने और हकदार को उसका हक देने में ही हो।

हे खुदा ! तेरा प्रताप दुनिया में प्रकट हो और यह मस्जिद तेरे नाम को उजागर करने का एक बड़ा केंद्र बने। आमीन।
व आखिरु दावा-ना अनिल-हम्दुलिल्लाहि रब्बुल् आलमीन।

(अल्-फ़ज़ल, क़ादियान, दारुल-अमान, 26 अक्टूबर 1926 ई., पृष्ठ 3)



हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके साथ यूरोप की यात्रा पर जाने वाले आप के साथी कुर्सियों पर, दाएं से बाएं: 1. मौलवी अब्दुर्रहमान साहब मिस्री, 2. हज़रत चौधरी फ़तेह मुहम्मद साहब सियाल, 3. हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु, 4. हज़रत खान जुल्फ़िकार अली खान साहब गोहर, 5. हज़रत हाफ़िज़ रोशन अली साहब। खड़े हुए, दाएं से बाएं : 1. मियां रहम दीन साहब बावर्ची, 2. हज़रत शेख़ याक़ूब अली साहब इरफ़ानी, 3. हज़रत डॉक्टर हशमतुल्लाह साहब, 4. हज़रत भाई अब्दुर्रहमान साहब क़ादियानी, 5. हज़रत चौधरी मुहम्मद शरीफ़ साहब वकील, साहीवाल, 6. हज़रत मौलवी अब्दुर्रहीम साहब दर्द, 7. हज़रत साहबज़ादा मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहब



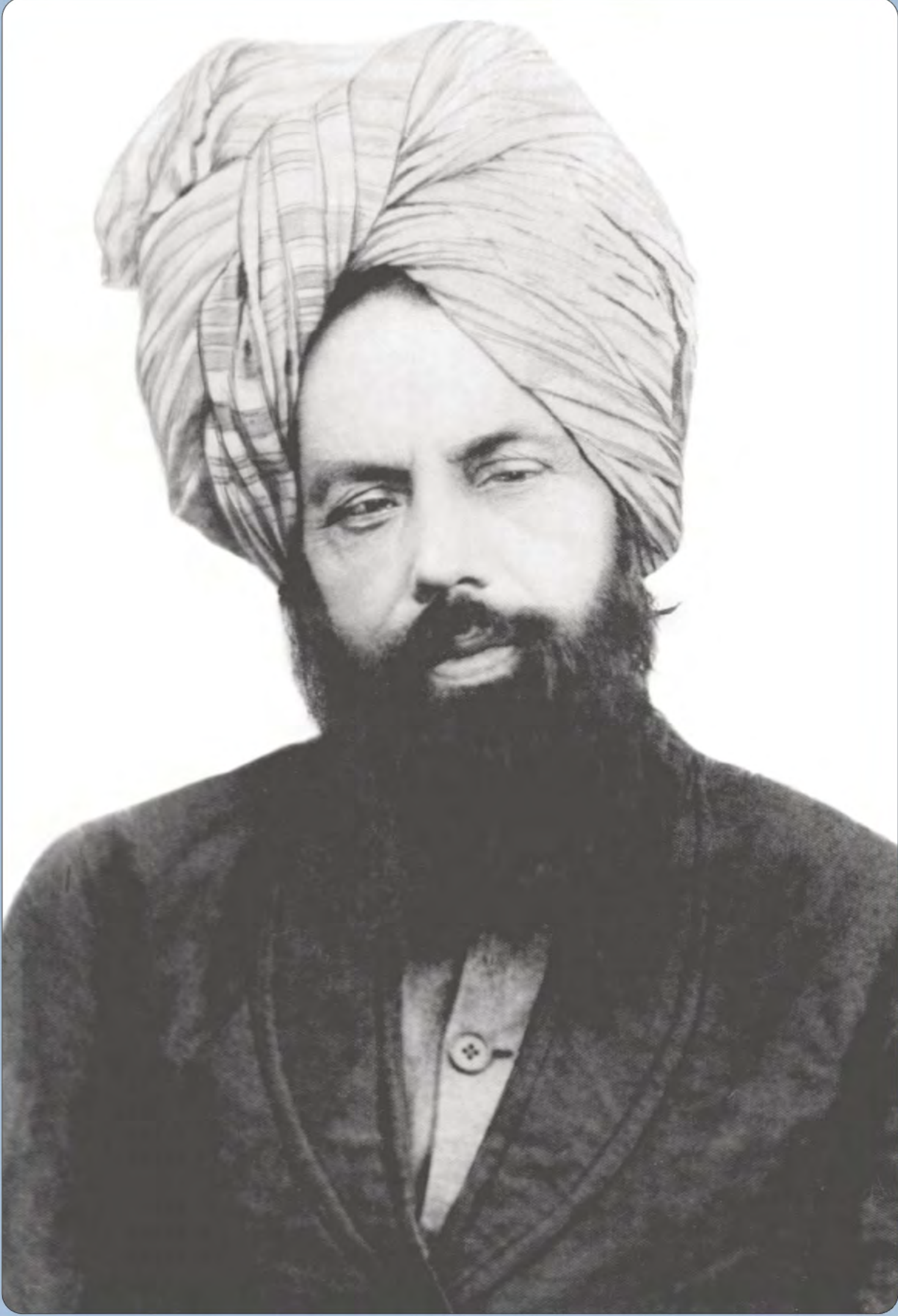
यूरोप रवानगी से पूर्व हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु क़ादियान के लोगों के साथ (11 जुलाई 1924 ई.)



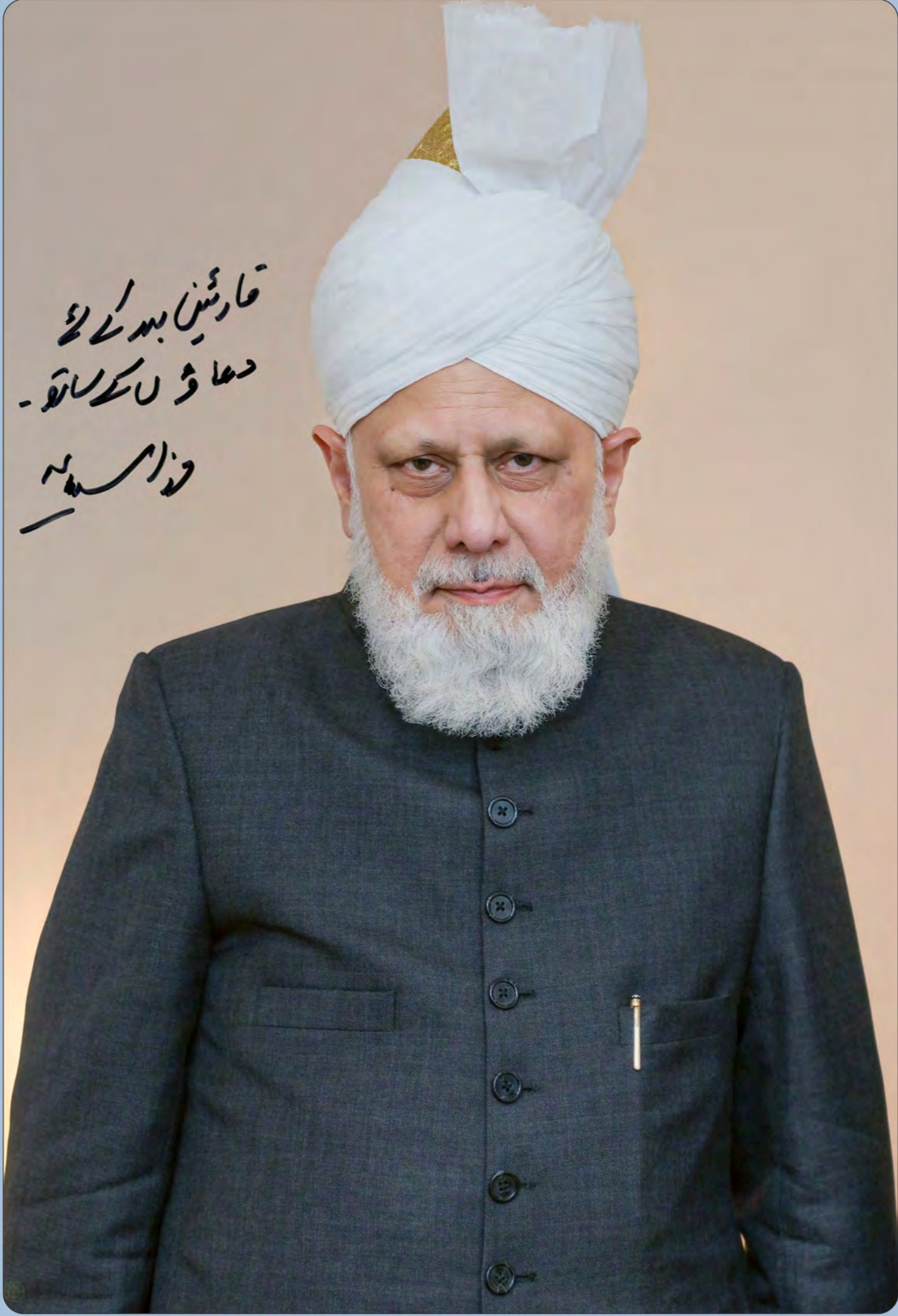
यूरोप यात्रा की एक यादगार तस्वीर



यात्रा के दौरान रेलवे स्टेशन पर हज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हु से मिलने वाले अहमदी दोस्त



हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम (1835-1908)



قاریں بے لاک
دعاؤں کے ساتھ۔
وزیر

सय्यदना व इमामना हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद खलीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़

इस शुभ यात्रा के दौरान आपने विभिन्न स्थानों पर लेक्चर दिए, अपने ठहरने के हर स्थान पर स्थानीय लोगों से संपर्क बढ़ाए। धार्मिक और राजनीतिक नेताओं, बुद्धिजीवियों, पत्रकारों और साधारण जनता ने आप से मुलाकात की। आप इस पूरी यात्रा के दौरान दिन-रात कठिन परिश्रम करते रहे। आपने अपना सारा समय निरंतर मेहनत और अत्यधिक व्यस्तता में बिताया।

यह यात्रा अत्यंत सफल और शुभ यात्रा थी, इसमें अल्लाह तआला की मदद और समर्थन के दृश्य हर जगह हमें दिखाई दिए। पाठकों को चाहिए कि वे "बदर" के इस विशेष अंक का अध्ययन करें ताकि आपके ज्ञान और विवेक में वृद्धि हो। पाठकों के लिए "बदर" के इस विशेष अंक में सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन खलीफा मसीह खामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ का प्रेमपूर्ण और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भरा

संदेश

इस्लामाबाद यूके

MA17-11-2024

प्रिय पाठको, साप्ताहिक बदर कादियान

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातहु

अलहमुदिलिल्लाह, अखबार बदर को "हज़रत मुस्लेह मौऊद^{रफ़ी} की 1924 ई. में यूरोप की पहली यात्रा और उसकी बरकतें" के शीर्षक से एक विशेष अंक प्रकाशित करने की तौफ़ीक मिल रही है। मुझसे इसके लिए संदेश भेजने का निवेदन किया गया है। मैं इस संदर्भ में कुछ ज़रूरी बातें व्यक्त करना चाहता हूँ।

सितंबर 1924 में वेंबली (लंदन) में एक धार्मिक सम्मेलन आयोजित किया गया था, जिसमें ब्रिटिश साम्राज्य के विभिन्न मज़हबों के प्रतिनिधियों को यह निमंत्रण भेजा गया था कि वे अपने-अपने धर्मों के सिद्धांतों पर रोशनी डालें। हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु की सेवा में भी सम्मेलन की प्रशासनिक समिति (जिसमें इंग्लैंड के बड़े-बड़े मशहूर विद्वान शामिल थे) की तरफ से इसमें भाग लेने का निमंत्रण भेजा गया। आपने स्वयं इसमें शिरकत की। उस समय आप अपने साथ ग्यारह लोगों का एक प्रतिनिधिमंडल लाए थे। यह खलीफ़तुल मसीह का यूरोप का पहला दौरा था और इसके साथ अरब देशों का दौरा भी शामिल था। शाम, मिस्र, फिलिस्तीन आदि अरब देशों में तो हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु के अलावा किसी भी खलीफ़ा का दौरा नहीं हुआ। हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु अपने इस सफर के बारे में फ़रमाते हैं :

"यह दो भविष्यवाणियाँ पूरी करने के लिए था। एक आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी जो दमिश्क के बारे में थी और एक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जो इंग्लैंड के बारे में थी।"

(अन्वारुल ऊलूम, भाग 8, पृष्ठ 465)

दमिश्क के बारे में भविष्यवाणी के पूरा होने का वर्णन करते हुए आप फ़रमाते हैं :

"फिर मिनारतुल बैज़ा (सफेद मिनारह) का भी अजीब मामला हुआ... हमें हैरानी थी कि वह कौन सा मिनारा है, देख तो लें। सुबह को मैंने होटल में नमाज़ पढ़ाई। इस समय मैं और जुल्फ़िकार अली खान साहब और डॉक्टर हशमतुल्लाह साहब थे, अर्थात मेरे पीछे दो मुक़तदी थे। जब मैंने सलाम फेरते हुए देखा तो सामने मीनारा था और हमारे और उसके बीच सिर्फ एक सड़क का फासला था। मैंने कहा यही वह मीनारा है और हम इसके पूर्व में थे। यही वह सफेद मीनारा था और कोई नहीं था। मस्जिद उमवी के मीनारे नीले रंग के थे। जब मैंने इस सफेद मीनारे को देखा और पीछे दो मुक़तदी थे तो मैंने कहा कि वह हदीस भी पूरी हो गई।"

(अन्वारुल ऊलूम, भाग 8, पृष्ठ 614)

यूरोप की यात्रा के बारे में आपने फ़रमाया :"

यूरोप की तरफ मसीह मौऊद या आपके किसी उतराधिकारी का इस उद्देश्य से सफर करना, जिस उद्देश्य से मैंने सफर किया है, कुरआन करीम में भी उल्लेखित है... यह उल्लेख सूरः कहफ़ में है... तो जबकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तहरीर के अनुसार, जुलकरनैन आप हैं और पश्चिमी देशों से तात्पर्य यूरोप और अमेरिका के लोग हैं जो मसीही धर्म के स्रोत पर डेरा डाले हुए हैं, तो साफ़ ज़ाहिर होता है कि मसीह मौऊद या उनके किसी उतराधिकारी को पश्चिमी देशों का सफर करना होगा... तो यह सफर वास्तव में एक भविष्यवाणी के अधीन है जो इतनी महत्वपूर्ण है कि कुरआन करीम में इसका ज़िक्र किया गया है। साथ ही यह भी मालूम होता है कि यह सफर तब्लीग के लिए नहीं बल्कि तब्लीग से संबंधित उसूल तय करने और इल्म प्राप्त करने के लिए किया जाएगा।"

(अन्वारुल ऊलूम, भाग 8, पृष्ठ 434 से 435)

इस सफर के द्वारा कुछ रूहानी घटनाएँ भी पूरी हुईं। इनमें से एक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की यह रोया (तंद्रा अवस्था) घटना है :

"मैंने देखा कि मैं शहर लंदन में एक मिम्बर पर खड़ा हूँ और अंग्रेज़ी भाषा में एक अत्यंत परिपूर्ण सारगर्भित से इस्लाम की सच्चाई को प्रकट कर रहा हूँ।"

(इज़ाला-ए-उहाम, रूहानी खज़ायन भाग 3, पृष्ठ 377)

इसके अतिरिक्त, हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु ने स्वयं भी दो स्वप्न देखे, जिनमें से एक का वर्णन आपने इस प्रकार किया :

"इस बादशाह ने, जिसके कब्जे में सारी दुनिया की सत्ता है, मुझे एक स्वप्न में बताया था कि मैं इंग्लैंड गया हूँ और एक विजेता जनरल की तरह उसमें प्रवेश किया हूँ। और उस समय मेरा नाम "विलियम फ़ातेह" रखा गया।"

(अन्वारुल ऊलूम, भाग 8, पृष्ठ 463)

अतः, आप इटली, स्विट्ज़रलैंड और फ्रांस से होते हुए 22 अगस्त 1924 ई. को इंग्लैंड पहुँचने का सफर तय किया। लंदन में ठहरने के दौरान आपके कई कार्यक्रम और गतिविधियाँ थीं, जिनमें से एक धार्मिक सम्मेलन में आपके व्याख्यान और मस्जिद फ़ज़ल लंदन के शिलान्यास समारोह के बारे में यहाँ संक्षेप में कुछ बताया जा रहा है।

धार्मिक सम्मेलन में आपके व्याख्यान के लिए 23 सितंबर शाम 5 बजे का समय निर्धारित किया गया था। इस अवसर पर सभा के अध्यक्ष सर थियोडोर मारिसन ने आपकी परिचय प्रस्तुत किया और फिर अत्यंत आदर व सम्मान के साथ आपसे भाषण देने का अनुरोध किया। सबसे पहले आपने अंग्रेज़ी में एक संक्षिप्त भाषण दिया। फिर कहा, "इसके बाद मैं अपने शिष्य चौधरी ज़फ़रुल्लाह खान साहब, बैरिस्ट्र से कहता हूँ कि वह मेरा लेख प्रस्तुत करें।" इस पर चौधरी साहब ने उस लेख का अंग्रेज़ी में अनुवाद बहुत ही

प्रभावशाली और उच्च शैली में पढ़ा। जब लेख में इस्लाम के बारे में कुछ ऐसी बातें कही जातीं जो उनके लिए नई होतीं, तो कई लोग खुशी से उछल पड़ते थे। यह व्याख्यान इतना विशिष्ट और अद्वितीय था कि ईसाई धर्म के बड़े-बड़े नेता भी अनायास बोल पड़े कि निस्संदेह इस लेख में जो विचार प्रस्तुत किए गए हैं, वे क्रम, तर्क और अपनी विशेषता तथा सुंदरता के लिहाज से अद्वितीय और अनोखे हैं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

"खुदा के फ़ज़ल से व्याख्यान बहुत सफल रहा। और जितने लोग हमारे व्याख्यान में थे, उतने किसी और व्याख्यान में नहीं थे, जगह बाकी नहीं रही थी और लोगों ने ध्यान से सुना और बाद में सर थियोडोर मारिसन और अन्य लोगों ने हमें बधाई दी और आधे घंटे तक विभिन्न दोस्तों से घिरे खड़े रहे और बातें करते रहे। अल्लाह के फ़ज़ल से इस क्षेत्र में इस्लाम की इतनी प्रसिद्धि हुई है और अहमदियत का नाम प्रसिद्ध हुआ है कि अगर भविष्य में मेहनत से काम किया जाए तो बड़ी सफलता की उम्मीद है।"

(अन्वारुल ऊलूम, भाग 8, पृष्ठ 519)

जहाँ तक मस्जिद फ़ज़ल की शिलान्यास समारोह का प्रश्न है, 19 अक्टूबर 1924 ई. को इस मस्जिद का शिलान्यास किया गया। इस समारोह में भाग लेने के लिए संसद के सदस्य, नेता, राजनेता, राजनयिकों सहित बहुत से लोगों को निमंत्रण भेजे गए थे, क्योंकि समय सीमित था, इसलिए यह विचार किया गया था कि थोड़े लोग आएंगे, लेकिन मेहमानों की बड़ी संख्या ने इस समारोह में भाग लिया। विभिन्न देशों के प्रतिनिधि भी इस समारोह में शामिल हुए और समारोह अत्यंत सफल रहा। हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु इस समारोह के समय की अपनी आंतरिक स्थिति का उल्लेख करते हुए फ़रमाते हैं:

"मुझे याद है, 1924 ई. में जब मैं लंदन गया और मैं ने वहाँ मस्जिद की नींव रखी, तो उस समय मेरी यह स्थिति थी कि मेरी आँखों से आँसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे, क्योंकि उस समय वह दृश्य मेरी आँखों के सामने फिर से आ गया, जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने खुदा से इल्हाम प्राप्त कर यह घोषणा की थी कि 'दुनिया में एक नज़ीर (डराने वाला) आया, लेकिन दुनिया ने उसे स्वीकार नहीं किया, परंतु खुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े ज़ोरदार हमलों से उसकी सच्चाई को प्रकट करेगा।' ... खुदा ने कहा, 'उठ और दुनिया में मेरे नाम की घोषणा करो और उनसे कह दो कि حَانَ أَنْ تُعَانَ وَتُعْرِفَ بَيْنَ النَّاسِ. वह समय आ गया है कि खुदा तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हें दुनिया में अमर प्रसिद्धि देगा।"

(अन्वारुल ऊलूम, भाग 26, पृष्ठ 529)

अतः हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु ने विनम्र दुआओं के साथ इस मस्जिद की नींव रखी।

फिर इस मस्जिद में आपने और आपके बाद मेरे सहित सभी खलीफ़ाओं ने नमाज़ें पढ़ाईं और यहाँ ठहरे भी। हज़रत खलीफ़तुल मसीह चतुर्थ रहमहुल्लाह तआला की हिजरत के बाद, यह मस्जिद खलीफ़ा-ए-वक्त की मौजूदगी की वजह से केंद्रीय स्थान बन गई। यहीं से पूरी दुनिया में MTA का प्रसारण शुरू हुआ। ख़िलाफ़त-ए-ख़ामिसा का चुनाव भी इसी मस्जिद में हुआ और इस्लामाबाद (यूके) के पुनर्निर्माण से पहले मैं भी वहीं निवास करता था। इस बरकत भरे सफ़र के दौरान आपने विभिन्न स्थानों पर व्याख्यान दिए। अपने ठहराव के हर स्थान पर स्थानीय लोगों से संपर्क बढ़ाया। धार्मिक और राजनीतिक नेताओं, बुद्धिजीवियों, समाचार पत्रों के प्रतिनिधियों और साधारण जनता ने आपसे मुलाकात की। आपने कुछ लोगों के पास अपने साथियों को भी मिलने के लिए भेजा। इटली में ठहरने के दौरान आपने पोप को इस्लाम की संक्षिप्त शिक्षा का उपहार पेश करने

के लिए उनसे दो बार लिखित रूप में संपर्क किया, लेकिन उनकी तरफ से घर की मरम्मत का बहाना पेश किया गया और मुलाकात नहीं हो सकी। आपने धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण स्थानों का भी दौरा किया, जिनमें फिलिस्तीन, दमिश्क की मस्जिद उमविया, मिस्र के म्यूजियम में फिरौन का शव और इटली में अस्थाब-ए-कहफ की गुफाएँ (कैटाकॉम्ब्स) Catacombs शामिल हैं। आप इस पूरे सफ़र के दौरान व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से दुआओं में व्यस्त रहे। दिन भर और रात को देर तक काम करते रहे। आपने अपना सारा समय अथक मेहनत में अत्यधिक व्यस्तता में बिताया। आप अपने इस सफ़र की सफलता का उल्लेख करते हुए कहते हैं:

"इस सफ़र में सिलसिले की अज़मत का जो प्रभाव हुआ, उसे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते। जिस किसी क्षेत्र से हम गुज़रे, वहाँ से यही आवाज़ आई कि हम आपको जानते हैं। हॉलैंड में चौधरी ज़फ़रुल्लाह खान साहब एक व्यक्ति को तब्लीग़ कर रहे थे। बातचीत के दौरान उन्होंने मेरी तस्वीर दिखाई। वह कहने लगा, 'यह तस्वीर मैंने देखी है।' बर्लिन से मास्टर मुबारक अली साहब ने एक अखबार भेजा, जिसमें मेरे पूरे कद की तस्वीर पूरे पन्ने पर प्रकाशित हुई थी। अमेरिका में भी तस्वीर छप रही है। इसी तरह इटली में, बगदाद में और अन्य देशों में तस्वीरें और लेख प्रकाशित हुए और इस माध्यम से प्रसिद्धि हुई। आते समय जहाज़ में स्विट्ज़रलैंड के कौंसल की पत्नी भी थी। हमारे दोस्तों से उसकी बातचीत हुई, जब फोटो दिखाया गया तो उसने कहा, 'यह तो देखा हुआ है।' पूछा, 'कैसे?' तो उसने कहा, 'सिनेमाघर में।' खैर, इतनी प्रसिद्धि हो गई है कि अब हमारा बच्चा भी जाए तो लोग समझेंगे कि इसके पीछे एक मज़बूत जमाअत है।" इस प्रकार इसका पता इस तरह चला कि काबुल के खिलाफ एक विरोध सभा में तीन पादरी शामिल हुए, जो बहुत प्रभावशाली थे। एक ने भाषण देते हुए कहा कि वह समय आएगा जब सरकारें अहमदियों के कब्जे में होंगी। उस समय ये लोग जो मानवता के लिए कष्ट झेल रहे हैं, उनकी नस्लें देखेंगी और गर्व करेंगी कि हमारे पूर्वज वे थे जिन्हें लोग बात भी नहीं करने देते थे और उन्हें मार डालते और हर प्रकार की पीड़ा देते थे। आज हम उनकी बलिदानों के परिणामस्वरूप शासक हैं।

(अन्वारुल ऊलूम, भाग 8, पृष्ठ 616-615)

हज़रत भाई अब्दुलरहमान साहब क़ादियानी की रिवायत है कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया:

"हमारा यह सफ़र भी जेहलम के सफ़र की तरह खुदा की रहमत और फ़ज़ल के द्वारा हुआ और सफलता भी फ़ज़लों से हुई है। जैसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सफ़र जेहलम में खुदा ने विशेष मसलेहत से सफ़र के सामान तैयार किए और सफलताएँ दीं, ठीक उसी तरह इस सफ़र के सामान हुए और परिणामस्वरूप खुदा ने एक रूह पैदा कर दी है।"

(यूरोप की यात्रा, पृष्ठ 491-490)

तो यह सफ़र अत्यंत सफल और बरकत भरा था। इस में अल्लाह तआला की मदद और समर्थन के दृश्य हर जगह नज़र आए।

पाठकों को चाहिए कि "बदर" के इस विशेष अंक का अध्ययन करें ताकि आपके ज्ञान और समझ में वृद्धि हो। अल्लाह तआला इसकी प्रकाशन को हर लिहाज से बरकत दे। आमीन।

वस्सलाम

ख़ाकसार

خدا

खलीफ़तुल मसीह पंचम

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु
की यूरोप यात्रा
कुछ दिनों की यात्रा, सदियों की बरकतें
(संपादकीय)

जमाअत के वार्षिक जलसा क्रादियान 2024 के अवसर पर प्रकाशित होने वाले अखबार 'बदर' के विशेष संस्करण के लिए हज़रत अनवर अय्य-दुल्लाह तआला बिनसेहिल अज़ीज़ ने "सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का पहला यूरोप दौरा 1924 ई. और उसकी बरकतें और परिणाम" के शीर्षक को स्वीकृति प्रदान की है। अत्यधिक व्यस्तताओं के बावजूद, हज़रत अनवर अय्यदुल्लाह तआला बिनसेहिल अज़ीज़ ने इस विशेष अंक के लिए एक गहरा संदेश, हस्ताक्षर सहित अपनी तस्वीर भी बदर के पाठकों के लिए भेजी है। इसके लिए हम हज़रत अनवर अय्य-दुल्लाह के अत्यंत आभारी हैं और उनके लिए दुआ करते हैं "अल्लाहुम्मा अय्यद इमामना बिरुहिल कुदुस व बारिक लना फी उमरेही व अमरेही।"

यहाँ "अत्यधिक व्यस्तता" मात्र एक औपचारिक शब्द नहीं है; वास्तव में "खिलाफत एक अत्यंत कठिन जिम्मेदारी है, जिसका कार्यभार इतना बड़ा है कि अगर इसमें अल्लाह का अनुग्रह न हो तो व्यक्ति थोड़े ही समय में थकान से समाप्त हो जाए। लेकिन चूंकि यह जिम्मेदारी अल्लाह के संरक्षण में है, इसलिए वह अपनी कृपा से इसे बनाए रखता है।" हमारा कर्तव्य है कि हम हज़रत अनवर को नियमित रूप से अपनी दुआओं में शामिल रखें क्योंकि यह हमारी अपनी भलाई के लिए है।

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु जुलाई 1924 ई. में क्रादियान से यूरोप के लिए रवाना हुए थे। इस प्रकार इस यात्रा को एक सदी हो गई, जिसके अवसर पर हमें इस विशेष अंक को प्रकाशित करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। अल्लाह इसे बरकतों से भर दे और पाठकों के लिए ज्ञान में वृद्धि का कारण बनाए। आमीन।

क्रादियान से रवाना होने से लेकर क्रादियान लौटने तक की यह यात्रा बहुत व्यापक, अत्यंत रोचक और ईमान को ताज़ा करने वाली है। प्रस्थान के समय की दुआओं और हज़रत से बिछड़ने का दर्दनाक दृश्य और वापसी पर खुशी और उत्सव का माहौल अवर्णनीय हैं। इस यात्रा के उद्देश्यों और इसके महत्व पर हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु ने जिस तरह से प्रकाश डाला और इस यात्रा के परिणामस्वरूप अहमदियत की जीत की बुनियाद रखी गई और जो सफलता प्राप्त हुई, वह हमारे लिए बेहद ईमान को सुदृढ़ करने वाली बातें हैं। इस यात्रा के परिणामस्वरूप पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी पूरी हुई, हज़रत मसीह मौऊद अलैहि-स्सलाम की भविष्यवाणी और स्वप्न पूरी हुई, और स्वयं सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का स्वप्न भी पूरा हुआ।

इस यात्रा में कई जलसों का आयोजन हुआ, जिनमें हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु ने व्याख्यान दिए, और कई सामूहिक मुलाकातों की जिनमें आपने लंदन के निवासियों और नए मुसलमानों को इस्लामी शिक्षाओं और रूहानी संदेश से अवगत कराया। लंदन में 'मस्जिद फज़ल' की आधारशिला रखी। कई देशों के हालात और प्रचार के अवसरों का जायज़ा लिया। इस यात्रा के दौरान पैग़ामियों द्वारा भी कई आपत्तियां की गईं जिनके उत्तर में कई लेख 'अल्-फज़ल' में प्रकाशित हुए।

यात्रा की रिपोर्ट की व्यापकता का एक और पहलू यह है कि इस यात्रा के दौरान कई प्रेरणादायक और ईमान को ताज़ा करने वाली कविताओं का एक सिलसिला भी चलता रहा। हज़रत की विदाई और प्रस्थान पर

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. की 1924 ई. में यूरोप की पहली यात्रा और उसकी बरकतें

क्रम	विषय सूची	पृष्ठ
1	सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की यूरोप यात्रा कुछ दिनों की यात्रा, सदियों की बरकतें	1
2	सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का यूरोप का दौरा 1924 ई. की रिपोर्ट	2
3	यह एक ऐसा महान कार्य है जिसके अच्छे परिणाम पीढ़ी दर पीढ़ी उत्पन्न होते रहेंगे और इतिहास इसकी याद को ताज़ा रखेगा। "वह मस्जिद एक केंद्रीय बिंदु होगी जिससे नूरानी किरणें निकलकर पूरे इंग्लैंड को प्रकाशित करेंगी।" मस्जिद फज़ल लंदन - आधारशिला, निर्माण और उद्घाटन	8
4	वेम्बले सम्मेलन की रिपोर्ट और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के लेख पर बुद्धिजीवियों और अखबारों का टिप्पणियाँ	13
5	हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) के पहली यूरोप की यात्रा 1924 ई. के बरकतें और समारात	18

विदाई कविताएँ, हज़रत की वापसी पर स्वागत कविताएँ, तो दूसरी ओर विदेश में इस्लामी प्रभाव की खुशी में जोशीली कविताएँ, लंदन में मस्जिद की आधारशिला रखने की खुशी में रचनाएँ भी प्रस्तुत की गईं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने क्रादियान और इसके निवासियों की जुदाई में और क्रादियान की शान में यात्रा के दौरान एक सुंदर कविता लिखी, जिसके दो अशआर यहाँ प्रस्तुत हैं

खयाल रहता है हमेशा इस मुक़ाम-ए-पाक का
सोते-सोते भी ये कह उठता हूँ, "हाए क्रादियाँ!"

आह, कैसी खुशानीब घड़ी होगी कि बाअनील-मराम
बांधेंगे हम रुख्त-ए-सफ़र को बराए क्रादियाँ
इसके उत्तर में हज़रत सैयदा नवाब मुबारिका बेगम साहिबा (रज़ि.) ने भी क्या खूबसूरत नज़्म कही कि जितनी बार पढ़ो, प्यास नहीं बुझती। उसके दो शेर ये हैं

आपको है शौक-ए-लिक़ाए क्रादियाँ

हिज़्र में खूं बार हैं यहाँ चश्म-ए-हाए क्रादियाँ

सब तड़पते हैं, कहाँ है ज़ीनत-ए-दारुल-अमान

रौनक-ए-बुस्तान-ए-अहमद, दिलरुबा-ए-क्रादियाँ

क्रादियाँ पहुँच कर एक अवसर पर हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया

"मेरे नज़दीक इस यात्रा से बड़े-बड़े फ़ायदों के अतिरिक्त, जिनमें से कुछ का वर्णन मौलवी शेर अली साहब ने किया है, कुछ छोटे फ़ायदे भी हुए हैं। उनमें से एक यह है कि मेरे यात्रा पर जाने से कई नए शायर पैदा हो गए हैं, विशेषतः हमारी बहन शायरा बन गई हैं।"

वास्तव में यह यात्रा क्या था! प्रस्थान से लेकर क्रादियाँ वापसी तक, हर बात दिल में उतरने वाली, रूह में समा जाने वाली, और ईमान व

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का यूरोप का दौरा 1924 ई. की रिपोर्ट

(हाफिज़ सैयद रसूल नयाज़, मुरब्बी सिलसिला नज़ारत नशर-ओ-इशाअत कादियान)

11 जुलाई 1924 ई.

जुमआ के दिन बिहिश्ती मकबरा में तीन बार दुआ

11 जुलाई की सुबह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मजार-ए-मुबारक पर दुआ करने के लिए बिहिश्ती मकबरा तशरीफ़ ले गए। हज़रत ने मजार के पूर्वी दरवाज़े पर खड़े होकर काफी देर तक दुआ की। फिर दक्षिण की ओर मौज़ा नंगल से होते हुए मौज़ा कालवां के पास की सड़क तक तशरीफ़ ले गए और फिर दूसरे रास्ते से लौट कर दोबारा बिहिश्ती मकबरा तशरीफ़ लाए और मजार-ए-मुबारक पर फिर से दुआ की। उसी दिन, मगरिब की नमाज़ के बाद, तीसरी बार बिहिश्ती मकबरा तशरीफ़ ले गए और मजार-ए-मुक़द्दस पर दुआ की।

मस्जिद-ए-अक्सा में विदाई समारोह

जुमआ की नमाज़ के बाद मस्जिद में बड़ी संख्या में लोग मुलाकात के लिए तशरीफ़ लाए थे, जिन्हें हज़रत से हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। असर की नमाज़ हज़रत ने मस्जिद मुबारक में पढ़ाई और फिर मस्जिद-ए-अक्सा तशरीफ़ ले गए, जहां एक बड़े जमावड़े में हज़रत का उन साथियों के साथ फ़ोटो लिया गया, जिन्हें इस दौरे में हज़रत के साथ रवाना होना था। इस मौके पर हज़रत डॉक्टर मीर मुहम्मद इस्माइल साहब की एक नज़्म, जिसे मलिक अब्दुल अज़ीज़ साहब, मदरसा अहमदिया के विद्यार्थी होने का रुहानी अंदाज़ में सुनाया, हज़रत की आँखें नम हो गईं और आखिर तक अपने चेहरे को रूमाल से ढके रहे। नज़्म के दर्द भरे शेरों ने दुखी दिलों और उठे हुए जज़्बात की अक्कासी की, जिसने कई लोगों की आँखों को नम कर दिया और उनके दिली हालत को वर्णन करने का हक अदा किया।

कादियान से रवाना होना

12 जुलाई रवाना होने का दिन था। सुबह-सवेरे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मजार-ए-मुबारक पर हज़रत ने आख़री बार दुआ की। उस दिन लोग सुबह की नमाज़ के बाद से ही मस्जिद मुबारक के पास बाज़ार में जमा होने लगे थे। आठ बजे के करीब एलान हुआ कि हज़रत दुआ करवा रहे हैं, सभी लोग दुआ के लिए हाथ उठाए। हज़रत ने बेअतुद-दुआ में बैठकर लंबी दुआ करवाई और फिर घर से बाहर तशरीफ़ लाए। लोग मुसाफ़ा करने के लिए बेकरार आगे बढ़े, लेकिन हुक्म हुआ कि मुसाफ़ा सड़क के मोड़ पर होगा। रास्ते में, हालांकि इंतज़ाम करने वालों ने हज़रत को घेरे में लेकर भीड़ को पीछे रखा था, लेकिन भीड़ का दबाव काबू से बाहर होता जा रहा था। कई लोग एक-दूसरे पर गिरते, परंतु बिना किसी शिकवा के फिर से आगे बढ़ने की कोशिश में लग जाते। भीड़ की तेज़ रफ़्तार से रास्ते की धूल बादल की तरह उड़ रही थी। इंतज़ाम करने वालों ने सोचा कि हज़रत को तकलीफ़ होगी, तो सभी लोगों को करीब आने से रोका, लेकिन हज़रत ने नापसंद फ़रमाया और हुक्म दिया कि किसी को न रोका जाए। साथ ही यह भी फ़रमाया कि मैं भी धीरे चलता हूँ, आप लोग भी धीरे चलें ताकि ज़्यादा धूल न उठे। हज़रत ने सड़क के मोड़ के पास पहुंचकर, जहां कई लोग और खासकर महिलाओं की बड़ी संख्या पहले से मौजूद थी, पूरे जमावड़े के साथ एक लंबी दुआ करवाई।

दुआ के बाद भीड़ की तस्वीर ली गई और हज़रत अपनी माता हज़रत उम्मुल मोमिनीन के हुक्म पर उनसे मिलने के लिए मर्दों की भीड़ से बाहर तशरीफ़ ले गए। हज़रत उम्मुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हु ने देर तक

हज़रत को गले से लगा कर अपनी मां जैसी ममता और मुहब्बत का इज़हार किया और बार-बार दुआएं दीं। इसके बाद हज़रत मोटर के पास खड़े हो गए और साथी एक-एक करके मुसाफ़ा करते हुए सड़क के दोनों तरफ़ कतार में खड़े होते गए। सभी लोगों के मुसाफ़ा कर लेने के बाद हज़रत मोटर में सवार हुए, और दोनों मोटरों, जिनमें हज़रत के साथ जाने वाले साथी भी सवार थे, 'अल्लाहु अकबर' के नारों के बीच रवाना हो गईं।

(अल्-फ़ज़ल 15 जुलाई 1924, पृष्ठ 1 से 2)

काफ़िला को बटाला पहुंचने में देर हो गई। ट्रेन रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर खड़ी थी, जहां हज़रत के इंतज़ार में भारी भीड़ थी और बटाला की जमाअत और सभी दोस्त बेसब्री में थे। इतने में हज़रत अपने खादिमों के साथ बटाला स्टेशन पर पहुंचे, और 'अल्लाहु अकबर' के नारे बुलंद होते रहे।

बटाला से रवाना होना

ट्रेन बटाला से जैतीपुर पहुंची, वहां भी यात्रियों की एक बड़ी भीड़ हज़रत की ट्रेन के सामने मौजूद थी। अमृतसर स्टेशन पर बड़ी संख्या में जमाअत के लोग मौजूद थे, जो लाहौर और अमृतसर तथा आसपास के इलाकों से हज़रत की आमद की खबर सुनकर जमा हुए थे। लाहौर और अमृतसर की जमाअतों ने तस्वीरें लीं।

ब्यास

जब ट्रेन ब्यास रेलवे स्टेशन पर पहुंची, तो जानकारी के मुताबिक हज़रत तस्वीर के लिए तशरीफ़ ले गए, जहां उनकी तीन अलग-अलग तस्वीरें ली गईं।

जलंधर, फगवाड़ा, फुल्लौर

जलंधर शहर, जलंधर छावनी, फगवाड़ा और फुल्लौर के स्टेशनों पर कई समर्पित जमाअतें उपस्थित थीं। ज़िला जलंधर और होशियारपुर के सदस्यों ने अपनी मुहब्बत और इखलास का इज़हार किया।

लुधियाना

लुधियाना में शहर की जमाअत के अतिरिक्त आसपास के गांवों और इलाकों के इखलास रखने वाले भी जमा थे। लुधियाना की जमाअत ने इस खुशी में पूरी ट्रेन में बर्फ और दूध का शरबत बांटा। जलंधर स्टेशन पर जमाअतों ने सोडा, बर्फ, और होशियारपुर के आमों से मेहमानों की खिदमत की।

खन्ना

खन्ना स्टेशन पर हज़रत मुंशी अब्दुल्ला साहब सनोरी द्वारा तैयार की गई गौसगढ़ की जमाअत, जो 18 मील का यात्रा पैदल तय कर के आई थी, मौजूद थी। एक औरत ने यहां बड़ी बहादुरी दिखाई। ट्रेन चलने का सिग्नल हो चुका था, लोगों ने उसे रोका कि नीचे से ही सलाम कर लो क्योंकि ट्रेन चलने वाली है, लेकिन उसने किसी की न सुनी और बुरका ओढ़े ट्रेन पर चढ़कर हज़रत की खिदमत में हाज़िर हो गईं। जब ट्रेन रवाना हुई, तो उतरने की कोशिश में चलती ट्रेन से कूद पड़ी। उसकी जान को खतरा था और पूरा बदन चोटिल होने ही वाला था कि एक अहमदी दोस्त ने झपटकर उसे हाथों में ऐसे थाम लिया जैसे मां अपने बच्चे को गोद में उठा लेती है।

राजपुरा स्टेशन

राजपुरा स्टेशन पर पटियाला की जमाअत ने खाने का इंतज़ाम किया था। खाना अच्छे तरीके से सभी दोस्तों में बांटा गया, और अंबाला छावनी

तक दोस्तों के साथ चलते-चलते खाना खिलाते रहे।

मुज़फ्फरनगर और मेरठ

मुज़फ्फरनगर और मेरठ छावनी और शहर के दोस्तों ने हज़ूर की दस्ता बोसी (हाथ चूमने) और दीदार का शराफत पाया और लाभान्वित होकर लौट गए। गाज़ियाबाद पहुंचने के बाद ट्रेन दिल्ली पहुंची।

दिल्ली स्टेशन, 13 जुलाई

जमाअत ने एक शानदार स्वागत का झंडा तैयार कर रखा था और प्लेटफॉर्म पर स्वागत के लिए हाजिर थी। तस्वीर खींचने के लिए खास इंतज़ाम थे। दिल्ली की जमाअत ने दोपहर के खाने का भी इंतज़ाम किया था, साथ ही दूध, चाय, और बर्फ भी उपलब्ध थी। बरेली, शाहजहांपुर की जमाअतें और कायमगंज के अब्दुल गफार खान साहब भी दिल्ली स्टेशन पर आए हुए थे। अलीगढ़ से डॉक्टर इकबाल अली साहब भी तशरीफ़ लाए थे।

दिल्ली से निकलने के बाद कई स्टेशनों पर ट्रेन रुकी, जहां भी दो-तीन दोस्त हज़ूर की ज़ियारत के लिए मौजूद थे, जो मेरे ख्याल में बल्लभगढ़ के थे। चलती ट्रेन में दोस्तों को दिल्ली से लाया हुआ खाना खिलाया गया।

मथुरा

मथुरा स्टेशन पर आगरा की जमाअत मौजूद थी। हमारे अमीरल मुजाहेदीन भी आए हुए थे। फ़रुखाबाद और मैनपुरी क्षेत्र से मास्टर मुहम्मद शफी साहब असलम और मौलवी गुलाम मुहम्मद साहब भी मौजूद थे। तस्वीर खींचने का इंतज़ाम था। तस्वीर खींची गई, और सभी दोस्त मथुरा से आगरा जंक्शन तक हज़ूर के साथ ट्रेन में यात्रा करते हुए आए।

भोपाल

आगरा से चलते हुए ग्वालियर, झांसी और बीना के बाद आधी रात को भोपाल पहुंचे, जहां मकरमी बाबू अली बख्श साहब अहमदी (सब ओवरसीयर) एक टिन घी के साथ हाज़िर थे। उनके साथ हज़रत मौलवी उबैदुल्ला साहब बस्मिल और कुछ अन्य दोस्त भी थे। भोपाल के बाद मुंबई के अंतिम स्टेशन विक्टोरिया टर्मिनल तक फिर कोई जमाअत नहीं मिली।

ईदुल्-अज़हा की नमाज़, 14 जुलाई

14 जुलाई 1924 ई. को ईद का दिन था, जो हमें ट्रेन में आया। हज़ूर ने मनमाड़ रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर ईद की नमाज़ अदा की और एक छोटा सा खुत्वा दिया। दुआ प्लेटफॉर्म से हटकर ट्रेन के भीतर जाकर की गई।

अंग्रेज़ी में बातचीत

13 जुलाई की शाम को हज़ूर ने हुक्म दिया कि सभी दोस्त आपस में अंग्रेज़ी में बात करें। अगर कोई उर्दू में बात करता है, तो उसे एक आना जुर्माना देना होगा। अंग्रेज़ी के बाद अरबी में भी बात करने की इजाज़त थी, लेकिन जब अन्य लोग मौजूद हों, तब उर्दू में बात करने की भी अनुमति थी।

मुंबई में आगमन

मुंबई स्टेशन पर ट्रेन दोपहर 5 बजे पहुंची। जमाअत के सदस्य मौजूद थे। मोटरें तैयार थीं और तस्वीरें लेने का इंतज़ाम किया गया था। मुसाफ़ा (हाथ मिलाने) के बाद तस्वीर ली गई। मेमनी बिल्डिंग में शाम साढ़े सात बजे पहुंचे।

मुंबई पहुंचते ही थॉमस कुक कंपनी से खबर मिली कि हमारा जहाज़ एस.एस. अफ्रीका सुबह साढ़े आठ बजे रवाना होगा। हमें सुबह 6 बजे तक निकल जाना चाहिए।

मुंबई से रवाना होना और अदन में पहुंचना

अगले दिन 15 जुलाई 1924 ई. को सुबह करीब 7 बजे हज़ूर अपने

साथियों के साथ मुंबई की बंदरगाह पर पहुंचे। बंदरगाह पर जमाअत के सदस्य भारी संख्या में विदाई देने के लिए मौजूद थे। हज़ूर ने इस अवसर पर एक लंबी और बेहद भावुक सामूहिक दुआ कराई। यहां तक कि जहाज़ के रवाना होने का समय निकलने लगा, लेकिन जहाज़ के अधिकारियों पर भी ऐसी प्रभावी स्थिति थी कि वे न तो दुआ रोकने को कह सकते थे, न जहाज़ को रवाना कर सकते थे। अंततः, हज़ूर ने दुआ समाप्त की। उन्होंने दुआओं के साथ जमाअत को विदा किया और "अस्सलामो अलैकुम" और "खुदा हाफ़िज़" के नारों से फिजा गूंज उठी। जहाज़ को एक छोटी स्टीम बोट से धक्का देकर चलाया जा रहा था। जमाअत के लोग किनारे पर खड़े थे, और हज़ूर दिल ही दिल में दुआ कर रहे थे। फिर अचानक जोश में आकर उन्होंने भीगी आंखों के साथ जमाअत के लिए अत्यंत तड़प के साथ लंबी दुआ की।

अब जहाज़ चलने लगा था और दोस्त जल्दी ही नज़रों से ओझल होने लगे थे। परंतु हज़ूर की मुहब्बत और ममता का यह आलम था कि जहाज़ का जो हिस्सा भी दोस्तों के करीब होता, हज़ूर भी दौड़ कर उसी तरफ चले जाते। कभी एक किनारे, कभी दूसरे, और कभी बीच में जाकर दोस्तों के करीब जा कर दुआ करने लगते। उस समय बारिश हो रही थी, और आपके कपड़े भीग गए थे, परंतु अपने साथियों के प्रति दिल में दबी मुहब्बत ने आपको बेचैन कर रखा था। इस तरह हज़ूर जहाज़ के चारों तरफ अत्यधिक बेचैनी से घूमते रहे, यहां तक कि सभी दोस्त पूरी तरह से नज़रों से ओझल हो गए।

वायरलेस संदेश मुंबई में

मुंबई में अज़ीज बाबू अब्दुल गनी साहब को मौलवी रहीम बख्श साहब ने कुछ स्थानों पर जहाज़ के प्रस्थान की सूचना देने के लिए तार भेजने को कहा था, जैसे लंदन, मिस्र, क्रादियान इत्यादि। इस अज़ीज़ ने इन आदेशों का पालन करते हुए एक तार भेजा, जो हमें तीसरे दिन जहाज़ पर वायरलेस टेलीग्राफ के माध्यम से मिला। तार में लिखा था कि सभी आदेशों का पालन कर दिया गया है। यह तार भी खुदा की शक्ति का एक चमत्कार था।

إِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ

इज़ा अस्सुहुफु नुशिरत (अत्-तक्रवीर : 11)

का वादा विशेषतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लिए था। इसे पूरा होते देखकर खुदा के सामने सजदे करने का मन करता है। उसी दिन सय्यदना हज़रत खलीफ़तुल मसीह रज़ियल्लाहु अन्हो के आदेश से एक तार क्रादियान के हज़रत अमीर जमाअत को भेजा गया, जिसमें लिखा था "समुद्र बहुत ही अस्थिर है। सभी दोस्त, सिवाय भाई जी और सियाल साहब के, बीमार हैं। हज़रत की तबीयत ठीक है।" यह तार 35 शब्दों का था और 26 रुपये का खर्च हुआ, जो वहां से क्रादियान तक पहुंचने के मुकाबले में 26 कौड़ी से भी कम मूल्य था। तार भेजकर यहां के दोस्तों में संतोष और सुकून था कि तार क्रादियान में हमारी हालत का हाल बताएगा, और वहां के लोग निश्चित रूप से दुआएं करेंगे और खुदा की कृपा का अवतरण होकर हमारी मदद आकाश से होगी।

(यात्रा यूरोप पृष्ठ 17)

एक चिंताजनक मुद्दा

हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो को इस यात्रा में सबसे अधिक चिंता और परेशानी यह थी कि यूरोप के सभ्यता और उसकी मानसिक प्रगति का सामना कैसे किया जाए। आपने अपने साथियों से फ़रमाया

"मुझे इस बात का डर नहीं कि यूरोप का धर्म कैसे पराजित होगा, क्योंकि मुझे यकीन है कि धर्म के मामले में इसाईयत इस्लाम के सामने जल्दी ही झुकेगी। मुझे अगर कोई चिंता है तो केवल यह है कि यूरोप की

सभ्यता, उसकी प्रगति और मानसिक उन्नति का मुकाबला कैसे किया जाए। यही दो बातें हैं जिन पर विचार करते हुए मैं रातें बिताता हूँ और घंटों इसी सोच में पड़ा रहता हूँ।" फिर आपने कहा, "मुझे अंग्रेज़ी पोशाक से कड़ी नफ़रत है। अगर हमारे बच्चों में से कोई पैट और हैट का इस्तेमाल करता है, तो उसे सज़ा मिलनी चाहिए। जिस कौम के पास अपनी पोशाक नहीं है और दूसरों की पोशाक को अपनी पोशाक से बेहतर समझ कर उसे अपनाती है, वह कौम क्या मुकाबला करेगी? हज़रत पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अरबों को तुरंत असली पहचान बता दी थी, इसीलिए आपने हुक्म दिया था خَالِفُوا الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى (खालिफू अल-यहूद व नासारा) और यह भी कहा, مَنْ تَشَبَّهَ بِقَوْمٍ فَهُوَ مِنْهُمْ (मन तशब्बह बि-कौमिन फ-हुवा मिन्हुम) और सच तो यही है कि जो किसी कौम के लिबास और सभ्यता को अपना लेता है, वह दिल से उन्हीं में से होता है, क्योंकि उसके दिल ने उनकी महानता और श्रेष्ठता को मान लिया होता है।"

तूफ़ान में भी नमाज़ बाजमाअत का एहतेमाम

हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो ने तूफ़ान की स्थिति में भी सामान्यतः बाजमाअत नमाज़ का एहतेमाम रखा और अपने साथियों के लिए बहुत दुआएँ कीं। अंततः पांचवे दिन अर्थात् 19 जुलाई से तूफ़ान की स्थिति में बदलाव आया और छठे दिन 20 जुलाई को तूफ़ान बहुत हद तक शांत हो गया।

एक सुहानी बातचीत

सातवें दिन, 21 जुलाई 1924 ई. को हज़रत रात करीब डेढ़ बजे तक अपने खादिमों के बीच मौजूद रहे। नागपुर का एक हिंदू युवक, मिस्टर जोशी, जो पीएससी का छात्र था और जर्मनी में मेकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए जा रहा था, हज़रत से मिलने आया। हज़रत ने असली धर्म की पहचान और जीवित खुदा पर विश्वास का सही तरीका बहुत ही खूबसूरती से समझाया, जिससे मिस्टर जोशी बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने कहा कि वास्तव में आज मुझे नया ज्ञान मिला है।

एक मजेदार वाकया

एक दिन चौधरी मुहम्मद शरीफ साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने लाइम जूस मंगवाया। जहाज़ का सेवक इसे लेकर आया और हज़रत मियां शरीफ अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो के सामने पेश किया। आपने फ़रमाया, "मैंने तो मंगवाया नहीं, शायद चौधरी मुहम्मद शरीफ साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने मंगवाया होगा।" यह सुनकर जहाज़ का सेवक बोला, "क्या करूँ, आप लोगों में से हर किसी की दाढ़ी है, पहचान नहीं होती, गड़बड़ हो ही जाती है।" हज़रत मियां साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुस्कराते हुए कहा, "तुम लोगों में हमें दाढ़ी न होने के कारण पहचान में गड़बड़ी हो जाती है।"

हज़रत मियां साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि "आप लोगों की पहचान में हमें दाढ़ी न होने के कारण गड़बड़ हो जाती है।"

(सफ़र-ए-यूरोप पृष्ठ 25)

आठवें दिन, 22 जुलाई को जहाज़ अदन के करीब आया तो हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हो ने आधी रात के समय अपने कलम से जमाअत के नाम एक विस्तृत पत्र लिखा। विस्तृत पत्र पृष्ठ पर देखिए।

जहाज़ 23 जुलाई 1924 ई. को सुबह 9 बजे के करीब बख़ैरत अदन पहुँचा और हज़रत ने तार के माध्यम से अपनी ख़ैरियत की सूचना भेजी।

अदन से पोर्ट सईद तक

अब जहाज़ अदन से पोर्ट सईद की तरफ़ चला और हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो का समय पहले से ज़्यादा दुआ और इस महत्वपूर्ण यात्रा के बारे में व्यावहारिक कार्यक्रम पर ध्यान देने में गुज़रा। चूँकि 24 जुलाई 1924 ई. को आपने शाम और मिस्र में तब्लीग़ सिलसिले

पर कई घंटों तक दोस्तों से मशवरा लिया और एक योजना प्रस्तावित की। आपने दोस्तों को ताकीद की कि यात्रा की महत्वपूर्णता, उद्देश्य की महानता और कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए सभी समय इसकी तैयारी में गुज़ारना चाहिए और इसके लिए खुदा से दुआ करनी चाहिए ताकि हमें हर प्रकार के बरकतें प्राप्त हों। इसका अर्थ यह है कि उठते-बैठते आपके सामने यही एक बात थी कि कोई पल बर्बाद न हो। इसी तारीख 24 जुलाई को हज़रत देर तक इस्लामी आलिमों में आम एकता पैदा करने की एक प्रभावी पहल के गठन पर चर्चा करते रहे। 25 जुलाई को 11 और 12 बजे के बीच जहाज़ जेद्दाह और मक्का शरीफ के सामने से गुज़रने वाला था, हज़रत ने इरादा किया कि ख़ास तौर पर दुआ की जाए। चूँकि हज़रत ने दो रकात नमाज़ बज़ात पढ़ाई, जिसमें बहुत ही दर्पण दुआएँ की गईं। 26 जुलाई को हज़रत दिन भर लेख लिखने में व्यस्त रहे।

पोर्ट सईद से काहिरा, बैतुल मुकद्दस और रोम

हज़रत अपने खादिमों के साथ पोर्ट सईद से उसी दिन एक्सप्रेस गाड़ी से काहिरा गए और शेख महमूद अहमद साहब इरफ़ानी के मकान पर ठहरे। काहिरा में हज़रत का ठहराव केवल दो दिन रहा, लेकिन आपकी बरकत और ध्यान से दो दिनों में ही काहिरा के अंदर सिलसिले की ताईद में एक नई रौनक पैदा हो गई थी।

हज़रत (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं, "दो दिन के क्रियाम के बाद हम दमिश्क की तरफ़ रवाना हुए, लेकिन चूँकि रास्ते में बैतुल-मुकद्दस पड़ता था, नबीओं के मक़ाम देखे बिना आगे जाना मुनासिब न समझा और दो दिन के लिए वहाँ ठहर गए... यहूदी कौम की काबिल-ए-रहम हालत जो यहाँ नज़र आती है कहीं और नज़र नहीं आती। बैतुल-मुकद्दस का सबसे बड़ा मंदिर जिसे पहले ईसाईयों ने यहूदियों से छीन लिया और बाद में ईसाईयों से छीनकर मुसलमानों ने इसे मस्जिद बना दिया, इसकी दीवार के साथ खड़े होकर हफ़्ते में दो दिन बराबर दो हज़ार साल से यहूदी रोते चले आ रहे हैं। जिस दिन हम इस जगह को देखने के लिए गए, वह दिन इत्तेफ़ाक से उनके रोने का था। औरतों और मर्दों, बूढ़ों और बच्चों का दीवार के पीछे खड़े होकर बाइबल की दुआएँ पढ़-पढ़ कर इज़हार-ए-आज़मी करना एक निहायत ही अफ़सर्दा करने वाला नज़ारा था... बैतुल-मुकद्दस की जगहों में से निम्नलिखित मक़ाम काबिल-ए-ज़िक्र हैं अबुल-अंबिया हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम), हज़रत इसहाक (अलैहिस्सलाम), हज़रत याक़ूब (अलैहिस्सलाम), और हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) की क़बरे, और वो मक़ाम जहाँ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने नमाज़ पढ़ी और बाद में इसे मस्जिद बना दिया गया, और हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) की पैदाइश के मक़ाम। हज़रत (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि अक्सर वहाँ के बड़े-बड़े मुसलमानों से मैंने मिला हूँ। मैंने देखा कि वे मुतमइन हैं और समझते हैं कि यहूदियों को निकालने में कामयाब हो जाएंगे। लेकिन मेरे नज़र में उनकी यह राय ग़लत है। यहूदी कौम अपने आबाई मुल्क पर क़ब्ज़ा करने पर तली हुई है... कुरआन शरीफ की भविष्यवाणियों और हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के कुछ इल्हामों से मालूम होता है कि यहूदी ज़रूर इस मुल्क में आबाद होने में कामयाब हो जाएंगे। इसलिए मेरे नज़र में मुसलमानों के रईसों का यह इत्मिनान अंततः उनकी तबाही का मौजिब होगा... फलस्तीन के गवर्नर हाइ कमिशनर कहलाते हैं। असल हाइ कमिशनर आजकल विलायत गए हुए हैं, उनकी जगह सर गिल्बर्ट क्लेटन काम कर रहे हैं। मैं उनसे मिला था, एक घंटे तक उनसे मुल्क के मामलों के बारे में बातचीत होती रही... मुसलमानों को आम तौर पर शिकायत थी कि तालीमी मामलों में हमें आज़ादी नहीं है। मैंने इस मामले के बारे में उनसे बातचीत की और उन्होंने इस बात को स्वीकार करते हुए कि मुसलमानों की यह शिकायत एक हद तक वाजिब है, मुझे बताया कि एक दिन पहले ही उन्होंने एक प्रस्ताव

ब्रिटिश मंत्रालय के गौर के लिए भेजा है... सर क्लेटन साहब को पहली मुलाकात में हमारे सिलसिले से भी बहुत सी दिलचस्पी हो गई और गो हमने दूसरे दिन रवाना होना था, लेकिन उन्होंने जोर दिया कि डेढ़ बजे हम उनके साथ खाना खाएं। चूंकि डेढ़ घंटे तक दूसरे दिन भी उनके साथ बातचीत रही और फलस्तीन की हालत के बारे में बहुत सी जानकारी मुझे उनसे मिली।

(अल्फज़ल 13 सितंबर 1924, पृष्ठ 3 से 6)

हज़ूर (अलैहिसलाम) बैतुल्-मुकद्दस से दमिश्क तशरीफ़ ले गए। शुरू में लोगों ने कोई दिलचस्पी नहीं ली, लेकिन दुआओं के बाद लोगों का हज़ूम मुलाकात के लिए उमड़ आया। यहाँ के क्रियाम के बारे में हज़ूर खुद फ़रमाते हैं, "दमिश्क में तवक्को से बहुत बढ़कर सफलता हुई... अख़बारों ने लंबे-लंबे तारीफ़ी लेख प्रकाशित किए। दमिश्क के तालीम याफ़ता वर्ग ने निहायत गहरी दिलचस्पी ली। सभी वो अख़बार जिनमें हमारे मिशन के बारे में ख़बरें और लेख निकलते थे, क्रद्रत से फ़ौरन फ़रोख़्त हो जाते थे।"

(अल्फज़ल 28 अगस्त 1924, पृष्ठ 2)

हज़ूर 10 अगस्त 1924 ई. को दमिश्क से रवाना होकर बेयरोत से होते हुए हैफ़ा पहुंचे। वहाँ से अक्का में बहाईयों का मरकज़ देखने के लिए तशरीफ़ ले गए। अक्का में कोई बहाई नहीं था, बल्कि तीन-चार मील की दूरी पर मनशिया नाम के गाँव में बहाई रहते हैं। दो घंटों के बाद वापस हैफ़ा तशरीफ़ लाए। 13 अगस्त को हज़ूर पोर्ट सईद से बर्न्डज़ी के लिए प्लाना नाम के जहाज़ से रवाना हुए। 16 अगस्त 1924 ई. को साढ़े नौ बजे सुबह आपका जहाज़ इटली की बंदरगाह बर्न्डज़ी पर पहुँचा। हज़ूर मख़दूमों के साथ बर्न्डज़ी से साढ़े छ बजे शाम की गाड़ी से सवार होकर 17 अगस्त 1924 ई. को साढ़े नौ बजे रोम में दाखिल हुए, जो ईसाईयों के पोप का केंद्र है। रोम में हज़ूर का क्रियाम चार दिन रहा। इस दौरान हज़ूर बराबर इशात-ए-सिलसिला के काम में मसरूफ़ रहे। अख़बारों के नुमाइंदों और फ़ोटोग्राफ़रों ने आपसे इंटरव्यू किए। हज़ूर ने इटली के वज़ीर-ए-आज़म मुसोलिनी से भी मुलाकात की और उसे सिलसिला अहमदिया के अहराफ़ व मक्रसद बताए। मुसोलिनी निहायत इकराम से पेश आया।

इटली में पोप को इस्लाम का संदेश

हज़ूर का इरादा पोप से मिलने और उन्हें इस्लाम की तालीम देने का भी था। लेकिन पोप ने आपकी आमद पर मुलाकातों का सिलसिला बंद कर दिया। फिर भी हज़रत खलीफ़ा मसीह द्वितीय ने जो पैगाम-ए-हक़ पहुंचाना चाहा, वह खुदा तआला ने दूसरे तरीके से पहुंचा दिया। अर्थात् रोम के सबसे मशहूर और कश्मीर-अल-इश्तिराक अख़बार "लाटरबियुना" ने हज़ूर का एक विस्तृत इंटरव्यू प्रकाशित किया। हज़ूर से प्रश्न किया गया कि अगर आप पोप से मिलते तो क्या कहते? हज़ूर ने उत्तर दिया

"मैं जब पोप से मिलता तो सबसे बेहतरीन तोहफ़ा जो मेरे पास है, उसे पेश करता और वह यह है कि मैं उसे इस्लाम की दावत देता और उस नूर की तरफ़ बुलाता जो इंसानों को खुदा तक पहुंचा देता है। और यह शब्दों में नहीं बल्कि खुदा तआला के करीब होने के निशान इसमें पाए जाते हैं... बड़े बड़े आदमी ईसाईयों में पाए जाते हैं जिन्हें बड़ा नेक और परहेज़गार कहा जाता है। लेकिन वे अपनी सच्चाई में कोई निशान नहीं दिखा सकते। इससे पता चलता है कि खुदा का करीब पाने का यह रास्ता नहीं है। और यह सच है कि खुदा तआला ने मसीह मौऊद को इसी लिए दुनिया में भेजा है कि वह दुनिया पर साबित कर दे कि यह ताकत और शक्ति अब इस्लाम में है... तो मैं पोप को इस इस्लाम की खुशख़बरी देता और उसे सुनाता कि हमें वह निशान दिए गए हैं जो खुदा के बरजिगिदा को मिलते हैं।"

(अल्-फ़ज़ल 23 सितंबर 1924, पृष्ठ 3 से 4)

रोम में हज़ूर ने अस्थाब-ए-कहफ़ की गुफ़ाएँ भी देखीं, जिसकी

जानकारी हज़ूर ने सूरह कहफ़ की तफ़सीर में बयान की है। हज़ूर कहते हैं, "ये तहखाने तीन मंजिल में बने हुए हैं। और 1924 ई. में इंग्लैंड जाते हुए रोम में मैंने खुद अपनी आंखों से देखा है।"

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 6, पृष्ठ 485, संस्करण 2023)

लंदन में वजूद-ए-मसूद

रोम से 20 अगस्त 1924 ई. को शाम को रवाना होकर दूसरे दिन सुबह (21 अगस्त को) 9 बजे के करीब पेरिस, फ्रांस पहुंचे। जहाज़ द्वारा इंग्लैंड के बार को पार करके डोवर आए और डोवर से गाड़ी लेकर 22 अगस्त 1924 ई. को 6 बजे के करीब लंदन के मशहूर विक्टोरिया स्टेशन पहुंचे। जहाँ इस्लाम के मुबल्लिग़ और दूसरे अस्थाब स्वागत के लिए उपस्थित थे।

हज़ूर ने प्लेटफ़ार्म पर कदम रखते ही अपने काफिले के साथ दुआ की। इस नज़ारे का फोटो लंदन के अख़बारों में भी प्रकाशित हुआ। स्टेशन से हज़ूर लुडगेट पहुंचे और सेंट पॉल के चर्च के दरवाज़े के पास आँगन में आपने इस्लाम की सफलता और कसर सलीब के लिए दुआ की। यह नज़ारा लंदन ने कभी नहीं देखा था, इसलिए चारों तरफ़ भीड़ का मेला लग गया। हज़ूर एक लंबी दुआ करने के बाद अपने खिदाम के साथ सवार होकर अपनी ठहरने की जगह चेशम पैलेस नंबर 6 में पहुंचे और मकान में प्रवेश से पहले दुआ की।

अख़बारों के माध्यम से इंग्लैंड में आपकी आमद की तशहीर हुई। हज़ूर ने यहां पहुंचकर सबसे पहला काम यह किया कि अपने रफीकों को विभिन्न फराइज़ सुपुर्द करके एक प्रशासनिक समिति कायम कर दी, जिसके प्रेसिडेंट चौधरी फतेह मुहम्मद साहब सियाल और सचिव मौलवी मुहम्मद दीन साहब को तजवीज़ फ़रमाया। इसके अतिरिक्त, हज़ूर ने क्रियाम लंदन के पहले हफ़्ते में "इवनिंग स्टैंडर्ड" और अख़बार "स्टार" के नुमाइंदों को इंटरव्यू दिया। हज़रत हाफ़िज़ रोशन अली साहब के "तसव्वुफ़" के मज़मून पर नज़र सानी की और ज़रूरी हिदायतों के साथ मौलवी मुहम्मद दीन साहब को अनुवाद के लिए दिया। यह मज़मून 25 सितंबर 1924 ई. को मौलवी मुहम्मद दीन साहब ने ही पांच बजे शाम सर पैट्रिक नाइटन की अध्यक्षता में सुनाया और बहुत लोकप्रिय हुआ। इस हफ़्ते हज़ूर चौधरी मुहम्मद ज़फ़रुल्ला खान साहब के साथ वेम्बले और इंडिया ऑफिस में तशरीफ़ ले गए। हज़रत मौलवी अब्दुरहमान साहब नीर, मुबल्लिग़ इंग्लैंड ने अख़बारों के नुमाइंदों को दावत दी, जिसमें मज़ाहिब कांफ़्रेंस की प्रशासनिक के कुछ सदस्य भी शरीक हुए। इस दावत में हज़ूर ने इंग्लैंड वालों के नाम एक विस्तृत पैगाम दिया। जिसका फसीह व बलिग़ अंग्रेज़ी ज़बान में फे बदीहे अंग्रेज़ी अनुवाद मुकर्रिम चौधरी मुहम्मद ज़फ़रुल्ला खान साहब ने सुनाया। इस पैगाम का एक हिस्सा इस प्रकार है।

"मैं इस मोहब्बत और इस इस्लाम की वजह से जो बनी नॉइ इंसान से रखता हूँ और जो मैं समझता हूँ कि बानी सिलसिला अहमदिया की सोहबत और इस्लाम की तालीम का नतीजा है, इंग्लैंड आया हूँ। मैं उन भविष्यवाणियों की वजह से जो बानी सिलसिला अहमदिया ने कीं, इस अमर पर यकीन रखता हूँ कि मगरिब जल्द उन सच्चाईयों को क़बूल करेगा जो बानी सिलसिला अहमदिया, जिनका दावा मसीह मौऊद और महदी और सभी मज़ाहिब के मुअउद होने का था, लाए थे... मसीह मौऊद का दावा था कि वह सुलह के शहजादे हैं और यह कि उनके हाथ पर दुनिया इकट्ठी की जाएगी और अमन कायम होगा, इसलिए हर एक अमन पसंद का फ़र्ज़ है कि वह उनके दावे पर गौर करे ताकि उसकी सुस्ती उस उद्देश्य को पीछे न डाल दे जिसकी हासिल के लिए वह कोशां है। कोई सच्ची भाईचारा कायम नहीं हो सकती जिसकी बुनियाद खुदा के साथ तअल्लुक पर न हो, क्योंकि भाइयों का रिश्ता बाप के माध्यम से होता है। जो बाप

को पहचानता है, वह बाप के हक़ को पहचान सकता है और इस ज़माना में केवल मसीह मौऊद ही एक ऐसा शख्स है जो दावा करता है कि वह बाप से इसी दुनिया में इंसान को मिला देता है और न केवल दावा करता है बल्कि हज़ारों जिन्होंने उसकी तालीम पर अमल किया, उन्होंने खुदा तआला के कलाम को उसी तरह सुना जिस तरह पहले नबियों के हवारियों ने सुना था, चूंकि राक़िम मज़मून भी उनमें से एक है... चूंकि हमारा उद्देश्य खुदा और बंदों के बीच और बंदों और बंदों के बीच नेक तअल्लुक़ कायम करना है... तो आओ हम सब मिलकर बेहतरी के लिए कोशिश करें और बजाए उजाड़ने वालों के आबाद करने वाले बनें।"

(तारीख-ए-अहमदियत, भाग 4, पृष्ठ 447)

क्रियाम लंदन के दूसरे हफ्ते 29 अगस्त से 4 सितंबर 1924 ई. में हज़ूर ब्राइटन के क्रस्बे में तशरीफ़ ले गए और युद्ध में जान देने वाले सिपाहियों की यादगार में छतरी में दुआ की कि जिस तरह यह एक निशान है उन लोगों का जो एक दुनियावी मक्सद के लिए एकत्र हुए, उसी तरह अल्लाह तआला हज़रत मसीह मौऊद की महान छतरी के नीचे पूर्व और पश्चिम को इकट्ठा कर दे। हज़ूर ने दुआ से पहले एक तक्ररीर भी की। ये नज़ारे फ़िल्मों में भरकर सिनेमा में भी भेज दिए गए, जो इराक, अरब, मिस्र, शाम, अमेरिका और अफ्रीका में और दुनिया भर में घूम रहे हैं।

7 सितंबर 1924 ई. को बहुत से अंग्रेज़ पुरुषों, महिलाओं, भारतीय छात्रों और तुर्की दूतावास और दूसरे सम्मानित मुसलमानों को दावत पर बुलाया गया, जिसमें हज़ूर का एक और पैगाम मोहब्बत, जैसा कि पहले, मुकर्रम चौधरी ज़फरुल्ला खान साहब ने निहायत काबिलियत से पढ़कर सुनाया। 9 सितंबर 1924 ई. की शाम को हज़ूर ने "ईस्ट एंड वेस्ट यूनियन" के सम्मेलन (जो गिल्ड हाउस में हुआ) में पहला अंग्रेज़ी लेक्चर दिया जो बहुत पसंद किया गया। फिर 11 सितंबर 1924 ई. को क्रियाम अम्र के मुद्दे पर लीग ऑफ नेशंस के विभाग धर्म और नैतिकता के सचिव मिस्टर एलसन और मिस्टर रेन से विस्तृत बातचीत की और हिकमत से बताया कि जब तक इस्लामी उसूलों पर लीग ऑफ नेशंस की बुनियाद नहीं होगी, यह अपने मक़सद में कभी भी कामयाब नहीं हो सकती।

(अल्-फ़ज़ल 14 अक्टूबर 1924, पृष्ठ 3 से 4)

12 सितंबर 1924 ई. को हज़ूर ने जुमे की नमाज़ पढ़ाई और जमाअत को ध्यान दिलाया कि इसे शहीद अफगानिस्तान मौलवी निम्मतुल्ला खान साहब की तरह हर वक्त शहादत के लिए तैयार रहना चाहिए। 13 सितंबर 1924 ई. को हज़ूर ने पोर्ट समिथ में दो लेक्चर दिए, एक "मसीह की आमद सानी" पर और दूसरा "पैगाम आसमानी" पर। 15 सितंबर को हज़ूर ने भारतिय छात्रों से खिताब फ़रमाया। 16 सितंबर 1924 ई. को आपने कांफ्रेंस के लिए मुजव्वज़ा मज़मून का खुलासा लिखा। 17 सितंबर 1924 ई. को आपने मौलवी नेअमतुल्ला खान साहब शहीद काबुल की शहादत से संबंधित एक विरोधी जलसे में तक्ररीर की।

19 सितंबर को हज़ूर ने जुमे के बाद वेम्बले कांफ्रेंस के प्रेसिडेंट सर ए.डी. रॉस से मुलाकात की। आपका गणना इंग्लैंड के नामवर मस्तिश्रीकों में होता है। मजाज परसी के बाद उन्होंने कहा कि आपकी तशरीफ़ आवरी पर इंग्लैंड का प्रेस बहुत दिलचस्पी ले रहा है। उसी शाम आपने सेंट लुक्स हॉल में "हयात बाद अल-मौत" पर शानदार लेक्चर दिया। 20 सितंबर को लैगोस (नाइजीरिया) के दो हाजी साहब (जिनमें से एक अहमदी थे) हज़ूर की खिदमत में हाज़िर हुए।

कर्नल डगलस से मुलाकात

21 सितंबर 1924 ई. की शाम को हज़ूर की कर्नल डगलस से मुलाकात हुई। यह वही डगलस थे जिन्होंने डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ज़िला गुरदासपुर (पंजाब, भारत) के तौर पर ड्यूटी के दौरान हज़रत मसीह मौऊद के खिलाफ हेनरी मार्टिन क्लार्क का मुकदमा बेबुनियाद पा कर

खारिज कर दिया था और अदल व इंसाफ का बेहतरीन नमूना पेश किया था।

यूरोप में इस्लाम की आध्यात्मिक विजय की बुनियाद

22 सितंबर 1924 ई. को वेम्बले कांफ्रेंस का उद्घाटन हुआ और हज़ूर मुअ आ रफीक़ा इस में शामिल होने के लिए तशरीफ़ ले गए। 23 सितंबर 1924 ई. का दिन यूरोप की यात्रा का ऐतिहासिक और विशाल दिन है क्योंकि इस दिन वेम्बले कांफ्रेंस में हज़ूर का बेनज़ीर मज़मून पढ़ा गया जिसने सिलसिला अहमदिया की प्रसिद्धि को चार चाँद लगा दिए। यूरोप में इस्लाम की आध्यात्मिक विजय की बुनियादें रख दीं और हज़रत मसीह मौऊद का लंदन में तक्ररीर करने का ख़्वाब पूरा हुआ।

26 सितंबर को हज़ूर ने कंज रिक्टो की दरख्वास्त पर डच हॉल लंदन में भारत के हालात-ए-हाज़रा और इत्तिहाद पैदा करने के ज़राए पर एक जानकारीफरोज़ लेक्चर दिया। 28 सितंबर को आपका एक अहम मज़मून "रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी और तालीम से नौजवान बच्चे क्या फायदा उठा सकते हैं" के विषय पर लंदन फील्ड में पढ़ा गया। इसी हफ्ते आपने फैसला किया कि "रिव्यू ऑफ रिलिजन्स" का अंग्रेज़ी एडिशन आने वाले समय में लंदन से प्रकाशित होगा।

विजय जनरल

2 अक्टूबर को हज़ूर ने "विलियम दि कन्करर" वाले स्वप्न को पूरा करने के लिए खाड़ी मियुंसी पर पहुंचे और एक नाव लेकर उस स्थान की ओर चले गए जहाँ "विलियम दि कन्करर" उतरा था। हज़रत भाई अब्दुरहमान साहब कादियानी का बयान है कि उस समय आपके चेहरे पर जलाल और शोख़त थी और इसके साथ एक रबूदगी भी थी। इसके बाद आपने चुपचाप दुआ करवाई। हज़ूर ने नमाज़ कसर पढ़कर लंबी दुआ की और ज़मीन पर अकड़ों बैठकर पत्थर की कंकड़ियों की मुट्टियाँ भरीं और फ़रमाया कि किसरी का दरबार में एक सहाबी को मिट्टी दी गई तो सहाबी ने मुबारक फाल लिया कि किसरी का मुल्क मिल गया और लेकर रुख़सत हुआ। शाहंशाह ईरान ने आदमी भेजे कि वह मिट्टी ले आए लेकिन सहाबी ने वापस नहीं की और अल्लाह ने भी इस मुबारक फाल पर वह सरज़मीन सहाबियों को दे दी। भाई अब्दुरहमान साहब कादियानी और दर्द साहब ने इन कंकड़ियों की दो-दो मुट्टियाँ भरकर अपनी जेबों में डाल लीं। यहाँ से फुरसत होते ही भाई जी के दिल में एक ज़ोरदार तहरीक हुई और आपने आवाज़ बुलंद करके मुबारकबाद दी और बहुत जोश से हज़रत मसीह मौऊद का यह मिसरा पढ़ा।

"तो सच्चे वादों वाला मुनकर कहाँ किधर है?"

(अल्-फ़ज़ल 20 नवंबर 1924, पृष्ठ 5)

3 अक्टूबर 1924 ई. को हज़ूर ने कांफ्रेंस मज़ाहिब आलम के आखिरी अधिवेशन से उर्दू में खिताब फ़रमाया। जिस पर निहायत ही ख़ुशी का इज़हार किया गया। लेक्चर हॉल बिल्कुल भर गया।

(अल्-फ़ज़ल 15, 6 नवंबर 1924)

4 अक्टूबर 1924 ई. को हज़ूर अपने रफ़ीक़ों के साथ इंग्लैंड के नए मुअल्लिम मौलवी अब्दुल रहिम साहब दर्द को लेकर पटनी के उस मकान के दरवाज़े पर पहुंचे जो मुजव्वज़ा मस्जिद में खुलने वाला था। उस स्थान पर खड़े होकर हज़ूर ने तामीर मस्जिद की स्कीम का संक्षिप्त वर्णन फ़रमाया। फिर मकान के उस कमरे में तशरीफ़ ले गए जहाँ इन दिनों नमाज़ें होती थीं और बहुत लंबी दुआ करवाई और इसके बाद अपने दस्त मुबारक से मौलवी अब्दुल रहिम साहब दर्द को इस मकान की चाबी अता फ़रमाई और फिर मौलवी अब्दुल रहिम साहब दर्द और उनके नायब मलिक गुलाम फरीद साहब एम. ए. को विस्तृत हिदायात दीं।

7 अक्टूबर को हज़ूर ने दारुल अमरा (हाउस ऑफ लॉर्ड्स) का अधिवेशन देखा और 8 और 9 अक्टूबर को दारुल आवाम (हाउस ऑफ

कॉमन्स) का अधिवेशन देखने तशरीफ़ ले गए।

12 अक्टूबर को हज़ूर ने नए मुसलमानों को पांच घंटे तक तब्लीग़ और हिदायत फ़रमाने में व्यस्त रहे, इसके साथ ही अंग्रेज़ पुरुषों और महिलाओं से विभिन्न मुद्दों से संबंधित दिलचस्प धार्मिक बातचीत की।

15 अक्टूबर को हज़ूर ने "ओरिएंटल स्कूल ऑफ़ स्टडीज" का दौरा किया।
(अल्-फ़ज़ल 11 नवंबर 1924)

19 अक्टूबर 1924 ई. एक यादगार दिन

19 अक्टूबर 1924 ई. का दिन एक यादगार दिन साबित हुआ। हज़ूर ने शाम 4 बजे एक बहुत बड़े जमाअत में "मस्जिद फ़ज़ल" का अपने हाथों से बुनियाद रखी।

(अल्-फ़ज़ल 25 अक्टूबर 1924)

लंदन में सबसे पहली मस्जिद की बुनियाद रखी जा चुकी थी तो मौलवी अब्दुल रहिम साहब दर्द ने ऊँची आवाज़ से हज़रत मौलवी शेर अली साहब का एक तार पढ़कर सुनाया जो उन्होंने जमाअत अहमदिया हिंदुस्तान की तरफ से इस तक्ररीब पर मुबारकबाद भेजा था। इसके बाद हज़ूर ने लंबी दुआ की। फिर असर की नमाज़ इसी स्थान पर पढ़ी और हज़ूर ने ऐलान किया कि मैं ऐलान करता हूँ कि इस मस्जिद का बाकायदा बुनियाद रखा गया है। नमाज़ के बाद मुबारकबाद की आवाज़ हर तरफ़ बुलंद हुई और मस्जिद के महरब पर एक झंडा लहराया गया जो हैदराबाद के होम सेक्रेटरी नवाब अकबर नवाज़ जंग साहब ने दिया था।

(अल्-फ़ज़ल 20 नवंबर 1924)

लंदन से रवानी और मुंबई में दरूद

समापन

हज़रत खलीफ़ा मसीह द्वितीय रज़ियल्लाहु अन्हु ने बहुत दुआओं और अहबाब जमाअत से मशवरा करने के बाद खुद यूरोप के हालात का जायज़ा लेने के लिए इस सफ़र पर रवाना होने का फ़ैसला फ़रमाया था। लंदन में ही एक रेवेरेंड की सेक्रेटरी ने हज़रत अकदस से प्रश्न किया कि आपको इस सफ़र से क्या बड़ा फ़ायदा पहुंचा? हज़ूर ने फ़रमाया कि "इंसान के सामने दिन रात हज़ारों किस्म के हालात और ख़्यालात आते रहते हैं, परंतु सब के बारे में उसके दिल में तज़ुर्बात का ख़्याल पैदा नहीं होता। तज़ुर्बात का ख़्याल इंसान के दिल में तभी पैदा होता है जब वह किसी चीज़ को ख़ासियत और अहमियत के दर्जे तक पहुंचा हुआ पाता है।

आज से पहले हमारे सिलसिले को यह अहमियत न थी कि लोग इसकी तरफ़ ध्यान दें, बल्कि सिवा शाज़ के कोई नाम से भी वाकिफ़ न था, लेकिन अब हमारे आने से अल्लाह ने इस क़दर इशात कर दी है और शहरत और अहमियत के ऐसे सामान पैदा कर दिए हैं कि अब वह रोक हमारे रास्ते से उठ गई है और लोग आम तौर पर हमें जानने लगे हैं और दुनिया की तवज्जो हमारी तरफ़ फिरने लगी है," इत्यादि।

इस उत्तर को सुनकर प्रिंसिपल और उसकी सेक्रेटरी ने कहा

"Very great achievement"

अल्लाह के फ़ज़ल से इस जलसे के बहुत बड़े फ़ायदे निकलेंगे।

(यूरोप की यात्रा पृष्ठ 393)

अल्लाह तआला के फ़ज़लो करम से आज सौ साल के बाद जब हम यूरोप में इस्लाम अहमदियत की तब्लीगी सरगर्मियों को तायराना नज़र से भी देखते हैं तो हम यकीन मोहकम से गवाही देते हैं कि इस दौर के अंजाम व मक़सद सौ फ़ीसद पूरे हो रहे हैं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की यह भविष्यवाणी निहायत शान-शौकत से पूरी हो रही है।

आख़िर में दुआ है कि अल्लाह तआला हमें इस्लाम अहमदियत की तालीमात पर असली रंग में अनुकरण करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।
आमीन।



पृष्ठ 23 का शेष

पुरुष उतरे। उन्होंने बातों-बातों में बताया कि 'हमने आप लोगों को स्विट्ज़रलैंड में देखा था।' हमने आश्चर्य से पूछा कि कहाँ? हम तो सीधे रेल से आ रहे हैं और कहीं रुके भी नहीं। तब उन्होंने बताया कि वहाँ एक सिनेमा था, जिसमें ब्राइटन का दृश्य दिखाया जा रहा था और उसमें आप लोगों को देखा था। न जाने ये फिल्में दुनिया के किन-किन हिस्सों में जाएँगी और इस तरह हज़रत अहमद अलैहिस्सलाम का नाम आपके पुत्र और आपके अनुयायियों के माध्यम से प्रसिद्ध होगा और साबित करेगा कि 'मैं तेरी तब्लीग़ को ज़मीन के किनारों तक पहुँचाऊँगा।' वास्तव में यह अल्लाह का ही वादा था, और अल्लाह का हर कथन सत्य है।"

(यूरोप की यात्रा, पृष्ठ 424-423)

इसी प्रकार एक अन्य दिन की डायरी में आप लिखते हैं

"अल्हम्दोलिल्लाह, आज मैंने दस विभिन्न प्रकार के अंग्रेज़ी अख़बारों के पैकेट तैयार किए हैं जिनमें किसी न किसी रूप में सिलसिला और हज़रत अक्सद का वर्णन है। इन्हें पढ़ने और इन्हें प्रकाशित करने के लिए बहुत समय और एक बहुत बड़ी किताब की आवश्यकता होगी। यह खुदाई समर्थन हज़रत अक्सद की ज़ात से जुड़ा और आपकी मौजूदगी पर निर्भर था, अन्यथा यह ऐलान और ऐसे प्रचार लाखों खर्च करने से भी संभव नहीं थे।"

(यूरोप की यात्रा, पृष्ठ 204)

एक अन्य अवसर पर आपने लिखा :

"अख़बार भी लिख रहे हैं और बहुत प्रशंसात्मक शब्दों का प्रयोग कर रहे हैं। इन कट्टर ईसाई अख़बारों की कलम से इस्लाम की प्रशंसा में एक शब्द भी निकलना बहुत बड़ी बात है, जिसका अर्थ है कि उन्होंने अपने विचार और धर्म के खिलाफ किसी अन्य धर्म की प्रशंसा अवश्य ही सच्चाई की ताकत से मजबूर होकर और उसके सामने सिर झुका कर लिखी है, अन्यथा कौन अपने धर्म के मुकाबले में किसी दूसरे की प्रशंसा कर सकता है। वल-फज़लु मा शहिदत बिहिल-अदा

(और श्रेष्ठता वही है जिसे दुश्मन भी मानें)।"

इस तरह, हज़रत का यह ऐतिहासिक यात्रा जो 12 जुलाई 1924 ई. को शुरू हुआ, 24 नवंबर 1924 ई. को सफलतापूर्वक समाप्त हुआ। आप यूरोप के लंबे यात्रा से सफलता का झंडा फहराते हुए क्रादियान की पाक ज़मीन में लौटे।

आज, जबकि इस मुबारक दौर के पूरे सौ साल हो गए हैं, यूरोप में लाखों अहमदियत के मानने वालों का होना, सैकड़ों सक्रिय और मज़बूत जमाअतों की स्थापना, मस्जिदों, मिशन हाउसों और विश्वविद्यालयों का क्रयाम, हज़ारों मुबल्लिगों और मुरबियों के माध्यम से दिन-रात इस्लाम और अहमदियत का प्रचार, करोड़ों की संख्या में साहित्य का प्रकाशन, एम.टी.ए की स्थापना और इसके माध्यम से चौबीसों घंटे अल्लाह के अकेश्वरवाद की गूँज, और सबसे बढ़कर यूरोप में अहमदियत का केंद्र स्थापित करना, और उसी केंद्र से हज़रत खलीफ़तुल मसीह खामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ की क्रांतिकारी नेतृत्व में पूरी दुनिया की अहमदिया जमाअत का संचालन करना, यूरोप के महान मंचों में खलीफ़ा-ए-अहमदियत के माध्यम से शांति और प्रेम का संदेश फैलाना, यूरोप के शासकों के सामने इस्लाम की सुंदर शिक्षाओं को प्रस्तुत करना और उन्हें शांति की ओर बुलाना।

यह सब कहीं न कहीं उसी यूरोप यात्रा की बरकतों और फलों का नतीजा है और इस्लाम अहमदियत की सच्चाई का जिंदा सबूत है।



"यह एक ऐसा महान कार्य है जिसके अच्छे परिणाम पीढ़ी दर पीढ़ी उत्पन्न होते रहेंगे और इतिहास इसकी याद को ताज़ा रखेगा।"
 "वह मस्जिद एक केंद्रीय बिंदु होगी जिससे नूरानी किरणें निकलकर पूरे इंग्लैंड को प्रकाशित करेंगी।"
 मस्जिद फज़ल लंदन - आधारशिला, निर्माण और उद्घाटन
 (मंसूर अहमद मसरूर)

सैय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाह अन्हु ने 6 जनवरी 1920 को सोमवार के दिन जमाअत के लोगों के नाम एक संदेश लिखा, जिसमें आपने लंदन में एक मस्जिद के निर्माण की अहमियत और ज़रूरत पर रोशनी डालते हुए इसके लिए तीस हज़ार रुपये जमा करने की अपील की। केवल क्रादियान की जमाअत ने बारह हज़ार रुपये चंदे में दिए। यह देखते हुए कि इस तरह से तो गुरदासपुर, अमृतसर और लाहौर से ही तीस हज़ार रुपये इकट्ठा हो जाएंगे और बाकी जमाअत इस नेक काम से वंचित रह जाएगी, आपने तीस हज़ार की बजाय एक लाख रुपये जमा करने का सुझाव पेश किया। अल्लाह की मर्ज़ी कुछ ऐसी थी कि उसने हज़ूर रज़ियल्लाह अन्हु को 1924 ई. में यूरोप, विशेष रूप से लंदन के यात्रा की तौफ़ीक़ अता की, और यह पहले से ही निर्धारित था कि मसीह का खलीफ़ा मसीह का उत्तराधिकारी बनकर यूरोप और शाम की यात्रा करे, ताकि बहुत सारी भविष्यवाणियां उसकी मौजूदगी से पूरी हों। इस तरह अल्लाह तआला ने हज़ूर ही के हाथों से मस्जिद फज़ल की नींव रखवाई।

6 जनवरी 1920 का हज़ूर रज़ियल्लाह अन्हु का यह ऐतिहासिक संदेश, जो मस्जिद फज़ल लंदन के चंदे के लिए था, अल्-फज़ल क्रादियान दारुलअमान में 22 जनवरी 1920 को देखा जा सकता है। 9 जनवरी, शुक्रवार के दिन इसी विषय पर हज़ूर रज़ियल्लाह अन्हु ने जुमा का खुतबा इरशाद फ़रमाया और जमाअत के लोगों को लंदन में मस्जिद के निर्माण की अहमियत और ज़रूरत के बारे में आगाह किया और इसके लिए चंदे की भी अपील की। इस खुतबे से हज़ूर रज़ियल्लाह अन्हु के कुछ इरशादात हम नीचे पेश कर रहे हैं। खुतबे की शुरुआत में हज़ूर रज़ियल्लाह अन्हु ने फ़रमाया

"अल्लाह के फज़ल और करम से और उसकी दी हुई तौफ़ीक़ से हमारा इरादा है, और जैसा कि दोस्तों को मालूम है कि खास लंदन में या लंदन के पास एक मस्जिद तैयार करें। इसके बारे में आज से तीन दिन पहले, मग़रिब के बाद, मैंने क्रादियान में अपील की। फिर परसों दिन में सभी दोस्तों को बाकायदा जमा करके अपील की। चूंकि जुमा के रोज़ आसपास के इलाकों से अहमदी दोस्त जुमा में शामिल होने के लिए आते हैं, इसलिए मैं उनकी जानकारी के लिए और उन सभी के लिए जिन्हें पहले इस बारे में मालूम न हो, या जानकारी तो हुई हो पर पूरी वाक़फ़ियत न हुई हो, या पूरी वाक़फ़ियत तो हुई हो परंतु ध्यान न दिया हो, या ध्यान तो दिया हो परंतु जितनी ज़रूरत है उतना ध्यान न दिया हो—इन सभी के लिए आज मैं जुमा के खुतबे में भी इसी विषय पर ध्यान दिलाता हूँ।"

फ़रमाया "मैंने इस अपील (अर्थात मस्जिद के लिए चंदे की अपील नक़ल) को सबसे पहले यहां के (अर्थात क्रादियान के नक़ल) दोस्तों के सामने पेश किया। अब तक ग्यारह हज़ार रुपये का चंदा हो चुका है। अर्थात सारी दुनिया के अहमदियों के लिए जितना चंदा तय किया गया है, उसका तीसरा हिस्सा क्रादियान ने दे दिया है, और यह खुशी की बात है और इस बात का सबूत है कि मरकज़ की जमाअत इखलास में पीछे नहीं, बल्कि आगे है। और यह एक उसूल है कि जो जमाअते कायम रहने वाली होती हैं, उनके मरकज़ों में इखलास होता है, और इखलास मरकज़ से ही निकलता है।"

फ़रमाया "इसमें कोई शक नहीं कि मुझे विश्वास है कि यह काम अल्लाह की रज़ा के तहत हो रहा है। मुझे अब तक तीन अहम मामलों में अल्लाह

तआला का दीदार हुआ है... तीसरी बार आज मुझे अल्लाह तआला का दीदार हुआ, जिससे मुझे यकीन हो गया कि यह काम मक़बूल है। जहाँ तक मुझे याद है, यही है कि मैं लंदन मस्जिद का मामला अल्लाह के सामने पेश कर रहा था। मैं अल्लाह के सामने दो ज़ानू बैठा था कि अल्लाह ने फ़रमाया, जमाअत को चाहिए कि 'जिद' से काम लें, 'हज़ल' से काम न लें। 'जिद' का लफ़्ज़ मुझे अच्छी तरह याद है और इसके मुकाबले में दूसरा लफ़्ज़ 'हज़ल' उसी हाल में अचानक मेरे दिल में आया था। इसका अर्थ यह है कि जमाअत को चाहिए कि इस काम में संजीदगी और नेक नीयत से काम ले। हंसी और महज़ वाहवाही के लिए कोशिश न करे। तो हर एक शख्स नेक नीयत से काम ले और दिखावे के ख्याल को दिल से बिल्कुल निकाल दे। तो सभी अहबाब को चाहिए कि अपनी-अपनी नीयतें साफ़ करें और दुआ करें कि अल्लाह इस काम को जाया न करे बल्कि इसके अच्छे नतीजे निकले। और दुआ करें कि ऐ अल्लाह, यह मस्जिद तेरी इबादत के लिए मक़बूल मक़ाम हो और दुनिया के लिए मरकज़ हो, और इसके जरिए इस्लाम का प्रचार हो और यह हमारी कोशिश बेकार न हो और महज़ ईंट-गारे तक सीमित न हो। हे अल्लाह, हमारी नीयतें दुरुस्त कर और हमें हिम्मत दे कि हम तेरे ही लिए इस काम को अंजाम दें और इस्लाम के लिए इसके ऊंचे दर्जे के नतीजे हों और हम देखें कि इस्लाम दुनिया में फैल रहा है। आमीन, सुम्मा आमीन।"

(अल्-फज़ल क्रादियान दारुलअमान 22 जनवरी 1920)

अब हम मस्जिद की नींव रखने, निर्माण और उद्घाटन इत्यादि की ख़बरें अल्-फज़ल से क्रमवार पेश करेंगे।

नींव रखने का निर्णय

लंदन से हज़रत मौलाना शेर अली साहब रज़ियल्लाहु अन्हो के नाम एक तार हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हो से प्राप्त हुआ, जिसमें लिखा था

"यह निर्णय किया गया है कि पटनई में मस्जिद की नींव रख दी जाए। फिलहाल, बर्लिन फंड से रुपये को क़र्ज़ के रूप में लिया गया है। मुझे ऐसा लगता है कि जिन उद्देश्यों के लिए अल्लाह तआला ने मुझे इन देशों में भेजा है, उनमें से एक लंदन में मस्जिद की नींव रखना भी है।"

(अल्-फज़ल क्रादियान दारुल-अमान, 23 अक्टूबर 1924, पृष्ठ 1)

19 अक्टूबर को नींव रखने का प्रस्ताव

16 अक्टूबर 1924 ई. - दोपहर 15 12 पर लंदन से हज़रत खलीफ़तुल-मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो का तार हज़रत मौलाना मौलवी शेर अली साहब के नाम भेजा गया, जो 17 अक्टूबर 1924 ई. को बटाला और उसी दिन क्रादियान पहुँचा। उन्होंने लिखा

"अल्लाह तआला के फ़ज़लों ओ करम से लंदन में पहली मस्जिद की नींव 19 अक्टूबर रविवार शाम 4 बजे रखी जाएगी। सभी अहमदियों से दुआ की दरख़्वास्त की जाती है।"

(अल्-फज़ल क्रादियान दारुल-अमान, 21 अक्टूबर 1924, पृष्ठ 2)

क्रादियान की सभी मस्जिदों में दुआ

अल्-फज़ल क्रादियान दारुल-अमान के पहले पृष्ठ के स्थायी कॉलम "मदीना-तुल-मसीह" के अंतर्गत यह ख़बर प्रकाशित हुई

"मस्जिद फज़ल लंदन की नींव रखने के अवसर पर 19 अक्टूबर की रात को साढ़े नौ बजे दारुल-अमान की सभी मस्जिदों में अत्यंत श्रद्धा और विनम्रता से दुआ की गई।"

(अल्-फज़ल क्रादियान दारुल-अमान, 23 अक्टूबर 1924, पृष्ठ 1)

नींव की स्थापना, हज़रत की तक्ररीर सम्माननीयों की उपस्थिति और विचार व्यक्त करना

उपरोक्त शीर्षक को हम ने कुछ संक्षिप्त कर दिया है, के अंतर्गत अल्-फज़ल क्रादियान दारुल-अमान 25 अक्टूबर 1924 ई. में निम्नलिखित ख़बर प्रकाशित हुई

"हज़रत ख़लीफ़तुल्-मसीह सानी (अय्यद अल्लाहु तआला) ने रविवार, 19 अक्टूबर 1924 ई. को 63 मील रोड में लंदन की पहली मस्जिद का नींव का पत्थर शाम 4 बजे रखा। सबसे पहले, इमाम मस्जिद ने एक संक्षिप्त स्वागत भाषण पढ़ा। इसके बाद समूह नींव रखने के स्थान पर पहुँचा जहाँ कुरआन शरीफ़ की संक्षिप्त तिलावत के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल्-मसीह ने तक्ररीर की। उन्होंने कहा कि मस्जिद अल्लाह का घर है, जहाँ किसी को यह अधिकार नहीं है कि वह आस्था के मतभेद के कारण किसी को तकलीफ़ दे या बाहर निकाले। और यह कि मैं पूरी दुनिया में यह घोषणा करना चाहता हूँ कि यह मस्जिद एक माल अल्लाह की उपासना और इबादत के लिए बनाई गई है। हम किसी को यहाँ अल्लाह तआला की इबादत से नहीं रोकेंगे, बशर्ते कि वह उन नियमों का उल्लंघन न करें जो इस घर के संचालन के लिए आवश्यक हैं, और यह कि वे उन लोगों की इबादत में हस्तक्षेप न करें जिन्होंने इसे बनाया है।"

इसके बाद हज़रत ने फ़रमाया "मुझे विश्वास और यक़ीन है कि यह मस्जिद सभी झगड़ों और लड़ाइयों को दूर करने में, और लोगों में शांति, प्रेम, और भलाई स्थापित करने में मदद करेगी। और अहमदिया जमाअत अल्लाह के फ़ज़ल के साथ सभी प्रकार के बलिदान देने के लिए तैयार है जब तक कि सभी सांस्कृतिक और राजनीतिक लड़ाइयाँ समाप्त होकर प्रेम का दौर न आ जाए। इस सभा में विभिन्न क्रौमों के प्रतिष्ठित व्यक्ति शामिल थे, जैसे अंग्रेज़, जापानी, जर्मन, सर्बियन, चेकोस्लोवाकिया, एस्टोनिया, मिस्र, अमेरिका, इटली, हंगरी और भारत के निवासी। इसके अतिरिक्त विभिन्न धर्मों के लोग भी थे, जैसे ईसाई, मुस्लिम, पारसी और यहूदी।

हालांकि बारिश का दिन था, फिर भी दो सौ से अधिक सम्माननीय लोग इस समारोह में शामिल हुए, जिनमें अधिकांश अंग्रेज़ थे। उनमें से कुछ खास उल्लेखनीय व्यक्ति थे सर अलेक्जेंडर डेक, वर्ड्सवर्थ के मेयर, लेडी बसोक, मिसेज एनसी सेन, डॉ. लियोन और लेडी लियोन। इनके अतिरिक्त अन्य देशों के निम्नलिखित प्रतिनिधि भी शामिल थे बैरन हयाशी अपनी प्रतिष्ठित बेटी के साथ, जर्मन राजदूत, एस्टोनिया और सर्बिया के मंत्री, और चेकोस्लोवाकिया का प्रतिनिधि। तुर्की, अल्बानिया, और फिनलैंड के मंत्रियों ने बीमार होने के कारण पत्र के माध्यम से अपनी सहानुभूति व्यक्त की। इंग्लैंड की तीन राजनीतिक पार्टियों के प्रतिनिधियों ने भी सहानुभूति व्यक्त की, जो चुनाव में व्यस्त होने के कारण शामिल नहीं हो सके। प्रधानमंत्री ने मस्जिद के इमाम और अहमदिया जमाअत को निमंत्रण के लिए धन्यवाद देते हुए लिखा कि "अफ़सोस है कि मैं उस दिन लंदन में नहीं होऊंगा, इसलिए शामिल नहीं हो सकूंगा।"

अपनी तक्ररीर के बाद, हज़रत ख़लीफ़तुल्-मसीह ने नींव का पत्थर स्थापित किया। इस अवसर पर बारह से अधिक फोटोग्राफ़रों ने तस्वीरें लीं। बाद में सिनेमाघरों की कंपनियों ने पहले जब खामोशी थी और बाद में जब दुआ की गई तो तस्वीरें लीं। उसी जगह पर उपस्थित लोगों को चाय से स्वागत किया गया।

जैसे ही हज़रत ख़लीफ़तुल्-मसीह ने नींव का पत्थर रखा, मैंने आपका तार ऊँची आवाज़ में पढ़कर हज़रत ख़लीफ़तुल्-मसीह को सुनाया (यह तार हज़रत मौलाना शेर अली साहब ने जमाअत की ओर से इस समारोह पर मुबारकबाद के लिए भेजा था)। सभा में इतनी दिलचस्पी उत्पन्न हो गई कि लोग बहुत देर तक वहीं ठहरे रहे। उनमें कई मंत्री भी शामिल थे, जो हज़रत साहब और उनके सेवकों से बातचीत करते रहे। उन्होंने इस सिलसिले के

प्रति अपनी गहरी रुचि दिखाई। वर्ड्सवर्थ के मेयर ने कहा कि कोई भी धर्म, जिसे इस तक्ररीर के किसी भी हिस्से पर आपत्ति हो, धर्म कहलाने के योग्य नहीं हो सकता। और लिखने वाला फ़रिश्ता इस तक्ररीर को स्थायित्व की स्याही में डूबी हुई कलम से लिखेगा। चेकोस्लोवाकिया के प्रतिनिधि ने कहा कि मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि मुझे ऐसे अद्भुत विचारों को पहली बार सुनने का अवसर मिला।"

(अल्-फज़ल क्रादियान दारुल-अमान, 25 अक्टूबर 1924)

हज़रत ने अंग्रेज़ी में लेख पढ़ा था, जिसका पूरा उर्दू अनुवाद 20 नवंबर 1924 ई. के अल्-फज़ल क्रादियान दारुल-अमान, पृष्ठ 4 पर देखा जा सकता है।

लंदन में मस्जिद अहमदिया की नींव

इस शीर्षक से अल्-फज़ल क्रादियान दारुल-अमान में 15 नवंबर 1924 ई. के पृष्ठ 6 पर यह खबर प्रकाशित हुई।

19 अक्टूबर 1924 ई. को शाम 4 बजे हज़रत ख़लीफ़तुल्-मसीह ने लंदन में मस्जिद अहमदिया की नींव का पत्थर रखा। यह लंदन में ही नहीं, इंग्लैंड में ही नहीं बल्कि यूरोप में पहली मस्जिद होगी। इस अर्थ में कि अगर इससे पहले कोई मस्जिद है भी तो वह किसी मुसलमान ने नहीं बनाई थी। वोकिंग की मस्जिद डॉ. मंटज़ ने एक अजूबे के रूप में बनाई थी, न कि मस्जिद की आवश्यकता के तहत। बहरहाल, यह मस्जिद पहली इस्लामी मस्जिद है। इस मस्जिद पर जो शिलालेख लगाया गया है, वह इस प्रकार है। यह शिलालेख हज़रत अक्रदस के अपने हाथ से लिखा गया है और इसका अंग्रेज़ी अनुवाद खुदा गया है। (इरफ़ानी)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नह्यदुहू व नुसल्लि अला रसूलिहिल करीम

अल्लाह के फ़ज़ल और रहमत के साथ हुवन-नासिर

कुल इनन सल्लाति व नसुकी व मह्याया व ममाती लिल्लाहि रब्बिल

आलमीन।

मैं मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद, ख़लीफ़तुल्-मसीह सानी, इमाम जमाअत अहमदिया, जिसका केंद्र क्रादियान (पंजाब) हिंदुस्तान है, अल्लाह की रज़ा प्राप्त करने के लिए और इस उद्देश्य से कि अल्लाह का वर्णन इंग्लैंड में बुलंद हो और इंग्लैंड के लोग भी उस बरकत से हिस्सा पाएं जो हमें मिली है, आज 11 रबी-उल-अव्वल 1343 हिजरी मुक़द्दस को इस मस्जिद की नींव रखता हूँ और अल्लाह से दुआ करता हूँ कि वह पूरी जमाअत अहमदिया के मर्दों और औरतों की इस साधारण कोशिश को क़बूल करे और इस मस्जिद को आबाद करने के साधन पैदा करे, और हमेशा के लिए इस मस्जिद को नेकी, तक्रवा, इंसाफ़ और प्रेम के विचारों को फैलाने का केंद्र बनाए। और यह जगह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ख़ातिम-उन-नबीयीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और हज़रत अहमद मसीह मौऊद नबीउल्लाह ब-रूज़ मुहम्मद अलैहिस्सलाम की नूरानी किरणों को इस देश और अन्य देशों में फैलाने के लिए एक रूहानी सूरज का काम दे। हे अल्लाह, ऐसा ही कर। 19 अक्टूबर 1924 ई. केवल।"

(अल्-फज़ल क्रादियान दारुल-अमान, 15 नवंबर 1924, पृष्ठ 6)

मस्जिद के लिए हज़रत की दुआ

हज़रत ख़लीफ़तुल्-मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो ने वेनिस (इटली) में जहाज़ पर सवार होने से कुछ घंटे पहले अल्-फज़ल में प्रकाशित करने के लिए अपने मुबारक हाथों से जो लिखावट लिखी थी, उसका एक पैराग्राफ़, जो मस्जिद फ़ज़ल लंदन से संबंधित है, पाठकों को भेंट किया जा रहा है। हज़रत ने लिखा

"हे अल्लाह! तू इस मस्जिद को, जिसकी नींव मैंने लंदन में रखी है, बरकत दे और हमें इसे जल्दी से पूरा करने की तौफ़ीक़ अता कर, और

इसकी इमारत के लिए अपने फ़ज़ल से साधन पैदा कर। वह उच्च दर्जे की बरकतें की जगह हो, और लोगों को इससे सच्ची नेकी और सच्चा संतोष प्राप्त हो, जिसमें कोई बुराई या असंतोष का अंश न हो।"

(अल्-फ़ज़ल कादियान दारुल-अमान, 30 अप्रैल 1925, पृष्ठ 2)

निर्माण की कार्यवाही

लंदन मस्जिद के निर्माण के लिए प्रारंभिक कार्यवाही की जा रही है।

(अल्-फ़ज़ल कादियान दारुल-अमान 15, 13 अगस्त 1925, पृष्ठ 1)

मस्जिद का निर्माण शुरू हो गया

अल्-फ़ज़ल कादियान दारुल-अमान 3 अक्टूबर 1925, पृष्ठ 2 पर यह खबर प्रकाशित हुई

"खुदा ताअला के फ़ज़ल और करम से अहमदिया मस्जिद लंदन का निर्माण शुरू हो गया है, जिसकी खबर रिपोर्टर ने निम्नलिखित शब्दों में अखबारों को भेजी।

"लंदन, 18 सितंबर - आज सुबह इस पहली मस्जिद का निर्माण साउथ फील्ड, लंदन में शुरू हो गया, जिसकी नींव पिछले शरद ऋतु में हज़रत खलीफ़तुल मसीह (अय्यदहुल्लाहु ताअला बिनसिहिल अज़ीज़) ने अपने मुबारक हाथों से रखी थी। इस मौके पर अहमदिया जमाअत लंदन के इमाम ने कार्य शुरू होने से पहले अरबी भाषा में एक खुल्बा पढ़ा, जिसमें विशेष रूप से वे दुआएँ पढ़ीं जो अबुल मिल्लत हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने काबा के निर्माण के समय पढ़ी थीं। इसके बाद इमाम जमाअत अहमदिया लंदन और अन्य सभी अहमदी सदस्य अपने हाथों से आधे घंटे तक नींव खोदते रहे और साथ ही उन दुआओं की तिलावत भी करते रहे जो हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और उनके सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) ने मस्जिदे मदीना के निर्माण के समय पढ़ी थीं।

(अल्-फ़ज़ल कादियान दारुल-अमान 3 अक्टूबर 1925, पृष्ठ 2)

नींव की खुदाई का कार्य शुरू किया गया

अल्-फ़ज़ल कादियान दारुल-अमान 24, 22 अक्टूबर 1925, पृष्ठ 1 पर मकरम मौलाना अब्दुरहीम नय्यर साहब की ओर से यह रिपोर्ट प्रकाशित हुई

"अल्लाह ताअला के फ़ज़ल और रहम के साथ 28 सितंबर 1925, सोमवार के दिन के 11 बजे लंदन मस्जिद की नींव की खुदाई का कार्य शुरू कर दिया गया। इस मौके पर अखबारों के प्रतिनिधि भी मौजूद थे। काम शुरू करने से पहले मैंने उन मित्तों के साथ जो इस मुबारक अवसर में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त कर चुके थे, किबला रख होकर दुआ मांगी। मैं दुआ मांगता जा रहा था और मित्त आमीन कहते जा रहे थे। इसके बाद हमने अपने हाथों से खुदाई का कार्य शुरू किया। हम जमीन खोदते जा रहे थे और साथ-साथ ऊंची आवाज़ में वे दुआएँ पढ़ते जा रहे थे जो हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माइल (अलैहिस्सलाम) ने बैतुल्लाह की नींव रखते हुए और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मस्जिद-ए-नब्वी के निर्माण के समय मांगी थीं। कुछ मित्त जमीन खोदते जा रहे थे और कुछ मिट्टी उठाकर दूसरी जगह ले जा रहे थे और यह पढ़ते थे

"यह बोझ, खैबर का बोझ नहीं है; यह सबसे पवित्र और सबसे साफ़ है, हे हमारे रब।"

फ़ैशन और बाहरी चमक-दमक के शौकीन लंदन में इस तरह अपने हाथों से मिट्टी खोदना और उठाना एक खास नज़ारा था, विशेषतः जब एक अंग्रेज़ महिला (मिसेज़ अज़ीज़ुद्दीन) भी उसी तरह यह काम कर रही थीं जैसे हम कर रहे थे। लंदन के कई अखबारों ने काम करते हुए हमारे विभिन्न पलों की तस्वीरें छापीं और इस मौके की रिपोर्ट कुछ ने संक्षेप में और कुछ ने विस्तार से प्रकाशित की... उन लोगों के नाम जो मस्जिद की नींव खोदने में अपने हाथ से काम कर रहे थे, इस प्रकार हैं (1) शेख याकूब अली

साहब (2) सैयद वज़ारत हुसैन साहब (3) शेख ज़फ़र हक़ खान साहब (4) मलिक मुहम्मद इस्माइल साहब (5) खान अब्दुरहीम खान खालिद साहब (6) मिस्टर जिब्राइल मार्टिन साहब (7) मिस्टर शरफुद्दीन साहब (8) मिस्टर अज़ीज़ुद्दीन साहब (अम्मतुस्सलाम साहिबा) (9) मिस्टर हैरी हन्टन साहब (10) अब्दुलअजीज पुत्र अब्दुल्लाह मालिक होटल लंदन (11) मिस्टर कुंदन लाल साहब जो मुफ़्ती साहब के समय में मुसलमान हुए। (12) मलिक गुलाम फरीद साहब (13) विनीत अब्दुरहीम दर्द।

(अल्फ़ज़ल कादियान दारुलअमान 24, 22 अक्टूबर 25, पृष्ठ 1)

लंदन की पहली मस्जिद का वर्णन लंदन के प्रतिष्ठित

समाचार पत्रों में

अल्फ़ज़ल कादियान दारुलअमान 14 नवंबर 1925, पृष्ठ 3 पर उपरोक्त शीर्षक के अंतर्गत तीन समाचार पत्रों (1) डेली ग्राफिक (2) टाइम्स ऑफ लंदन (3) डेली टेलीग्राफ की खबर प्रकाशित हुई। पृष्ठों की कमी के कारण हम केवल डेली ग्राफिक की प्रकाशित खबर नीचे दर्ज कर रहे हैं। समाचार पत्र लिखता है

"कल जब इस मस्जिद की नींव खोदी जा रही थी तो इससे मुसलमानों की आध्यात्मिकता प्रकट हो रही थी और इस आध्यात्मिकता का छोटा सा प्रतीक यह था कि खुदा का घर बनाने के लिए ये लोग मज़दूरों की तरह खुद मिट्टी खोदते, मिट्टी उठाते और अन्य कार्य करते थे। भारत के निवासियों के अतिरिक्त जो इस काम को अपने हाथों से कर रहे थे, एक अंग्रेज़ भी उनके साथ शामिल था जो अपने सफेद बालों के बावजूद, जो उसकी वृद्धावस्था का संकेत थे, पूरे उत्साह के साथ वही काम कर रहा था जो उसके भारतीय सहधर्म भाई कर रहे थे।"

निर्माण जारी है मेहराब वाली दीवारें पूरी हो चुकी हैं

"मस्जिद का निर्माण" के सह-शीर्षक के साथ अल्फ़ज़ल कादियान दारुलअमान 8 जनवरी 1926, पृष्ठ 2 पर यह खबर प्रकाशित हुई।

"मस्जिद का निर्माण खुदा की कृपा से जारी है। मेहराब वाली दीवारें लगभग पूरी हो चुकी हैं। उत्तरी और दक्षिणी दीवारें बन रही हैं। लोहे के बड़े गार्डर खड़े किए जा चुके हैं जिन पर गुंबद बनाया जाएगा। अनुमान है कि मस्जिद का एक तिहाई हिस्सा बन चुका है। उम्मीद है कि अगर मौसम अच्छा रहा तो खुदा की कृपा से फ़रवरी या मार्च में निर्माण पूरा हो जाएगा।"

(अल्फ़ज़ल कादियान दारुलअमान 8 जनवरी 1926, पृष्ठ 2)

निर्माणाधीन मस्जिद धीरे-धीरे ऊंची हो रही है

इलाहाबाद का अंग्रेज़ी समाचार पत्र "पायोनियर" अपने 20 जनवरी 1926 के अंक में संडे एक्सप्रेस के हवाले से लिखता है

"साउथ फील्ड (विम्बलडन के पास) के एक बगीचे में लंदन की पहली निर्माणाधीन मस्जिद धीरे-धीरे ऊंची हो रही है, जिसे मुसलमानों के अहमदिया संप्रदाय की ओर से धार्मिक उद्देश्यों के लिए बनाया जा रहा है। इंग्लैंड में वर्तमान में मुसलमानों की कुल संख्या लगभग एक हज़ार है, जिसमें अधिकांश हिस्सा अंग्रेज़ मुस्लिमों का है। मस्जिद की इस इमारत की वास्तुकला में कोई ऐसा मीनार नहीं है जिस पर चढ़कर नमाज़ियों के एकत्र होने के लिए मौज़िन अज़ान दे, बल्कि अज़ान मस्जिद के द्वार पर दी जाएगी।"

(अल्फ़ज़ल कादियान दारुल अमान 5 फ़रवरी 1926)

मस्जिद के लिए कालीन का फर्श खान बहादुर अहमद

अलादीन जिंदाबाद

उपरोक्त शीर्षक के तहत अल्फ़ज़ल कादियान दारुल अमान 2 जुलाई 1926 के पहले पन्ने पर शेख याकूब अली साहब इरफानी रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ से निम्नलिखित खबर प्रकाशित हुई।

"लंदन में सबसे पहली और अकेली मस्जिद अब तकमील के करीब

है और बहुत जल्द इसका उद्घाटन होने वाला है। लंदन और यूरोप में इस मस्जिद के संबंध में दिलचस्पी का यह आलम है कि बीसों अखबारों में कई बार इसके विभिन्न फोटो और इसके संबंध में आवश्यक हालात प्रकाशित होते रहते हैं। अखबारों के प्रतिनिधि और विदेशों के सैलानी आते हैं और उन पर एक खास हालत छाई होती है। कुछ शक नहीं कि तिमूर्ति के बुतखाने और दुनिया के भौतिक केंद्र में यह भगवान का पहला घर है जो इस्लाम की अज़मत और हुस्र और हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जलाल और जमाल के ऐलान का केंद्र होगा...

जनाब सेठ अहमद अलह दीन साहब को मस्जिद की तकमील की सूचना देते हुए मैंने मस्जिद के फर्श के लिए कालीन की तहरीक की। सेठ साहब जो नेकियों और सादगी के कामों के लिए अपने दिल और हाथ को हमेशा खुला रखने की तौफ़ीक पाते हैं, ने जैसे ही मेरी इस तहरीक को पढ़ा, तार द्वारा सूचना दी कि लंदन की इस मस्जिद के लिए वह एक सौ पौंड फर्श के कालीन के लिए पेश करते हैं... निहायत कीमती कालीन और गालिचे इसके फर्श के लिए आएंगे, लेकिन उनकी वह इज्जत नहीं हो सकती जो सेठ अहमद अलाउद्दीन के पेश किए हुए फर्श की है... मस्जिद में रोशनी के लिए जमाअत हैदराबाद ने एक साल के लिए खर्च पेश किए हैं। अल्लाह तआला इन सभी दोस्तों के दिलों और उनके घरों को अपने नूर से रोशन करे। आमीन।

(अल्फज़ल क्रादियान दारुल अमान 2 जुलाई 1926, पृष्ठ 1)

तामीर मुकम्मल हो गई

अल्फज़ल क्रादियान दारुल अमान 8 अक्टूबर 1926 पृष्ठ 2 पर यह खबर प्रकाशित हुई

"वह मस्जिद जो लंदन में सबसे पहली मस्जिद है, वह मस्जिद जो जमाअत अहमदिया के ईसा और कुर्बानी का उदाहरण खूबसूरत है, वह मस्जिद जो हज़रत खलीफ़ा मसीह सानी अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ के दस्त मुबारक से अक्टूबर 1924 ई. में अपना संग बुनियाद रखने के फख्र से विशेष है, वह मस्जिद जो शरीफ़ों को अपने प्रभाव और रस्म बुनियाद पर खींच लाने वाली है, अल्हम्दुलिल्लाह सुम्मा अल्हम्दुलिल्लाह कि इस खुदा -ए कुदूस के फज़ल और रहम से पाय तकमील को पहुंच गई है कि जिसका नाम बुलंद करने के लिए इसकी तामीर हुई।

(अल्फज़ल क्रादियान दारुल अमान 8 अक्टूबर 1926, पृष्ठ 2)

मस्जिद का उद्घाटन

अल्फज़ल क्रादियान दारुल अमान 12 अक्टूबर 1926 के पृष्ठ 3 पर संपादक अल्फज़ल मस्जिद के उद्घाटन की खुशखबरी देते हुए लिखते हैं

"हे अहमदी जमाअत की औरतों और हे अहमदी जमाअत के मर्दों! हे अहमदी जमाअत के बच्चों और हे अहमदी जमाअत के बूढ़ों! मुबारक हो तुम्हें सैकड़ों मुबारक कि आज वह मस्जिद तुम्हारे रब अल्लाह के आगे सजदा करने वालों के लिए खुल गई और इसका उद्घाटन 3 अक्टूबर 1926 को बड़ी शान और शोकेट के साथ हुआ।"

रोज़नामा हमदम 7 अक्टूबर लखनऊ ने उद्घाटन की खबर प्रकाशित करते हुए लिखा कि

"लंदन 3 अक्टूबर मुसलमानों की जमाअत अहमदिया अर्सा दराज से कोशिश कर रही थी कि लंदन में कोई अपना काबिल ए कद्र केंद्र कायम करे। चूंकि खुदा खुदा करके आज वह दिर्दाना अरज़ू पूरी हुई और स्थान साउथ फील्ड स्थित दक्षिण पश्चिमी लंदन की मस्जिद का मुसलमानों के मजमूआ कसीर, संसद और अन्य सम्मानित व प्रभावी व्यक्तियों के सामने उद्घाटन हुआ।

आखिर वक्त तक इसकी उम्मीद थी कि मस्जिद का उद्घाटन अमीर फैसल बिन सुलतान बिन सऊद के हाथों होगा लेकिन लोगों ने इमाम

मस्जिद मौलाना दर्द का दरवाज़ा मस्जिद पर चस्पां यह नोटिस मायूसी के साथ पढ़ा कि अमीर मोसुफ़ के पिता ने आपको इस तस्वीर की शिरकत से मना कर दिया। यह रस्म शेख अब्दुल कादिर साहब पूर्व मंत्री प्रांत पंजाब के हाथों होगी। मत्तल साफ तो नहीं था परंतु बादल फटे हुए थे और कभी कभी आफ़ताब आलमेताब का रुख़ मुनव्वर बेनकाब हो जाता था। रस्म-ए-उद्घाटन शुरू होने से घंटों पहले सफेद मिनारों वाली मस्जिद के सामने जो उस वक्त आराइश और सिंगार से चौथी की दुल्हन बनी हुई थी सड़क पर लोगों के ठाठ लगे हुए थे।

शेख अब्दुल कादिर से पहले महाराजा बर्धमान तशरीफ़ लाए, जिनका लोगों ने नारे-ए-मसरत से स्वागत किया। इमाम मस्जिद ने वह लंबा संदेश पढ़कर सुनाया जो बहरी तार के जरिए जमाअत अहमदिया के इमाम हज़रत साहिबजादा ने हिंदुस्तान से भेजा था। इसके अतिरिक्त और भी बहुत से संदेश पढ़कर सुनाए गए जो संसार के कोने कोने से आए थे। इमाम साहब मस्जिद ने एक लंबी तकरीर में इस बात की स्पष्टता की कि अमीर फैसल का शामिल न होना एक गलतफहमी पर आधारित है।

जब शेख अब्दुल कादिर साहब ने मस्जिद का दरवाज़ा खोला तो "अल्लाहु अकबर" के रूहफरोश नारों का जश्र अर्श-ए-बरीन तक पहुंचा। इसके बाद सभी पार्टी मस्जिद में दाखिल हुई जहाँ तकरीरें की गईं। शेख अब्दुल कादिर ने अमीर फैसल की अनुपस्थिति पर अफसोस जताते हुए कहा कि "हालाँकि मैं अहमदी नहीं हूँ, लेकिन मैं बहुत खुशी के साथ मस्जिद का उद्घाटन करता हूँ।" आपने अपनी लंबी तकरीर में देर तक जमाअत अहमदिया की विशेषतःओं का बखूबी वर्णन किया और कहा कि दुनिया में कोई धर्म नहीं है जिसमें विभिन्न संप्रदाय न हों, इसलिए इस्लाम भी इस नियम से अछूता नहीं है।

महाराजा बर्दवान ने कहा कि "हालाँकि मैं मुसलमान नहीं हूँ, लेकिन इस समारोह में शामिल होना मैं न केवल अपना अधिकार बल्कि अपना कर्तव्य समझता हूँ..." तकरीरों के बाद चाय-पानी हुआ, इसके बाद सबसे पहली बार लंदन में नारे-ए-तौहीद बुलंद हुए, अर्थात् बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो के जानशीन मौज़िन ने "अल्लाहु अकबर" की आवाज़ बुलंद की और मुसलमान वजू करके

एक ही सफ़ में खड़े हो गए महमूद और अयाज़,
न कोई बंदा रहा, न कोई बंदा नवाज़।"

(अल्फज़ल क्रादियान दारुल अमान 12 अक्टूबर 1926, पृष्ठ 12)

कोलकाता के सिनेमा घरों में उद्घाटन के दृश्य दिखाए गए।

सय्यद करीम बख्श अहमदी ऑफ कोलकाता की ओर से यह खबर प्रकाशित हुई कि "इस हफ्ते कोलकाता के सभी बड़े सिनेमा में मस्जिद अहमदिया लंदन के उद्घाटन का दृश्य दिखाया जा रहा है। इसका शीर्षक 'लंदन में इस्लाम' है, इसमें खान बहादुर अब्दुल कादिर साहब का स्वागत, मस्जिद का दरवाज़ा खोलना, लोगों का हजूम आदि दिखाए जा रहे हैं। मैं कल यहाँ के ग्लोब थियेटर में गया था जहाँ मुसलमानों का एक बड़ा हजूम था। जब मस्जिद के उद्घाटन का दृश्य दिखाया गया तो सभी मुसलमान खुशी से ताली बजाने लगे।"

(अल्फज़ल क्रादियान दारुल अमान 23 नवंबर 1926, पृष्ठ 2)

विलायत के बीसियों अखबारों ने उद्घाटन की खबरें प्रकाशित कीं जिन्हें हम पत्रों की तंगी के कारण छोड़ रहे हैं। दिलचस्पी रखने वाले दोस्तों इसे अल्फज़ल में देख सकते हैं।

अहमदिया मस्जिद लंदन का शानदार उद्घाटन

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं

उपद्रवियों ने तो यह कोशिश भी की थी कि मस्जिद लंदन ही न बने, लेकिन खुदा ने उनके मुँह काला करने के लिए न केवल यह किया कि मस्जिद बनाने की तौफ़ीक दी, बल्कि ऐसे सामान भी पैदा कर दिए कि

तकमील के बाद इसका शानदार उद्घाटन भी हो गया। जो इतना शानदार था कि हर किसी ने इस बात को स्वीकार किया कि इसकी मिसाल पहले मौजूद नहीं थी। लगभग दो सौ से अधिक विलायती अखबारों में ज़बरदस्त अल्फ़ज़ल के साथ इसका वर्णन आया। ये अखबार इंग्लैंड के हैं। इसके अतिरिक्त और अखबार हैं जो दूसरे देशों से निकलते हैं और जिनमें इसका वर्णन हो रहा है और जिनके कटिंग्स आ रहे हैं। इस तरह इस समय तक करीब बीस पच्चीस करोड़ इंसान यह बात सुन चुके हैं कि लंदन में एक मस्जिद बनी है जिसका उद्घाटन हुआ और जिसे इस अहमदी जमाअत ने बनाया है, जिसके इमाम मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब हैं, जिन्हें खुदा ने मसीह मौऊद और नबी बनाकर भेजा और जिसका काम इस्लाम का प्रचार है। दुनिया के हर तीन आदमी में से एक आदमी को यह बात पहुंच चुकी है और खुद इंग्लैंड के अखबार लेखकों और अन्य सक्रिय लोगों की यह राय है कि "अगर हम दो करोड़ रुपये भी खर्च करते तो इतनी इशात न होती जितनी अब हो गई है," बल्कि कुछ ने तो यह भी कहा है कि "दो करोड़ रुपये नहीं, दो करोड़ पाँड भी यह काम न करते जो इस रुपये ने कर दिया जो मस्जिद पर खर्च हुआ।" फिर इस मस्जिद के उद्घाटन में बड़े-बड़े लोग शामिल हुए। तीन लॉर्ड, तेरह सदस्य संसद और विभिन्न देशों के राजदूत, मंत्री, नवाब और अन्य सम्मानित और प्रभावी लोगों ने एक काफी संख्या में शमूलियत इख्तियार की और न केवल यह कि शमूलियत ही इख्तियार की बल्कि इन उच्च तबके के लोगों ने परले दर्जे की दिलचस्पी भी ली और खुशी महसूस की। कुछ ने तो काम करने में भी फ़क्र समझा और बड़े शौक से उन्होंने हर काम में हिस्सा लिया। फिर हिंदुस्तान के बड़े-बड़े लोग भी इस में शामिल हुए, यहाँ तक कि महाराजा बर्दवान भी शामिल हुए, जिन्होंने इस मौके पर तकरीर करने की इजाज़त मांगी और खुशी का इज़हार किया और कहा कि "हालाँकि मैं हिंदू हूँ, लेकिन मैं इसमें शामिल होना अपना कर्तव्य समझता हूँ।" फिर ग्यारह सरकारों के बने स्थान भी इस मौके पर आए। जर्मनी, इटली, चीन आदि देशों के मंत्री भी थे। इसलिए यह उत्तर है उन लोगों के लिए जो कहते हैं कि "कहाँ गया वह रुपये जो मस्जिद के लिए जमा हुआ था?" वे सुन लें, वह रुपये यहाँ गया।

(अल्फ़ज़ल क़ादियान दारुल अमान 9 नवंबर 1926)

मस्जिद के उद्घाटन के मौके पर हज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हो ने जो संदेश भेजा था, वह अल्फ़ज़ल क़ादियान दारुल अमान 26 अक्टूबर 1926, पृष्ठ 3 पर देखा जा सकता है।

मुसलमानों की नाकाम कोशिशें

हज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इंग्लैंड के अखबारों की शान और प्रसार की विस्तार का वर्णन करते हुए फ़रमाया

“इसी प्रकार के बड़े वर्ग के एक नहीं, बल्कि कई अखबारों में प्रकाशित हुआ है कि पंद्रह साल से मुसलमान कोशिश कर रहे थे, मुसलमान सरकारें उनकी ताईद में थीं, धनवान लोग इसके लिए तैयार थे, लेकिन इन सब बातों के बावजूद वे कुछ न कर सके और वहाँ कोई मस्जिद नहीं बना सके। लेकिन अहमदी कौम ने जब इसका काम बेड़ा उठाया, तो काम कर लिया और एक मस्जिद वहाँ खड़ी कर दी। सुलतान अब्दुल हमीद तुर्की के पूर्व बादशाह, हिंदुस्तान के रईस और दूसरी मुसलमान सल्तनतें और मुसलमान अमीर सभी इस की ताईद में थे कि ज़रूर लंदन में एक मस्जिद बनानी चाहिए, लेकिन वे हर प्रकार के सामान होने के बावजूद नहीं बना सके। लेकिन अहमदियों ने जब इस मस्जिद का इरादा किया, तो इसे कोई देर न लगी।”

(अल्फ़ज़ल क़ादियान दारुल अमान 9 नवंबर 1926)

आखिर में हज़रत खलीफ़ा मसीहख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ के इन अल्फ़ज़ल के साथ, विनीत इस लेख का समापन करता है। हज़ूर फ़रमाते हैं

“अल्लाह तआला हम सबको इस की तौफ़ीक़ दे कि इस मस्जिद के हक़ को पूरा करने वाले हों और हर मस्जिद के हक़ को पूरा करने वाले हों... और अपनी इबादतों के हक़ को पूरा करने वाले हों। अल्लाह तआला के पैग़ाम

को पहुँचाने के हक़ को पूरा करने वाले हों और तालीम इस्लाम का हक़ अदा करने वाले हों और असल मायने में वह मुसलमान बन जाएं, जिसके लिए अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अवतरित फ़रमाया और इस ज़माने में आपके गुलाम-ए-सादिक़ को भेजा ताकि इस्लाम की नशात सानी का दौर दोबारा शुरू हो और दुनिया में इस्लाम और खुदा ए वाज़िद की हुकूमत कायम हो और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का झंडा दुनिया में लहराए। अल्लाह तआला हम सबको इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।”

(मंसूर अहमद मंसूर)

★ ★ ★

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान की वैकेंसी दर्जा दोम के लिए शर्तें

(1) अभ्यर्थी की आयु 25 वर्ष से अधिक और 18 वर्ष से कम न हो। (2) अभ्यर्थी की शिक्षा कम से कम 10+2 45% फ़्रीसद नंबरात के साथ होनी चाहिए। (3) अभ्यर्थी उर्दू/अंग्रेज़ी कम्पोज़िंग जानता हो और तेज़ी 25 शब्द प्रति मिनट हो। (4) इस ऐलान के बाद 2 माह के अंदर जो निवेदन प्राप्त होंगे उन्हीं पर गौर होगा। (5) निसाब परीक्षा कमीशन बराए कारकुनान दर्जा दोम निम्नलिखित है। परीक्षा के प्रत्येक भाग में सफल होना अनिवार्य है।

प्रथम भाग

★ कुरआन-ए-करीम नाज़रा मुकम्मल। पहला पार: अनुवाद सहित चालीस जवाहर पारे, अरकान-ए-इस्लाम, पूर्ण नमाज़ अनुवाद सहित। (30 अंक)

द्वितीय भाग

★ कशती-ए-नूह, बरकतुंद-दुआ, दीनी मालूमात जमाअत अहमदिया के अकायद के विषय में मजमून, दुर्रे समीन से नज़म (शान-ए-इस्लाम) (20 अंक)

तृतीय भाग

★ अंग्रेज़ी भाषा इंटरमीडियेट के मयार के अनुसार (10+2), (20 अंक)

चतुर्थ भाग

★ हिसाब मैट्रिक के मयार के अनुसार (दफ़्तरी इमपरस्ट से संबधित प्रश्न) (20 अंक)

पंचम भाग

★ साधारण ज्ञान (G.K) - (10 अंक)

(6) लिखित परीक्षा में सफल होने वाले अभ्यर्थियों का ही इंटरव्यू होगा। (7) लिखित परीक्षा, कम्प्यूटर टैस्ट और इंटरव्यू में सफलता की सूत में अभ्यर्थी को नूर हस्पताल क़ादियान से चिकित्सा परीक्षण करवाना होगा और केवल वही अभ्यर्थी ख़िदमत के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल की तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार सेहत मंद और तंदरुस्त होंगे। (8) स्लैक्शन की सूत में अभ्यर्थी को क़ादियान में अपने रहने का इंतज़ाम स्वयं करना होगा। बाद में रहने के संबंध में किसी निवेदन पर कोई कारवाई नहीं होगी। (9) यात्रा का खर्च क़ादियान आना जाना अभ्यर्थी के अपने ज़िम्मा होगा।

(नोट लिखित परीक्षा और इंटरव्यू की तिथि से अभ्यर्थी को बाद में अवगत किया जाएगा।)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

नज़रात दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान, पिन कोड

143516

मोबाइल 09888232530, 09682627592

दफ़्तर 01872-501130

ई-मेल diwan@qadian.in

★ ★ ★

वेम्बले सम्मेलन की रिपोर्ट और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो के लेख पर बुद्धिजीवियों और अखबारों का टिप्पणी (मुसव्विर अहमद मसरूर, मुबल्लिग़ा सिल्सिला)

प्रिय पाठकों! वर्ष 1924 ई. जमाअत अहमदिया के इतिहास में जमाअती विकास के दृष्टिकोण से एक आश्चर्यजनक क्रांति का वर्ष रहा है। इसका कारण यह है कि वर्ष 1924 ई. में जमाअत अहमदिया के दूसरे खलीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो ने यूरोप की पहली यात्रा की। इस ऐतिहासिक और अत्यंत महत्वपूर्ण यात्रा के परिणामस्वरूप जमाअत अहमदिया एक नए युग में प्रवेश कर गई और यूरोप में इस्लाम की विजय की नींव रखी गई।

प्रिय पाठकों! हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने जिस मूल और सबसे महत्वपूर्ण कारण की वजह से इस यात्रा को अपनाया वह लंदन में आयोजित होने वाली वेम्बले धार्मिक सम्मेलन थी। जिसमें हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो को धर्म इस्लाम का प्रतिनिधित्व करते हुए व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया था।

इसलिए हम अपने इस लेख में इस सम्मेलन की रिपोर्ट और इसमें पढ़े गए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो के व्याख्यान के संबंध में बुद्धिजीवियों और अखबारों की प्रतिक्रियाओं का कुछ उल्लेख करेंगे।

सम्मेलन के आयोजन का संक्षिप्त पृष्ठभूमि

यह सम्मेलन कैसे आयोजित हुआ और किस प्रकार हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हो की सेवा में सम्मेलन में भागीदारी के लिए निमंत्रण पत्र पहुँचा, इसका उल्लेख तारीख-ए-अहमदियत में इन शब्दों में मिलता है

“शुरुआत 1924 ई. में इंग्लैंड की प्रसिद्ध वेम्बले प्रदर्शनी के सिलसिले में समाजवादी नेता मिस्टर विलियम लॉफ्टस हेयर (Mr William Loftus Hare) ने यह सुझाव दिया कि इस विश्व प्रदर्शनी के साथ-साथ एक धार्मिक सम्मेलन भी आयोजित किया जाए, जिसमें ब्रिटिश साम्राज्य के विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया जाए कि वे इस सम्मेलन में शामिल होकर अपने-अपने धर्म के सिद्धांतों पर प्रकाश डालें। प्रदर्शनी के आयोजकों, जिनमें मस्तिशरिक भी शामिल थे, ने इस विचार से सहमति व्यक्त की और लंदन विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ ओरिएंटल स्टडीज (The School of Oriental Studies) के अधीन सम्मेलन के व्यापक पैमाने पर आयोजन के लिए एक समिति स्थापित कर दी।

सम्मेलन का स्थान इम्पीरियल इंस्टीट्यूट लंदन निर्धारित किया गया और 22 सितंबर 1924 ई. से 3 अक्टूबर 1924 ई. तक की तिथियाँ इसके लिए प्रस्तावित की गईं। समिति ने निम्नलिखित धर्मों के प्रवक्ताओं का चयन किया हिंदू धर्म, इस्लाम, बौद्ध धर्म, पारसी धर्म, जैन धर्म, सिख धर्म, सूफ़ीवाद, ब्रह्मो समाज, आर्य समाज, कन्फ्यूशियसवाद आदि।

हालांकि हज़रत मौलवी अब्दुलहिम नीर 1923 के आरंभ से लंदन में थे, लेकिन आपको इस भव्य सम्मेलन के प्रस्ताव का बिल्कुल भी ज्ञान नहीं हो सका। लेकिन जब समिति का गठन और प्रवक्ता भी प्रस्तावित हो चुके थे और 1924 ई. का भी कुछ हिस्सा गुजर चुका था, तो एक सोसाइटी में संयोगवश किसी ने इसका उल्लेख किया, जिस पर आपने समिति के जॉइंट सेक्रेटरी एम.एम. शार्पलज़ से मिले। उन्होंने महसूस किया कि इस्लाम से संबंधित अहमदी जमाअत का दृष्टिकोण ज़रूर प्रस्तुत होना चाहिए। जब समिति में इसका वर्णन आया, तो समिति के उपाध्यक्ष डॉक्टर सर थॉमस डब्ल्यू. अर्नोल्ड (लेखक 'Preaching of Islam') ने समिति को ध्यान दिलाया कि चयनित प्रवक्ताओं में नय्यर साहब से अवश्य परामर्श लिया जाना चाहिए। चूंकि हज़रत नय्यर साहब के साथ प्रस्तावित कार्यक्रम पर पुनर्विचार हुआ। आपने हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म के प्रतिनिधियों के नाम

प्रस्तावित करने के अतिरिक्त सूफ़ीवाद की प्रतिनिधित्व के लिए हज़रत सूफ़ी हाफिज़ रोशन अली साहब का नाम लिखा। लेकिन साथ ही बताया कि हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद खलीफ़ातुल मसीह द्वितीय इमाम जमाअत अहमदिया की अनुमति से ही हाफिज़ साहब आ सकेंगे। समिति में जब ये नाम प्रस्तुत हुए, तो डॉक्टर अर्नोल्ड और प्रोफेसर मार्गोलिएथ ने और समिति के सभी सदस्यों ने निस्संदेह भाव से यह निर्णय लिया कि हज़रत खलीफ़ा मसीह द्वितीय अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिंहिल अज़ीज़ की सेवा में सम्मेलन में भागीदारी का निवेदन किया जाए और सूफ़ी साहब को भी साथ लाने की प्रार्थना की जाए। इस प्रकार हज़रत खलीफ़ा मसीह द्वितीय रज़ियल्लाहु अन्हो की सेवा में इंग्लैंड के प्रमुख मुस्तशरिकों की ओर से निमंत्रण पत्र पहुँचा।”

(तारीख-ए-अहमदियत, भाग 4, पृष्ठ 423-422)

और कि साल 1924 ई. में लंदन में आयोजित इस सम्मेलन के अध्यक्ष धर्मों के अध्यक्ष थे। इस सम्मेलन के आयोजन के बारे में वह कहते हैं

यह सम्मेलन, जो कि "साम्राज्य के भीतर मौजूद कुछ जीवित धर्मों" पर आयोजित किया गया, वास्तव में मेरे लिए उस पत्र का परिणाम है जो मुझे 1923 के शुरुआत में मिस्टर लाफ्टिस हियर से प्राप्त हुआ। इस पत्र में उन्होंने 1924 ई. में होने वाली ब्रिटिश साम्राज्य प्रदर्शनी के संबंध में धर्मों के बारे में एक सम्मेलन के आयोजन का सुझाव दिया था, जिसमें उस समय विभिन्न विषयों पर सम्मेलन आयोजित करने की योजना बनाई जा रही थी। मैंने उत्तर में इस विचार से सहमति व्यक्त की, बशर्ते कि पहले, सम्मेलन में कोई विवादास्पद चर्चा न हो, और दूसरे, हर धर्म का प्रतिनिधि वह व्यक्ति हो जो उस धर्म का अनुयायी हो।

मिस्टर हेयर और उनके कुछ दोस्तों ने बाद में प्रदर्शनी के अधिकारियों से संपर्क किया और अंततः यह तय हुआ कि हमें सितंबर के अंत और अक्टूबर 1924 ई. के शुरुआत में दस दिनों के लिए प्रदर्शनी की तरफ से सुविधाएं प्रदान की जाएंगी।

(RELIGIONS OF THE EMPIRE PAGE NO. 3)

वेम्बले धर्म सम्मेलन में भाग लेने के लिए हज़रत की जमाअत से सलाह और हज़रत की अपनी राय।

जब हज़रत अकदस की सेवा में सम्मेलन धर्म में शामिल होने के लिए तार पहुँचा, तो हज़रत ने 16 मई 1924 ई. को बाद नमाज़ असर एक मजलिस शूरा बुलाई और अहबाब क्रादियान से सलाह मांगी कि सम्मेलन में भाग लेने के लिए किसे भेजा जाए। इस मजलिस शूरा में मौजूद 16 सदस्यों में से 11 सदस्यों ने, जिनमें क्रमर अल-अंबिया हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब और हज़रत मौलवी अब्दुरहीम साहब दर्द भी शामिल थे, यह सुझाव दिया कि इस्लाम और अहमदियत की तिजारत का यह एक बहुत ही खास अवसर है, इसलिए अगर हज़रत खुद यहां आ सकें तो यह उचित होगा। मजलिस शूरा में मौजूद दूसरे अहबाब ने भी भारी बहुमत से इस सुझाव की ताईद की।

क्रादियान के दोस्तों से सलाह मांगने के बाद हज़रत मुस्लेह मौऊद ने क्रादियान से बाहर अहबाब जमाअत से भी द्वारा पत्र इस मामले में सलाह मांगी और इस पत्र में सम्मेलन धर्म का वर्णन करते हुए और इससे तिजारती फायदा उठाए जाने के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद ने अहबाब जमाअत को अपने इस पत्र में संबोधित करते हुए फ़रमाया

आप लोगों को शायद मालूम होगा कि विलायत में दो साल से एक

व्यापारिक प्रदर्शनी की तैयारियां हो रही थीं जिसमें अंग्रेज़ी सरकार के सभी क्षेत्रों की हर प्रकार की उत्पाद और उद्योग की चीज़ें रखी जाएंगी। यह प्रदर्शनी अब खुल गई है और इस पैमाने पर है कि अनुमान किया जाता है कि व्यापार की प्रगति को ध्यान में रखते हुए और देशों के आपसी संबंधों को मज़बूत करने के लिए दो करोड़ आदमी के करीब इसे देखने आएंगे। उद्देश्य इन दिनों में दुनिया के हर कोने के शिक्षित लोग इंग्लैंड में इकट्ठा होंगे और जैसे कि सारी दुनिया छोटे पैमाने पर इस जगह इकट्ठा हो जाएगी। चीनी, जापानी, अमेरिकी, रूसी, फ्रांसीसी, जर्मन, तुर्क, अरब, मिस्री, ईरानी, अफगानी, भारतिय और दूसरी छोटी बड़ी जातियों के शिक्षित और समझदार वर्ग के लोग वहां इकट्ठा होंगे और छह महीने तक ऐसा ही हलचल वहां रहेगा।

इस सभा से लाभ उठाकर इंग्लैंड के धार्मिक मज़ाक के लोगों ने प्रस्तावित किया है कि सितंबर के अंत और अक्टूबर की शुरुआत में वहां एक धार्मिक सम्मेलन आयोजित किया जाए। जिसमें हर धर्म के लोग अपने-अपने धर्म की वास्तविकता को खोलकर बयान करें और सारी दुनिया को उनके असली विश्वास और उद्देश्य का ज्ञान हो जाए। इस संघ ने अपने सम्मेलन में भाषण पढ़ने के लिए मुझे भी आमंत्रित किया है और अनुरोध किया है कि मैं स्वयं वहां जाकर अपने सिलसिले के बारे में उन्हें ज्ञान और जानकारी प्रदान करूँ। ऐसे विशाल अवसर से प्रचार का लाभ उठाना तो हमारा फ़र्ज़ है क्योंकि ऐसा अवसर, जब इतनी संख्या में सारी दुनिया के देशों के उच्च वर्ग के लोग इकट्ठा हों और मानो पूरी दुनिया एक ही समय में एकत्र हो जाए, रोज़-रोज़ नहीं मिलता। इस प्रदर्शनी के संबंध में माना जाता है कि सौ साल तक इतनी बड़ी प्रदर्शनी फिर अंग्रेज़ों के लिए करना मुश्किल होगा। इस समय मानो इंग्लैंड में बैठकर हम सारी दुनिया को भगवान का संदेश पहुँचा सकते हैं और करोड़ों लोगों को सिलसिले की वास्तविकता से अवगत कर सकते हैं और दुनिया का कोई कोना ऐसा नहीं रह सकता जो इस माध्यम से सिलसिले से अवगत न हो जाए।

(तारीख-ए-अहमदियत भाग 4 पृष्ठ 424-423)

कादियान के दोस्तों से सलाह-मशविरा करने के बाद हज़ूर की अपनी राय क्या थी, वह भी हज़ूर ने इस पत्र में अहबाब जमाअत के सामने इन शब्दों में रखी। हज़ूर ने लिखा

"इस मशवरा के बाद मेरी राय इस ओर झुक गई थी कि मेरे जाने के बाद उन देशों के मिशनरों को और अधिक मज़बूत करना पड़ेगा क्योंकि आंदोलन करके चुप हो जाना ठीक नहीं है क्योंकि इससे ज़्यादा नुकसान होगा और अगर मज़बूत किया जाए तो रुपए ज़्यादा खर्च करना पड़ेगा। फिर अगर मैं गया तो चूंकि साथ ज़्यादा लोग होंगे इसलिए रुपए ज़्यादा खर्च होंगे और जमाअत पर बोझ पहले ही ज़्यादा है इसलिए मेरा ख्याल है कि अजीज़ मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब और हाफ़िज़ रोशन अली साहब को भेज दिया जाए।"

(तारीख-ए-अहमदियत भाग 4 पृष्ठ 425)

दो-तीन दिन के बाद हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब ने अपने जाने के संबंध में कुछ बहाने पेश किए और इसी दौरान सम्मेलन में शामिल होने के संदर्भ में फिर से लंदन से तार आई और इसी तरह नब्बे फीसदी अहबाब जमाअत ने भी यह राय पेश की कि हज़ूर को स्वयं भाग लेना चाहिए। फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद ने और करीब चालीस दोस्तों ने इस्तिख़ारा भी किए जिससे इलाही इच्छा यही ज्ञात हुई कि हज़ूर को स्वयं ही इस सफ़र के लिए जाना चाहिए।

चूंकि हज़रत मुस्लेह मौऊद ने अपने धार्मिक फ़र्ज़ को प्राथमिकता देते हुए पूरे उत्साह से सफ़र पर जाने का फ़ैसला किया।

विम्बले धर्म सम्मेलन में पढ़े गए हज़रत मुस्लेह मौऊद के लेख के बारे में कुछ महत्वपूर्ण बातें

हज़रत मुस्लेह मौऊद ने 24 मई 1924 ई. को सम्मेलन के लिए "अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम" के शीर्षक से लेख लिखना शुरू किया।

- हज़ूर को कठिन गर्मी और तपिश में सुबह से लेकर आधी रात तक व्यस्त रहना पड़ता था। चूंकि स्वयं कहते हैं

"लेख के लिखने के दिनों में मुझे अक्सर रात के बारह बजे तक और कभी-कभी तो दो बजे तक बैठना पड़ता था। इस तीव्र गर्मी के मौसम में जबकि दिन को काम करना भी मुश्किल होता है रात के समय लैम्प की रोशनी में बारह बजे तक काम करना कठिन कार्य है और मेरे जैसे कमज़ोर स्वास्थ्य के आदमी के लिए तो असंभव मालूम होता है।"

दिन-रात की मेहनतों और अल्लाह तआला की ताईद और मदद से 6 जून 1924 ई. को लेख लिखने का काम पूरा हो गया।

पुनः चेक और अनुवाद तथा इसकी सुधार का कार्य हज़ूर ने श्रीमान चौधरी मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह खान साहब, हज़रत मौलवी शेर अली साहब और साहबजादे मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए. के सुपुर्द कर रखा था।

अंग्रेज़ी मसौदे के टाइप कराने और मुकाबले की ज़िम्मेदारी हज़रत मौलवी अब्दुल रहीम साहब दर्द पर थी।

2 जुलाई 1924 ई. को लेख का अंग्रेज़ी अनुवाद पूरा कर दिया गया। और 3 जुलाई 1924 ई. को इसकी एक प्रति मज़ाहिब कांफ़्रेस के आयोजकों को भिजवा दी गई।

हज़ूर ने यह देख कर कि "अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम" का लेख बहुत लंबा हो गया है, इसके विषयों का सारांश करके एक नया लेख लिखने का फ़ैसला किया।

2 जुलाई 1924 ई. को हज़ूर इस नए लेख की लेखनी में मशगूल हो गए और 9 जुलाई को लगभग ग्यारह बजे रात यह नया लेख जो "सिलसिला अहमदिया" (AHMADIYYA MOVEMENT) के शीर्षक से था, तकीमल को पहुँचा और फिर इसी का सारांश कांफ़्रेस में पढ़ा गया।

(तारीख-ए-अहमदियत भाग 4, पृष्ठ 430-429)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी असहाब के साथ 21 जुलाई 1924 ई. को कादियान से रवाना हुए और 22 अगस्त 1924 ई. को 6 बजे के करीब लंदन के मशहूर विक्टोरिया स्टेशन पहुँचे।

कांफ़्रेस मज़ाहिब के आयोजन की समिति के सदस्यों और कांफ़्रेस में दिए गए व्याख्यानों की विस्तृत रिपोर्ट

कांफ़्रेस की कार्यकारी समिति

समिति के अध्यक्ष

SIR E. DENISON ROSS, C.I.E., PH.D.

समिति के उपाध्यक्ष

SIR THOMAS W. ARNOLD, C.I.E., D.LITT, MR. VICTOR BRANFORD, MR. F.C. CHANNING, PROF. ALICE WERNER, L.L.A., MRS. C. RHYS DAVIDS, D.LITT, REV. W. SUTTON PAGE, B.D., O.B.E., REV. J. TYSSUL DAVIS, REV. A.S. GEDEN, D.D., SIR FRANCIS YOUNGHUSBAND, K.C.S.I., K.C.I.E, PROF. MARGOLIOUTH, D.LITT

मुअज़्ज़िज़ खज़ांची

MR. LEONARD C. SOPER.

मुअज़्ज़िज़ सचिव

MISS M.M. SHARPELS

MR. W. LOFTUS HARE

(RELIGIONS OF THE EMPIRE)

जैसा कि पहले बयान किया जा चुका है कि इस कांफ़्रेस मज़ाहिब में

विभिन्न धर्मों के अनुयायी शामिल थे और इस कांफ्रेंस का असल उद्देश्य यही था कि हर धर्म के लोग अपने-अपने धर्म की हकीकत को खोलकर बयान करें और सारी दुनिया को उनके असली अकीदे और उद्देश्य का इल्म हो जाए। इसलिए इसी मौके पर इस कांफ्रेंस में जो व्याख्यान पढ़े गए उनकी डिटेल क्रारियों के पढ़ने के लिए नीचे दर्ज की जा रही है।

सामान्य पहलू

1 परिचय

सर ई. डेनिसन रॉस द्वारा

2 आधुनिक धार्मिक परामर्श का खाका, विलियम लॉफ्टस हेर द्वारा

3 उद्घाटन भाषण, सर फ्रांसिस यंगहसबंड द्वारा

हिंदूवाद

हिंदूवाद पर होने वाले व्याख्यानों की डिटेल इस तरह से है

1 हिंदू धर्म पर ऐतिहासिक नोट

डॉक्टर ए.एस. गेडन द्वारा

2 पारंपरिक हिंदूवाद (ऑर्थोडॉक्स हिंदूवाद) या सनातन धर्म

पंडित श्याम शंकर (एम.ए.) वाराणसी द्वारा

3 हिंदू फ़लसफ़े का धार्मिक पहलू

पंडित डी.के. लड्डू द्वारा इस्लाम धर्म इस्लाम पर होने

वाले व्याख्यानों की विवरण नीचे दर्ज की जाती है

1 इस्लाम पर एक ऐतिहासिक नोट प्रोफेसर मार्गोलियुथ द्वारा

2 इस्लाम के बुनियादी उसूल, अल्हाज ख्वाजा कमालुद्दीन द्वारा

3 इस्लाम की आत्मा

मुस्तफा खान (लाहौर) द्वारा

4 इस्लाम की शिया शाखा, शेख खादिम द्वारा

5 इस्लाम में अहमदिया आंदोलन (अहमदिया मूवमेंट इन इस्लाम)

हज़रत मिर्जा बशीरुद्दीन महमूद अहमद खलीफ़ा मसीह क्रादियान द्वारा

6 तसव्वुफ पर एक ऐतिहासिक नोट

सर पैट्रिक फगन C.S.I., K.C.I.E द्वारा

7 तसव्वुफ, सूफ़ी हाफ़िज़ रोशन अली साहब द्वारा

बौद्ध धर्म, बौद्ध धर्म पर होने वाले व्याख्यानों की विवरण कुछ इस तरह से है

1 बौद्ध धर्म पर एक ऐतिहासिक नोट, रायस डेविड्स द्वारा

2 सीलोन में बौद्ध धर्म की स्थिति और प्रभाव

डॉक्टर डब्ल्यू ए डी सिल्वा (कोलंबो) द्वारा

3 सीलोन में बौद्ध धर्म का शिक्षा पर प्रभाव

जी पी मल्लालसीकेरा द्वारा

4 महायान बौद्ध धर्म श्री शोशोन मियामोटो (टोक्यो) द्वारा

छोटे भारतीय धर्म

छोटे भारतीय धर्म जैसे सिख धर्म, जैन धर्म आदि पर

होने वाले व्याख्यानों की विवरण नीचे दर्ज है

1 ऐतिहासिक नोट्स, सर पैट्रिक फगन C.S.I., K.C.I.E द्वारा

2 ज़रथुस्त्रवाद पारसियों का धर्म

शम्सुल उलमा दस्तूर कार्दकुबाद अदरबाद नुशीरवान, PH.D., पुणे द्वारा

3 जैन धर्म

राय बहादुर जगमंदर लाल जैन द्वारा, M.A., M.R.A.S., इंदौर

4 सिख धर्म

सरदार खान सिंह (नाभा) द्वारा

चीनी धर्म, चीनी धर्म पर होने वाले व्याख्यानों की विवरण

कुछ इस तरह से है

1 ताओ धर्म पर एक ऐतिहासिक नोट

MR.G.R.S. MEAD, B.A. द्वारा

2 ताओ धर्म, श्री HSÜ TI-SHAN द्वारा

आधुनिक आंदोलन

आधुनिक आंदोलनों पर निम्नलिखित व्याख्यान हुए

1 ऐतिहासिक नोट्स

REV.W.SUTTON PAGE, O.B.E. द्वारा

2 ब्रह्मो समाज, MR.N.C.SEN, O.B.E. द्वारा

3 आर्य समाज, प्रोफेसर एस.एन. (शिकारपुर) द्वारा

4 बहाईत की आंदोलन। बहाई असेंबली की ओर से यह लेख श्री माउंट फोर्ड मोल्स, कनाडा ने पढ़कर सुनाया।

5 बहाईत का जीवन पर प्रभाव, श्री रुही अफ़नान (हैफ़ा) द्वारा

प्राचीन धर्म, प्राचीन धर्मों पर निम्नलिखित व्याख्यान कांफ्रेंस में पढ़े गए

1 प्राचीन धर्म पर एक परिचय introduction नोट

PROF. ALICE WERNER, L.L.A. द्वारा

2 माओरी विश्वासों का कुछ जायज़ा

THE VENERABLE ARCHDEACON WILLIAMS द्वारा

3 पूर्वी अफ़्रीका के कुछ जनजातियों के विश्वास

श्री रिचर्ड सेंट बारब बेककर (लेट ऑफ़ केन्या कॉलोनी) द्वारा

4 बंटू धार्मिक सिद्धांत

श्री अल्बर्ट टोका (पीटर्सबर्ग, साउथ अफ़्रीका) द्वारा

5 पूर्वी अफ़्रीका के नीग्रो धर्म के कुछ पहलू

MR.L.W.G.MALCOMM, F.R.S.E (कैप्टन ऑफ़

नाइजीरिया रेजिमेंट) द्वारा

धर्म की मनोविज्ञान और समाजशास्त्र

1 परिचय introduction नोट विलियम लॉफ्टस हेर द्वारा

2 इंसान और प्रकृति सर फ्रांसिस यंगहसबंड द्वारा

3 प्राकृतिक विशेषज्ञ का धर्म के बारे में दृष्टिकोण

प्रोफेसर जे. आर्थर थॉमसन, L.L.D. द्वारा

4 प्राचीन पेशे उनके उसूल और लालच

श्री विक्टर ब्रानफोर्ड, M.A. द्वारा

5 पवित्र रास्ते और पवित्र स्थान

PROF. H.J. FLEURE, D.SC. द्वारा

6 पवित्र शहर का अवधारणा

MRS. RACHEL ANNAND TYLOR द्वारा

7 धर्म और संस्कृति की जीवन श्री क्रिस्टोफ़र डॉसन द्वारा

8 आदर्श मानव श्री विलियम लॉफ्टस हेर द्वारा

9 जीवन के नक्शे पर धर्म प्रोफेसर पैट्रिक गेडिस द्वारा

समापन समारोह

1 सामान्य जायज़ा श्री विक्टर ब्रानफोर्ड, M.A. द्वारा

2 सारांश, REV. TYSSUL DAVIS, B.A. द्वारा

(RELIGIONS OF THE EMPIRE)

क्रारिन, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है कि वेम्बले धार्मिक कांफ्रेंस में इस्लाम की प्रगति और सत्यता को साबित करने के लिए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो विवादास्पद लेख तैयार किया वह

"AHMADIYYA OR TRUE ISLAM"

(अहमदिया अर्थात वास्तविक इस्लाम) के नाम से दुनिया भर में प्रसिद्ध है। इस लेख में इस्लाम की बुनियादी शिक्षाएँ, उनकी बुद्धिमत्ता और दर्शन को बड़े दिलचस्प अंदाज और तर्कसंगत तरीके से प्रस्तुत किया गया है। इस लेख की जो विस्तार और विवरण की आवश्यकता थी, उसी कारण इसकी मोटाई इतनी हो गई कि कांफ्रेंस के निर्धारित समय में इसे पढ़ना

संभव नहीं था। इसलिए, हज़रत ने एक संक्षिप्त लेख तैयार किया, जिसका शीर्षक 'अहमदिया मूवमेंट' था।

पाठकों! 23 सितंबर 1924 ई. का दिन वह ऐतिहासिक दिन था जब हज़रत मुस्लेह मौऊद का लेख 'कांफ्रेंस मज़ाहिब' में पढ़ा गया। इस बेजोड़ लेख की बदौलत सिलसिला अहमदिया की प्रसिद्धि को चार चाँद लग गए और यूरोप में इस्लाम की आध्यात्मिक विजय की नींव रखी गई।

हज़रत मुस्लेह मौऊद के लेख का समय शाम 5 बजे रखा गया और इस दिन के अनुसार यह तीसरा लेख था। लोग इससे दो घंटे पहले से ही इस्लाम के विषय में लेख सुन रहे थे। लंदन के लोगों के बारे में यह आशंका थी कि ये लोग अधिक समय तक टक के बैठने के आदी नहीं हैं, पता नहीं हज़रत के लेख तक श्रोताओं की उपस्थिति कितनी होगी। फिर भी उपस्थित लोग आखिरी समय तक बैठे रहे। बल्कि खासकर हज़रत के लेख को सुनने के लिए लेख के शुरू होने के समय और भी कई लोग आ गए। यहाँ तक कि हॉल पूरी तरह भर गया।

सख्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद के इस लेख को सुनने के लिए लोगों में कितनी रुचि थी, इसका अंदाजा हज़रत भाई अब्दुरहमान क्रादियानी के उन शब्दों से हो सकता है, जो उस समय इस कांफ्रेंस में मौजूद थे और उन्होंने यह सब कुछ अपनी आंखों से देखा। हज़रत भाई अब्दुरहमान क्रादियानी लिखते हैं

"हज़रत के व्याख्यान से पहले आधे घंटे का ब्रेक लोगों को चाय के लिए दिया गया। लेकिन मैं देखता था कि बहुत सी महिलाएं और पुरुष आगे की पंक्तियों में जगह लेने के लिए चाय शायद पी नहीं सके। और जल्दी ही दौड़ते हुए चले आए। यहाँ लोग आमतौर पर खुला बैठने के आदी हैं। एक-आध कुर्सी हर व्यक्ति अपने आस-पास टोपी या हैडबैग आदि के लिए खाली रखता है। लेकिन इस व्याख्यान में ये बातें नहीं थीं। इस शौक और मोहब्बत से लोग आगे जगह लेने के लिए दौड़कर आते थे जिस तरह हमारे यहाँ मस्जिद में सुबह की नमाज के जलसे के दिनों में लोग जद्दोजहद करते हैं या हज़रत साहब की तकरीर के दिन जलसा-गाह में जगह लेते हैं।"

(अल्फज़ल, तारीख 23 अक्टूबर 1924, पन्ना कॉलम 3)

इस लेख को वेम्बले धार्मिक सम्मेलन में हज़रत के इरशाद पर चौधरी मुहम्मद ज़फ़रुल्ला खान साहब ने पढ़ा। हज़रत अपने सभी रफकाओं समेत इस सम्मेलन में मौजूद थे। यहाँ इस बात का वर्णन भी दिलचस्पी से खाली नहीं होगा कि जब हज़रत चौधरी साहब लेख पढ़ने के लिए उठने लगे तो हज़रत ने उनके कान में फ़रमाया "घबराना नहीं, मैं दुआ करूंगा"। हज़रत चौधरी साहब जैसे अंग्रेज़ी भाषा पर अधिकार रखने वाले माहिर व्याख्याता के लिए ये शब्द और ज़्यादा खुदाई मदद और यकीन का सबब बने और ये तकरीर सभी श्रोताओं ने ध्यानपूर्वक सुनी।

सख्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद के इस लेख पर बुद्धिजीवियों और अखबारों के प्रतिक्रियाएँ नीचे दर्ज की जाती हैं

सबसे पहले विनीत हज़रत मुस्लेह मौऊद के शब्दों में इस लेख की सफलता के बारे में कुछ वर्णन करना चाहता है।

सम्मेलन में धर्मों में सफल व्याख्यान और इसके असर के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद क्रादियान के इफ्तिदा को अपने एक तार में जो आपने 25 सितंबर 1924 ई. को लिखी, फ़रमाते हैं

"भाइयों! अस्सलाम अलेकुम। जैसा कि आप लोगों को तारों से पता चल चुका होगा। खुदा तआला के फ़ज़ल से व्याख्यान बहुत सफल रहा और जितने आदमी हमारे व्याख्यान में थे किसी और व्याख्यान में नहीं थे। जगह बाकी नहीं रही थी और लोगों ने निहायत गौर से सुना और बाद में सर थियोडोर मारिसन और दूसरे लोगों ने मुबारकबाद दी और आधे घंटे तक विभिन्न दोस्तों को घेरे खड़े रहे और बातें करते रहे।"

(अल्फज़ल, 16 अक्टूबर 1924, पन्ना 1 कॉलम 2)

लेख के अंत पर बैठक के अध्यक्ष मिस्टर थियोडोर मारिसन ने अपनी टिप्पणी में कहा

"मुझे ज़्यादा कहने की ज़रूरत नहीं, लेख की खूबी और नफासत का अंदाज़ खुद लेख ने करवा लिया है। मैं केवल अपनी तरफ से और उपस्थित जनसभा की तरफ से लेख की खूबसूरती, खूबसूरत विचार और उच्च श्रेणी के तरीके इत्तिदाल के लिए हज़रत खलीफ़तुल् मसीह का शुक्रिया अदा करता हूँ। उपस्थित जनों के चेहरे ज़बान-हाल से मेरी राय के साथ मुत्तिफ़क हैं और मुझे यकीन है कि मैं उनकी तरफ से शुक्रिया अदा करने में हक पर हूँ और उनकी अनुवाद कर रहा हूँ।"

(सवानेह फ़ज़ल-ए- उमर, भाग 3, पन्ना 79)

हज़रत भाई अब्दुरहमान साहब क्रादियानी जो हज़रत मुस्लेह मौऊद के साथ इस यात्रा में थे और व्याख्यान के समय इस सम्मेलन में मौजूद थे। आपने हज़रत के लेख की सफलता और लेख के बेजोड़ असर पर लोगों की कुछ प्रतिक्रियाएँ वर्णन की हैं जो कि अल्फज़ल, तारीख 23 अक्टूबर 1924 ई. में प्रकाशित हुई हैं, पाठकों के देखने के लिए नीचे दर्ज की जाती हैं।

हज़रत भाई अब्दुरहमान साहब क्रादियान लिखते हैं

एक व्यक्ति हज़रत के पास उपस्थित हुआ और उसने अर्ज़ किया कि मैंने भारत में तीस साल काम किया है और मुसलमानों के हालात और तर्कों का अध्ययन किया है क्योंकि मैं एक मिशनरी के तौर पर भारत में रहा हूँ। लेकिन जिस खूबी, सफाई और नफासत से आपने आज के लेख को पेश किया है, मैंने इससे पहले कभी किसी जगह नहीं सुना। मुझे इस लेख को सुनकर विचारों, व्यवस्था और तर्कों के लिहाज से बहुत गहरा असर हुआ है। मैं आपको मुबारकबाद देता हूँ। भाषा भी अच्छी थी और पढ़ने में भी निहायत खूबसूरती थी, हर व्यक्ति बखूबी सुन सकता था और शब्दों और अर्थों का अनुसरण कर सकता था।

एक और व्यक्ति आए और उन्होंने कहा कि यह प्यारी भाषा थी, यह तो अठारहवीं सदी की भाषा थी। यह आजकल की बाजारू भाषा नहीं थी। लेख भी अनोखा और आकर्षक था।

एक और व्यक्ति आए और उन्होंने कहा कि मैं इस लेख को सुनने के लिए फ्रांस से आया हूँ। मैं ईसाई धर्म को इस्लाम पर प्राथमिकता देता था और इस्लाम पर बौद्ध धर्म को। अब जबकि मैंने आपका लेख भी सुन लिया है और बौद्ध धर्म को भी सुना है, मैं यह स्वीकार करता हूँ कि वास्तव में इस्लाम ही सबसे उच्च धर्म है। जिस खूबी और खुशी से आपने इस्लाम को पेश किया, उसका कोई दूसरा धर्म मुकाबला नहीं कर सकता। मेरे दिल पर अब इसका गहरा असर है।

एक बुजुर्ग लेकिन मज़बूत कद-काठी और डील-डोल का अंग्रेज़ विदेशी वस्त्र में चौधरी साहब के पास आया और कहा कि मैं आपको मुबारकबाद देता हूँ। मैं बुजुर्ग हूँ, थोड़ा बहरा भी हूँ और सबसे पीछे बैठा था। लेकिन आपके लेख का एक-एक शब्द मुझे सुनाई दिया है और समझ में आया है।

चौधरी साहब ने कहा, "मैं ज़बान का आदमी नहीं हूँ, मुझे डर था कि शायद मेरा लहजा न समझ सकेगा।" अंग्रेज़ ने कहा, "नहीं, हम सब लोग भाई हैं, शर्म कैसी। आपने निहायत खूबी से लेख पढ़ा है और निहायत अच्छी तरह से हर एक की समझ में आया है।"

एक अंग्रेज़ ने कहा, "WELL PUT (खूब बयान किया गया) WELL ARRANGED (खूब तरतीब दिया) WELL DEALT WITH (खूब बहस की गई)"

मिस्टर लाफ्ट्स हियर, जो इस सम्मेलन के सचिव हैं, उन्होंने चौधरी साहब से कहा, "YOUR LECTURE WAS THE BEST HEARD

SO FAR (आपका व्याख्यान अब तक सुने गए व्याख्यानों में से सबसे अच्छा था।)"

मिसेज शार्पल्स, जो इस सम्मेलन की सचिव हैं, ने चौधरी साहब से कहा, "क्या अनुवाद भी आपका किया हुआ है?" उत्तर हां में पाकर कहा, "मैं आपको मुबारकबाद देती हूँ कि लोग आपके बड़े मोताशिर हैं। चाहे भाषा के लिहाज से हो या पढ़ने के लिहाज से।" फिर उसी महिला ने कहा कि लोग, महिलाएं और पुरुष मेरे पास आते हैं और बहुत तारीफ करते हैं। चूंकि उनमें से कुछ ने कहा कि "HE SEEMS TO BE LUTHER OF THE AGE (यह इस ज़माने का लूथर (एक सुधारक) मालूम होता है।)" कुछ ने मुझे कहा "THERE IS A FIRE IN HIM (इसमें आग है।)"

हज़रत के बारे में ये शब्द कहे गए

फिर इसी मिसेज शार्पल्स ने कहा कि एक अंग्रेज़ मेरे पास आया और उसने मुझसे कहा कि चाय पर तो आपने मुझे नहीं बुलाया, लेकिन मुझे अनुमति दें कि मैं अंदर जाऊं। मेरी असल मंशा उस व्यक्ति को देखना है जो भारत से इस्लाम को पेश करने के लिए आया है और अहमदियों का सरदार है। वह व्यक्ति हज़रत से मिला। बातें कीं और फिर मौलवी मुबारक अली साहब की तरफ मुखातिब होकर कहा कि मैंने बौद्ध धर्म के परचे भी सुने हैं और दूसरे परचे भी।

"IT WAS FOR THE BEST OF ALL PAPERS

(यह सभी परचों से बेहतर था)"

एक जर्मन व्यक्ति जो यहाँ प्रोफेसर हैं, उन्होंने जलसे से लौटते समय सड़क पर चलते हुए आगे बढ़कर हज़रत के समक्ष मुबारकबाद दी और कहा कि मेरे पास कुछ बड़े बड़े अंग्रेज़ बैठे थे। मैंने देखा कि कुछ ज़ानुओं पर हाथ मारते थे और कहते थे,

"RARE IDEAS ONE CAN NOT HEAR SUCH IDEAS EVERYDAY

(यह निहायत कीमती विचार हैं, ऐसे विचार हर रोज़ सुनने में नहीं आते।)"

वही जर्मन प्रोफेसर यह भी बताते हैं कि कुछ जगह लोग बेइस्त्रियार बोल उठते थे कि

"WHAT A BEAUTIFUL AND TRUE PRINCIPLES

(क्या ही खूबसूरत और सच्चे सिद्धांत हैं।)"

और अपनी राय इन शब्दों में व्यक्त करते थे कि यह अवसर अहमदियों के लिए एक टर्निंग पॉइंट (उन्नति का स्थान) है और यह ऐसी सफलता है कि अगर आप लोग हज़ारों पाउंड भी खर्च कर देते तो ऐसी प्रसिद्धि और ऐसी सफलता कभी नहीं मिलती, जैसी कि इस एक व्याख्यान के द्वारा हुई है।

मिस्टर लेन भारत कार्यालय में एक बड़े अधिकारी हैं, उन्होंने व्याख्यान सुना था लेकिन उनकी पत्नी उस दिन नहीं आई थीं। उन्होंने घर जाकर उल्लेख किया। उनकी पत्नी दूसरे दिन आई और हज़रत के खिदाम से मिली और कहा कि मैं कल नहीं आई थी, मेरे पति ने घर जाकर आपको के व्याख्यान की सफलता और स्वीकार्यता का उल्लेख किया और मुझे बताया कि खलीफ़तुल् मसीह का परचा सबसे उच्च और बेहतरीन परचा था।

मिस गार्नर एक नास्तिक और खुदा की नकारने वाली महिला हैं, उन्होंने कहा,

"IT WAS CHARMFUL (यह दिलकश था)"

"अच्छा लेख था" "निहायत उच्च विचार थे" "नई सच्चाई" आदि-आदि शब्द तो इस कदर लोगों ने कहे कि उनका कोई हद-हिसाब नहीं।

बहाई धर्म की एक महिला ने व्याख्यान सुना और फिर हमारे साथ-साथ घर के करीब तक चली आई। वह कहती थी कि मैं बहाई विचार रखती थी लेकिन अब आज का व्याख्यान सुनकर मेरे विचार बदल गए हैं। मैं चाहती

हूँ कि आपके और अधिक व्याख्यान सुनूँ। कृपया मुझे बताएं कि कब और कहाँ-कहाँ व्याख्यान होंगे तो मैं ज़रूर आऊँगी।

एक ईसाई महिला अपनी बेटी के साथ बहुत प्रेम से हज़रत के पीछे-पीछे चली आई और निवेदन किया कि मेरे घर पर आप गुरुवार को चाय के लिए आएँ। हज़रत ने व्यस्तता का बहाना किया लेकिन उसने बड़े आग्रह और प्रेम से अनुरोध को मंजूर करवा लिया और कहा कि आप किसी भी समय आएँ लेकिन ज़रूर आएँ।

एक व्यक्ति ने यह भी कहा कि इतना प्यारा लेख था कि यह देशभक्ति से भी अधिक प्यारा था।

(अल्फज़ल, तारीख 23 अक्टूबर 1924 ई.)

एक व्यक्ति ने कहा कि तीन साल पहले मुझे एक स्वप्न दिखाया गया था कि हज़रत मसीह तेरह ही आरियों के साथ यहाँ तशरीफ़ लाए हैं। और अब मैं देखता हूँ कि यह स्वप्न पूरा हो गया है।

(अल्फज़ल, 30 सितंबर 1924 ई.)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क्रादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में कुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लुहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुत्बात जुमा और खिताबात, अध्याम्पूर्ण संदेश, ख़ुत्बा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इल्म के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्ट्स प्रकाशित होती हैं। इनका अध्ययन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर कर्म करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की शिक्षा-और-तर्बियत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी शिक्षा-ओ-तर्बियत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक्राज़ा करता है कि इसका सम्मान किया जाए। इसलिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँगी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(संस्थान)

★ ★ ★

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY

थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क्रादियान

सभी प्रकार के शारीरिक टेस्ट (खून, मल, बलगम इत्यादि) कंप्यूटराइज्ड तरीके से उपलब्ध है।

हमारे सहभागी :- SRI (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.



चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क्रादियान, लुकमान अहमद बाजवा और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :- +91-9646561639, +91-8557901648

हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) के पहले दौर यूरोप 1924 ई. के बरकतें और समारात (आरिफ़ अहमद रब्बानी, मुबल्लिग़ा सिल्सिला नशरों ईशात कादियान)

सय्यदना हज़रत खलीफतुल मसीह द्वितीय रज़ियल्लाहु अन्हु ने खिलाफ़त के पद पर चयनित होते ही सबसे ज़्यादा इसी नेक उद्देश्य की तरफ ध्यान दिया और जमाअत में तब्लीग और इशात की एक नई आत्मा फूँकी। इशात-ए-इस्लाम के लिए दुआएं, जलसे, मुनाज़रे, मुबाहिसे, तकरीरें, चैलेंज, मुकाबले और दौरे, मुलाकाते, हर तरह से ये मुहिम उनके खिलाफ़त के दौर में सफलता के साथ जारी थी। खुदा तआला की सहायता और समर्थन के अजीब करिश्मे और जलवे क्रदम-क्रदम पर नज़र आ रहे थे। इसी तस्सलुल में खुदा तआला ने महज़ अपने फज़ल व तस्सरुफ़ से मशहूर वेंबले कांफ्रेंस के आयोजकों के दिलों में डाल दिया कि वे हज़रत की खिदमत में दरखास्त करें कि हज़रत इस कांफ्रेंस में स्वयं शामिल हो कर खिताब फ़रमाएं। यह एक खुदाई तस्सरुफ़ और इंतेज़ाम था कि आप -ए-इस्लाम की मुहिम को विशव्यापी सतर पर फैला कर ममूर-ए-वक्त के साथ नाज़िल होने वाली बरकतें और अन्वार को वसीय से वसीयतर कर सकें। इसलिए 1924 ई. का साल सिलसिला अहमदिया की तारीख में तब्लीगी नुक्ता नज़र से एक निहायत ही बरकत और इंकैलाब अंगेज साल कहलाने का मुस्तहक है क्योंकि इस में हज़रत खलीफतुल मसीह द्वितीय रज़ियल्लाहु अन्हु ने यूरोप का पहला यात्रा फ़रमाया। जिस के नतीजे में जमाअत अहमदिया एक नए और बरकत भरे दौर में दाखिल हो गई। हज़रत खलीफतुल मसीह द्वितीय ने 14 मई 1924 ई. को इस दौरे की पृष्ठभूमि, और उद्देश्य और बरकतें बयान करते हुए, अहबाब जमाअत के नाम अपने पत्र में फ़रमाया

"आप लोगों को शायद मालूम होगा कि यूरोप में दो साल से एक व्यापारिक नुमाइश की तैयारियां हो रही थीं जिसमें इंग्लिश हुकूमत के सभी इलाकों की हर किस्म की पैदावार और उद्योग की चीज़ें रखी जाएंगी। यह नुमाइश अब खुल गई है और ऐसे बड़े पैमाने पर है कि अंदाज़ा किया जाता है कि व्यापार की तरफ़ी को मद्देनज़र रखते हुए और देशों के आपसी रिश्तों को मज़बूत करने के लिए दो करोड़ आदमी के करीब इसे देखने आएंगे। उद्देश्य इन दिनों में दुनिया के हर कोने के तालीम याफ़ता आदमी इंग्लैंड में जमा होंगे और गोया सभी दुनिया छोटे पैमाने पर इस जगह जमा हो जाएगी। चीनी, जापानी, अमरीकी, रूसी, फ्रांसीसी, जर्मन, तुर्क, अरब, मिस्री, ईरानी, अफगानी, भारतिय और दूसरी छोटी बड़ी कौमों के तालीम याफ़ता और समझदार वर्ग के लोग वहां जमा होंगे और छह महीने तक ऐसा ही जमघटा वहां रहेगा।

इस इजतेहाद से फायदा उठाकर इंग्लैंड के मजहबी स्वभाव के लोगों ने तजवीज की है कि सितंबर के आखिर और अक्टूबर की शुरुआत में वहां एक मजहबी जलसा किया जाए। जिसमें हर मजहब के लोग अपने अपने मजहब की हकीकत को खोलकर बयान करें और सारी दुनिया को उनके असल अकीदा और उद्देश्य का इल्म हो जाए। इस एंजुमन ने अपने जलसे में तकरीर पढ़ने के लिए मुझे भी दावत दी है और दरखास्त की है कि मैं खुद वहां जाकर अपने सिलसिले के बारे में उन्हें इल्म और वाकिफियत बहम पहुँचाऊं। ऐसे अद्भूत मौके से तब्लीग का फायदा उठाना तो हमारा कर्तव्य है क्यों कि ऐसा अवसर कि इस कसरत से सारी दुनिया के देशों के ऊँचे वर्ग के लोग जमा हों और गोया सारी दुनिया एक ही वक्त में इकट्ठी हो जाए, रोज़-ब-रोज़ नहीं मिलता। इस नुमाइश की निस्वत ख्याल किया जाता है कि सौ साल तक ऐसी बड़ी नुमाइश फिर इंग्लैंड के लिए करना मुश्किल होगी। इस वक्त गोया इंग्लैंड में बैठकर हम सारी दुनिया को खुदा का पैगाम पहुँच सकते हैं और करोड़ों आदमी को सिलसिले की हकीकत से

वाकिफ कर सकते हैं और दुनिया का कोई कोना ऐसा नहीं रह सकता जो इस ज़रिया से सिलसिले से वाकिफ न हो जाए।"

(तारीख-ए-अहमदियत भाग 4, पृष्ठ 424, 423)

हज़र ने यूरोप की यात्रा के ताल्लुक से अहबाब जमाअत से मशवरा किया और इस्तिखारा भी करवाए और मशियत इलाही के तहत आपने यह बरकत भरा यात्रा इस्तिखार फ़रमाया।

(तारीख-ए-अहमदियत भाग 4, पृष्ठ 427)

हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी अय्यदहुल्लाहु तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तहरीरों की ओर और अधिक तवज्जो फ़रमाई, तो आप पर यह हकीकत पूरी तरह से वाज़ेह हो गई कि कुरआन-ए-मजीद में जुलकरनैन (मसीह मौऊद) या उसके नायब के यूरोप की यात्रा और हदीस शरीफ में दमिश्क की यात्रा की वाज़ेह भविष्यवाणियां मौजूद हैं। जुलकरनैन की यात्रा से जुड़े वाक्ये पर और गौर करते हुए हज़र ने मालूम किया कि यह यात्रा (बुनियादी उद्देश्य के एतबार से) तब्लीग के लिए नहीं, बल्कि पश्चिमी मुल्कों में इस्लामी इंकैलाब की तब्लीगी स्कीम तैयार करने के लिए की जाएगी। इसी सिलसिले में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह स्वप्न भी आपके सामने आया कि "मैंने देखा कि मैं शहर लंदन में एक मिम्बर पर खड़ा हूँ और अंग्रेज़ी जुबान में एक बेहद दलीली बयान से इस्लाम की सच्चाई ज़ाहिर कर रहा हूँ। इसके बाद मैंने बहुत से परिंदे पकड़े जो छोटे-छोटे दरख्तों पर बैठे हुए थे और उनके रंग सफ़ेद थे।"

(तारीख-ए-अहमदियत, भाग 3, पृष्ठ 427)

इसके अतिरिक्त खुद हज़र को एक अरसे पहले स्वप्न में यूरोप की यात्रा का मंज़र दिखाया जा चुका था। चूंकि एक स्वप्न में आपने देखा, आप लंदन में हैं और एक जलसा में शामिल हैं। मिस्टर लॉयड जॉर्ज (पूर्व ब्रिटिश वज़ीर-ए-आज़म) इस जलसा में तकरीर कर रहे हैं कि अचानक उनकी हालत बदल गई और उन्होंने खौफ़ज़दा होकर कहा कि मुझे अभी खबर आई है कि "मिर्ज़ा महमूद, इमाम जमाअत अहमदिया की फ़ौजे ईसाई लश्कर को कुचलते हुए आगे बढ़ रही हैं और ईसाई लश्कर शिकस्त खा रहा है।"

दूसरी स्वप्न में (जो कांफ्रेंस की तहरीक से दो-तीन महीने पहले की थी) आपने देखा कि "मैं इंग्लिस्तान के साहिल-ए-समुंदर पर खड़ा हूँ जैसे कि कोई शख्स ताज़ा होता है और मेरा लिबास जंगी है, मैं एक जनरल की हैसियत में हूँ... इस वक्त मैं यह ख्याल करता हूँ कि कोई जंग हुई है और इसमें मुझे फतेह हुई है और मैं इसके बाद मैदान को एक मुतदब्बिर जनरल की तरह इस नज़र से देख रहा हूँ कि अब मुझे इस फतेह से ज़्यादा से ज़्यादा फायदा कैसे हासिल करना चाहिए... इतने में एक आवाज़ आई विलियम द काँकरर (William the conqueror) अर्थात विलियम (अवलुलअज़म) फ़ातेह।

इन उमूर पर गौर-ओ-फ़िक्र और नियमित दुआओं और इस्तखारों के बाद हज़र ने वेंबली कांफ्रेंस की दाअवत को एक इलाही तहरीक समझा और बावजूद इसके कि इतने लंबे यात्रा पर जाने के रास्ते में आपके लिए ज़ाती तौर पर बहुत सी मुश्किलात हायल थीं और इस बोझ को उठाना आपके लिए बेहद मुश्किल था, हज़र ने अपने दीनी कर्तव्यों को मुकद्दम रखते हुए पूरे इनशिराह-ए-सदर से यूरोप के यात्रा पर जाने का फैसला फ़रमा लिया। और रवाना होने की तारीख 12 जुलाई 1924 ई. तय फ़रमा दी।

हज़र ने 24 जून 1924 ई. को अपने फैसले की इत्तिला देते हुए ऐलान फ़रमाया कि

"हमारी जमाअत का काम सारी दुनिया में तब्लीग-ए-इस्लाम करना है और चूंकि सारी दुनिया को इस्लाम के हलके में लाना हमारा फर्ज़ है, इसलिए यह भी ज़रूरी है कि इसके संबंध में हम एक मुकम्मल निज़ाम तजवीज़ करें... इस निज़ाम के निर्धारित करने के लिए ज़रूरी है कि खलीफ़ा पश्चिमी मुल्कों की हालत को वहां जाकर देखें... तो पश्चिमी मुल्कों में तब्लीग के काम को अगर हमने जारी रखना है और जो रुपया इस पर खर्च होता है उसकी अल्लाह तआला के आगे जवाबदेही होनी है, तो ज़रूरी है कि खुद खलीफ़ा वक़्त उन इलाकों में जाकर उनकी मुश्किलात को देखें और वहां के हर तबके के लोगों से मशवरा करके एक स्कीम तजवीज़ करें... तो इन ज़रूरतों को मद्देनज़र रखकर मैंने फैसला किया है कि धर्मी कांफ़्रेस की तहरीक को एक खुदा की तहरीक समझकर इस वक़्त बावजूद मुश्किलात के इस यात्रा को इख्तियार करूं। धार्मिक कांफ़्रेस में शिरकत की उद्देश्य से नहीं, बल्कि पश्चिमी मुल्कों की तब्लीग के लिए एक मुस्तकिल स्कीम तजवीज़ करने और वहां के तफ़सीली हालात से वाक़िफ़ होने के लिए, क्योंकि वे मुल्क ही इस्लाम के रास्ते में एक दीवार हैं, जिस दीवार का तोड़ना हमारा मुक़द्दम फर्ज़ है।"

(तारीख-ए-अहमदियत, भाग 4, पृष्ठ 428, 427)

इस दौर के नतीजे में हासिल होने वाली बड़ी बड़ी बरकतों और समरतों में से चंद एक का संक्षिप्त वर्णन नीचे दिया गया है।

1. वेंबली कांफ़्रेस के लिए लेख "अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम" की रचना

हुज़ूर ने इस कांफ़्रेस के लिए "अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम" शीर्षक से लेख लिखना शुरू किया, जो हुज़ूर की रात-दिन की मेहनत और जद्दोज़हद के बाद केवल रूहुल्-कुद्दुस की ताईद से पूरा हुआ। लेकिन चूंकि लेख काफी लंबा हो गया था, इसलिए हुज़ूर ने यह फैसला किया कि इस लेख का सारांश बनाकर एक नया लेख लिखा जाए। इस प्रकार, 9 जुलाई 1924 ई. को यह नया लेख, जो "सिलसिला अहमदिया" (Ahmadiyya Movement) के शीर्षक से था, पूरा हुआ। इसके बाद, इसी का सारांश हुज़ूर के हुक्म पर हज़रत चौधरी मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह खान साहिब ने 23 सितंबर 1924 ई. को हुज़ूर की तरफ से इस कांफ़्रेस में पढ़ा। हुज़ूर अपने सभी साथियों के साथ इसी सभा में मौजूद थे। यह लेख बेहद दिलचस्पी से सुना गया और अन्य सभी लेखों से अधिक पसंद किया गया। जैसा कि उल्लेख किया गया है, इस कांफ़्रेस में सभी धर्मों के प्रतिनिधि शामिल थे जैसे कि ईसाई, यहूदी, बौद्ध, हिंदू, सिख और गैर-अहमदी मुस्लिम। लेकिन हज़रत खलीफ़ातुल मसीह का लेख सबसे अलग रहा, और इस बात को खुले तौर पर स्वीकार किया गया कि कांफ़्रेस की सफलता में सबसे बड़ा योगदान हज़रत खलीफ़ातुल मसीह और आपकी जमाअत का है।

(तमहीद रिपोर्ट कांफ़्रेस मज़ाहिब, प्रकाशित लंदन, 1925, हवाला सिलसिला अहमदिया, भाग 4, पृष्ठ 369)

"अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम" हालांकि कुछ ही दिनों में लिखी गई, लेकिन इसमें हुज़ूर ने अल्लाह की मदद से अहमदियत के नज़रिये से इस्लाम की आकर्षक और व्यापक तस्वीर प्रस्तुत की और इस्लाम के बारे में पश्चिमी दुनिया के सामने एक संपूर्ण खाका खींच दिया। इसमें अल्लाह तआला से संबंध के बारे में इस्लामी नज़रिये पर विस्तार से रोशनी डालते हुए बताया कि केवल इस्लाम ही वह धर्म है जिसके जरिए से आलिम खुदा की पहचान प्राप्त की जा सकती है और केवल इस धर्म के माध्यम से इंसान अल्लाह तआला से संबंध स्थापित कर सकता है। इसके बाद हुज़ूर ने इस्लाम के नैतिक व्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था, और राज्य व्यवस्था पर प्रकाश डालते हुए यह महत्वपूर्ण रहस्योद्घाटन किया कि कुरआन-ए-मजीद ने आज से चौदह सौ साल पहले, जब लीग ऑफ नेशंस का कोई विचार भी नहीं था, एक इस्लामी अंतरराष्ट्रीय संघ का खाका पेश कर दिया था। जब

तक इस आधार पर लीग का गठन नहीं होगा, दुनिया में कभी शांति स्थापित नहीं हो सकती। हुज़ूर की यह भविष्यवाणी आज तक शब्दशः पूरी होती आ रही है और इस पर कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है।

(तारीख-ए-अहमदियत, भाग 4, पृष्ठ 430-429)

विस्तृत मूल लेख, जिसे आपने क्रादियान में तैयार किया था, "अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम" के नाम से पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुका है और यह एक ऐसी अनमोल रचना है जिसकी कीमत का अंदाज़ा केवल पढ़कर ही लगाया जा सकता है। इसमें अहमदी नज़रिये से इस्लाम की इतनी आकर्षक और अनूठी तस्वीर खींची गई है कि कोई गैर-मुस्लिम इसे पढ़कर इस्लाम की अच्छाइयों को माने बिना नहीं रह सकता। निश्चित रूप से यह किताब सिलसिला अहमदिया के साहित्य में एक अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान रखती है और इस्लाम और अहमदियत के प्रचार के लिए अत्यधिक उपयोगी है।

इस लेख के तुरंत प्रभाव और बरकतों का वर्णन करते हुए हज़रत भाई अब्दुर्रहमान क्रादियानी रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया

"हुज़ूर के लेख के प्रति दिलचस्पी का सिलसिला इतना व्यापक हो गया है और अल्लाह के फज़ल ने लोगों के दिलों पर ऐसा असर डाला है कि मैं इसकी रिपोर्ट संक्षिप्त रूप में भी पेश नहीं कर सकता। जहां हज़रत अक़दस जाते हैं, लोग आसपास इकट्ठा हो जाते हैं और तारीफ-ओ-तौसीफ के पुल बांध देते हैं। यहां तक कि अब बहुत से लोग हमारा साहित्य खरीदकर दिन-रात अध्ययन करने लगे हैं और फिर हाज़िर होते हैं। कल जब हज़रत अक़दस हाफिज़ साहिब के लेक्चर के लिए हॉल में तशरीफ़ ले गए, तो लेक्चर के बाद वेल्स का एक प्रोफेसर हुज़ूर की खिदमत में बहुत अदब से आगे बढ़ा। उसने मुशफा किया लेकिन हालत यह थी कि मुहब्बत और रौब से उसके हाथ कांप रहे थे और उसके मुंह से शब्द नहीं निकल पा रहे थे। बड़ी कोशिश और मेहनत से उसने होश संभाल कर बातें कीं और बताया कि मैं परसों आपकी किताब "अहमदियत" लेकर गया था। रात में भी और दिन में भी मैंने इसे पढ़ा। मैंने इसे बेहद अनूठे और अद्भुत विचारों का संग्रह और तर्कपूर्ण बयान पाया। मैंने इससे पहले अपनी उम्र में किसी धर्म के बारे में ऐसा साहित्य नहीं देखा। इत्यादि। उसने देर तक श्रद्धा और प्रेम से बातें कीं और अपने एक साथी को भी हज़रत के पास पेश किया। उसे हालात बताए और मानो हमारा एक दूत बनकर उसे प्रचार दिया और उससे यह वादा लिया कि वह भी सिलसिले की किताबें पढ़ेगा... उद्देश्य अल्लाह के फज़ल ने ऐसी परिस्थितियां पैदा कर दी हैं कि हुज़ूर का इस देश में आना अत्यंत ही लाभकारी और बरकत वाला साबित हो रहा है।

डर था और सही था कि इस देश में अभी तक हमारे सिलसिले की कोई प्रतिष्ठा और विशिष्टता स्थापित नहीं हुई। हुज़ूर का यहां तशरीफ़ लाना शायद समय से पहले हो, लेकिन अल्लाह ने वह सब कुछ दिखा दिया जो "स्वाब में भी नहीं देखा जा सकता था।" प्रसिद्ध और बहुत आगे बढ़े हुए लोगों को भी अल्लाह ने पीछे डाल दिया है। "ज़ालिक फ़ज़लुल्लाह युतिही मय्याशा" और यह वही फ़ज़ल है जो हमारे आका के लिए पहले से ही मुक़द्दर था और हुज़ूर की शख्सियत से जुड़ा हुआ था।

(यूरोप की यात्रा, पृष्ठ 297-296)

2. अहमदिया आंदोलन की प्रसिद्धि, अंतर्राष्ट्रीय प्रचार और विभिन्न राष्ट्रों का लाभ प्राप्त करना।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ रौया और कशूफ़, और विशेषतः भविष्यवाणी मसीह मौऊद में अंतर्राष्ट्रीय प्रचार और राष्ट्रों के लाभ प्राप्त करने का जो उल्लेख था, वह भी इस महान यात्रा की ओर संकेत कर रहा था। जमाअत के सदस्यों और कुछ गैर-जमाअती लोगों ने भी यह देखा कि यह यात्रा कई दृष्टियों से पुरानी भविष्यवाणियों को पूरा करने वाली और बरकत से भरपूर होगी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भी इस

यात्रा के परिणामस्वरूप सफलता की बशारत मिली, जिसे बयान करते हुए हुज़ूर ने फ़रमाया

“अल्लाह ने मुझे पहले ही खुशखबरी दी थी कि मेरे विलायत जाने से इस्लाम की फतहें शुरू होंगी ... मैंने पहले ही कह दिया था कि जमाअत यह न सोचे कि मेरे वहां पहुंचते ही लोग अहमदी होना शुरू कर देंगे। मैं तो वहां प्रचार के लिए हालात देखने जा रहा हूं। फिर आगे के हालात से पता चला कि मेरे वहां जाने में अल्लाह की यह हिकमत थी कि वे फतहें जो मेरे वहां जाने के परिणामस्वरूप अब शुरू हो रही हैं, वे किसी और व्यक्ति से नहीं जोड़ी जाएं, बल्कि सीधे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से जुड़ी रहें। फिर मैं कहता हूं कि कोई भी नबी ऐसा नहीं जो एक दिन में फतह हासिल कर ले और न ही किसी खलीफ़ा को एक दिन में फतह मिल सकती है। लेकिन अब तो अल्लाह के फज़ल से सिलसिला इतनी तरक्की कर रहा है कि एक अंग्रेज़ लिखता है कि पिछले कई सदियों में किसी सिलसिले की ऐसी तरक्की नहीं देखी।”

(तक्ररीर जलसा सलाना 27 दिसंबर 1926, अल्-फज़ल 14 जनवरी 1927, हवाला सवानेह फज़ल-ए-उमर, भाग 3, पृष्ठ 58)

फिर हुज़ूर फ़रमाते हैं

“अल्लाह ने इस यात्रा को जिस तरह से बरकत दी और अहमदिया आंदोलन की स्थायी प्रसिद्धि का कारण बनाया, और इसके माध्यम से दुनिया के कोने-कोने में उसका नाम ऊंचा किया और हज़ारों दिलों में सिलसिले की हीबत और अज़मत को क़ायम किया, वह वर्णन का मोहताज नहीं। यह प्रसिद्धि कादियान में बैठे हुए दस-पंद्रह साल में लाखों रुपया खर्च करके नहीं हो सकती थी। यह जो कुछ था वह एक बीज था। तेरह सौ साल की भविष्यवाणियां केवल इतनी प्रसिद्धि का साधन उत्पन्न करके समाप्त नहीं हो सकतीं। इस यात्रा का परिणाम, मौजूदा परिणाम से कहीं अधिक महत्वपूर्ण, इन शा अल्लाह निकलेगा।”

(मन अन्सार इलल्लाह, अनवारुल्-उलूम, भाग 9, पृष्ठ 33-32)

फिर एक और अवसर पर इस यात्रा के परिणामस्वरूप अहमदिया आंदोलन की प्रसिद्धि, प्रचार और प्रसार का उल्लेख करते हुए हुज़ूर ने फ़रमाया

“हमारी आगमन के साथ ही अल्लाह ने ऐसे असाधारण साधन उत्पन्न कर दिए हैं कि जमाअत, जिसे यहां कोई जानता भी नहीं था सिवाय गिने-चुने परिचितों के, उसे अब कितनी प्रसिद्धि और अज़मत प्राप्त हो गई है कि गैर लोग भी कहने लगे हैं कि आजकल जहां जाएं अहमदियत ही अहमदियत का वर्णन होता है। जहां देखो और पढ़ो, यही चर्चा होता है और महफिलों में यही बातचीत होती है, यहां तक कि लोग इस कॉन्फ्रेंस को भी अहमदिया कॉन्फ्रेंस कहने लगे हैं। मौलवी नेयमतुल्लाह खान की शहादत का वाक्या भी इस प्रसिद्धि का बड़ा कारण बना है। लेकिन हमारा आना और मौलवी नेयमतुल्लाह खान का शहीद होना, इन दोनों घटनाओं को किसने इकट्ठा किया? इन बातों में गौर करने वाले और चिंतन करने वाले लोग अल्लाह की मंशा और उसके इरादे को समझ सकते हैं और उनको इरफान का मुकाम हासिल हो सकता है। अगर हम आए होते और यह घटना न होती, और अगर हम न आए होते और यह घटना हो जाती, तो यह भी तो अल्लाह ही का काम है कि उसने ऐसे साधन इकट्ठा कर दिए हैं जिनसे हमारे सिलसिले की प्रसिद्धि हो गई। यह सोने पर सुहागा वाला काम हो गया। आखिर इससे पहले भी दो शहादतें हो चुकी हैं, जो कई मायनों में इस से अधिक महत्वपूर्ण थीं, लेकिन इनसे हमारी तरक्की या प्रसिद्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा था। इसलिए हमारे इस यात्रा के उद्देश्यों का एक हिस्सा जो ज़ाहिर से संबंधित था, अल्लाह के फज़ल से पूरा हो चुका है और बाकी पूरा होने की भी हमें पूरी उम्मीद और पक्का यकीन है कि अल्लाह की छिपी हुई

तरक्की ज़रूर अब प्रकट होकर रहेगी।”

(यूरोप की यात्रा, पृष्ठ 307-305, खुसूसी खुत्बा जुम्मा, हज़रत अब्दुर्रहमान कादियानी)

3. तीसरी बड़ी बरकत यूरोपीय लोगों का अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम की ओर पुनः ध्यान देना।

जहलम से मौलवी बुरहानुद्दीन साहब के एड्रेस के उत्तर में हुज़ूर ने मुंबई में यूरोप की यात्रा की महान बरकतें, फलों और सफलताओं का वर्णन करते हुए फ़रमाया

“सच्ची प्रशंसा और आभार केवल अल्लाह के लिए है, क्योंकि हर प्रकार की बरकतें और लाभ उसी से आते हैं, और वही सभी प्रकाशों का स्रोत और भलाई का स्रोत है। इसलिए असली आभार तो उसी की ओर होना चाहिए। बाकी, जिन देशों में हम गए, वहां के लोग खुद को शासक मानकर एक तरह के घमंड और अभिमान में थे। इंग्लैंड के अतिरिक्त, अन्य राष्ट्र भी भारतियों को नीचा और तुच्छ समझते हैं। इन परिस्थितियों में अपने अधीन एक व्यक्ति की आवाज़ पर ध्यान देना वास्तव में चौंकाने वाली बात थी, परंतु जो कुछ भी हुआ, वह केवल अल्लाह के फज़ल का परिणाम था।

दूसरी बात, वे अपने विज्ञान और संस्कृति को इतनी उन्नत और श्रेष्ठ समझते हैं कि वे सारी दुनिया को तुच्छ मानते हैं। धर्म के नाम पर वे कुछ भी सुन लें, लेकिन अगर उनके सभ्यता-विरोधी कोई बात कही जाए तो उनकी आंखें चमक उठती हैं और चेहरे बदल जाते हैं। वे कहते हैं कि हमने सैकड़ों वर्षों के अनुभव और मेहनत से ये बातें निकाली हैं, इनके विपरीत कुछ कहने का किसी को कोई अधिकार नहीं है। ऐसे व्यक्ति को वे पागल और अज्ञानी समझने लगते हैं। परंतु चूंकि इस्लाम एक व्यापक ज्ञान और संपूर्ण कानून पर आधारित है और इसका हर पहलू मानव जीवन से जुड़ा है, इसलिए हमें ऐसी बातें भी कहनी पड़ती हैं जो उनके संस्कृति-विरोधी हों। इन बातों पर वे भड़क उठते हैं ...

संक्षेप में, उनके संस्कृति के विपरीत जो भी बात हो, उसे सुनना भी वे बर्दाश्त नहीं कर सकते। लेकिन हमने अल्लाह के फज़ल से इन बातों को प्रस्तुत किया और इस तरह प्रस्तुत किया कि उन्होंने सिर झुका लिया और स्वीकार किया कि जो आप कह रहे हैं वह सही है। परंतु उन्होंने कहा कि हम अपने देश के रस्मों का विरोध नहीं कर सकते। एक महिला ने व्याख्यान के बाद आकर कहा कि मुझे आस्तिक बनाओ, लेकिन हमने उसे मना किया और कहा कि पहले किताबें पढ़ो और सोच-विचार करो। कुछ लोगों ने अखबारों में पढ़कर इस्लाम के प्रति रुचि दिखाई, लेकिन हमने उन्हें यही उत्तर दिया कि पहले शोध करें। हम केवल नाम मात्र के आस्तिक नहीं चाहते, बल्कि ऐसे आस्तिक चाहते हैं जो अपने आचरण से सच्चे आस्तिक हों।

अक्सर लोग हमारे घर आते थे, हमारी बैठकों में शामिल होते थे। उन्हें कौन लाता था? केवल अल्लाह लाता था। अल्लाह ने एक खिंचाव पैदा कर दिया था... उनके दिलों पर असर हुआ और वे इस्लाम की ओर आकर्षित हो गए। ऐसा लगता था कि कोई बांध था जिसे अल्लाह ने हमारे वहां जाने पर तोड़ दिया और हवा में उड़ा दिया, और लोग खिंचे चले आते थे। इसलिए जो कुछ भी हुआ, वह अल्लाह के फज़ल से हुआ कि हर तबके के लोग आए, मिले और सोच-विचार करने की ओर प्रवृत्त हुए। हमारे युवा की बातें इज्जत और मोहब्बत से सुनी गईं। और आज इंग्लैंड में हज़ारों ऐसे लोग हैं जो भले ही हमारे हर बात से सहमत नहीं, लेकिन हमारी बातें सुनते हैं और सुनने के लिए तैयार हैं। वे जानते हैं कि यह कौम बढ़ने वाली है।

यह कोई छोटी बात नहीं है। वास्तव में, यही असली और पहली सीढ़ी है प्रगति की कि अल्लाह ने दुनिया का ध्यान हमारी ओर खींच दिया और उनके दिल में यह डाल दिया कि वे सोचें और विचार करें। एक कॉलेज के प्रेजिडेंट और सेक्रेटरी आए और उन्होंने पूछा कि इस यात्रा में आपकी

कौनसी सफलता मिली? मैंने उनसे कहा कि देखो, ध्यान खींचना इंसान के बस में नहीं है। यह अल्लाह का काम है कि लोग किसी चीज़ की ओर रुचि लें और उनके दिल में यह बात बैठ जाए कि यदि वे हमारी बात को सुनेंगे, तो उसे अपनाने की भी क्षमता मिलेगी।

अखबारों में हमारे चित्र और लेख देखकर अब लंदन के बच्चे-बच्चे हमें पहचानते हैं। इस तरह से सिलसिले का इतना परिचय हो चुका है कि अब अगर 12 साल का बच्चा भी इंग्लैंड में प्रचार के लिए जाए, तो लोग उसकी सुनेंगे और यह नहीं कहेंगे कि यह कोई पागल व्यक्ति है। वे जान चुके हैं कि यह सिलसिला सच्चाई, बुद्धिमत्ता और महानता से भरा हुआ है और इस लायक है कि इस पर ध्यान देकर सोच-विचार किया जाए। यह कोई छोटी बात नहीं है, जो अल्लाह ने हमारे लिए पैदा कर दी है। मेरी इन बातों पर वे दोनों कह उठे, "वास्तव में यह द्वितीय सफलता है।"

संक्षेप में, यह अल्लाह का काम है और उसकी भविष्यवाणियों के अनुसार हुआ। दस लोग, बीस लोग, पचास लोग या यहां तक कि सौ लोग भी मान लें, तो वह सीमित ही हैं। परंतु अगर एक लाख या करोड़ों का ध्यान आकर्षित हो जाए, तो यह एक बड़ी सफलता और प्रगति का संकेत है। केवल नाम मात्र के आस्तिक पचास क्या, पचास करोड़ भी पैदा हो जाएं, तो उनका कोई उपयोग नहीं। अब अल्लाह ने हमारे लिए मैदान खोल दिया है। हमारी यह यात्रा भी, जैसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की यात्रा में अल्लाह ने विशेष मंशा से व्यवस्थाएं कीं और सफलताएं दीं, उसी प्रकार इस यात्रा में भी व्यवस्थाएं हुईं और परिणामस्वरूप अल्लाह ने एक लहर पैदा कर दी है।"

(यूरोप की यात्रा, पृष्ठ 491-489)

4. खुदा की भविष्यवाणियों का पूरा होना

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की खुदा की प्रेरणाएँ और रहस्योद्घाटन, जैसे कि "मैं तुझे पृथ्वी के किनारों तक सम्मान के साथ प्रसिद्धि दूंगा," "यदउना लक अब्दालुशशाम वा इबादुल्लाह मिनल अरब," और लंदन शहर में सफेद रंग के पक्षी पकड़ना, आदि खुदा ही मार्ग का संकेत दे रहे थे। बस इन पर चलने की देर थी। इसी प्रकार हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी खिलाफत के आरंभ में इन स्थानों की यात्रा शुरू की।

5. पांचवीं बरकत स्वीकृत प्रार्थनाओं की शक्ति मिलना

इस यूरोप यात्रा से पहले, हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस यात्रा की सफलता, बरकतों और उत्तम परिणामों के लिए प्रार्थनाएँ कीं और जमाअत के अन्य लोगों को भी बार-बार प्रार्थना करने का आग्रह किया। इसके अतिरिक्त, इस यात्रा के लिए खुदा भी और कुछ जमाअत के लोगों से भी इस्तिखारा कराया। यात्रा के दौरान भी, हर समय और हर कदम पर अपने सहयात्रियों और जमाअत के सदस्यों के साथ हदीस-ए-नबवी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम कि "तीन दुआएं स्वीकार होती हैं, इसमें कोई संदेह नहीं; मज़लूम की दुआ, मुसाफ़िर की दुआ, और पिता की अपने बच्चे के लिए की जाने वाली दुआ," के अनुसार स्वीकृत प्रार्थनाओं की शक्ति मिली। इसके परिणामस्वरूप न केवल इस यात्रा में अल्लाह ने असाधारण और अपेक्षा से अधिक सफलताएँ दीं, बल्कि भविष्य के लिए भी ये प्रार्थनाएँ सिलसिले की महान प्रगति का अग्रदूत साबित हुईं।

इसीलिए, हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु जमाअत के सदस्यों को प्रार्थनाओं के लिए प्रोत्साहित करते हुए एक अवसर पर फ़रमाते हैं

"मैंने जो व्यवस्था बनाई है, वह पूरी ईमानदारी से बनाई है और आप सभी से उम्मीद है कि आप इसे सफल बनाने में हर प्रकार से सहायता देंगे और प्रार्थनाओं के साथ हमारी सहायता करेंगे कि अल्लाह इस यात्रा को हर प्रकार की बुराई से सुरक्षित रखे और इसे सफल बनाए। जिस काम के लिए हम जा रहे हैं, वह कोई साधारण काम नहीं है बल्कि एक महान कार्य है और

जब तक अल्लाह की सहायता न हो, सफलता नहीं मिल सकती... जो काम प्रस्तावित किया गया है वह ऐसा है कि इसके परिणाम तुरंत नहीं आ सकते, लेकिन यह इतना आवश्यक है कि इसके बिना परिणाम नहीं निकल सकते। इसलिए जब तक प्रार्थनाएँ न की जाएं, हम सफल नहीं हो सकते। इसीलिए मैं दोस्तों से अनुरोध करता हूँ कि इस समय में विशेष रूप से प्रार्थनाओं में लगे रहें कि अल्लाह हमें यूरोप को इस्लाम की ओर लाने की तौफ़ीक़ दे और वह इस्लाम जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम लाए। इस समय दुनिया इस पर विश्वास करने के लिए तैयार नहीं है कि यह इस्लाम अब फैल सकता है... इसलिए प्रार्थनाओं की अत्यधिक आवश्यकता है।"

(खुल्बा जुमा, 26 सितंबर 1924, लंदन, अल्-फज़ल, 6 नवंबर 1924)

क्रादियान से रवाना होने के दिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मजार पर आंसू भरी प्रार्थना की। प्रस्थान के समय जमाअत के सदस्यों के साथ एक लंबी और भावुक सामूहिक प्रार्थना हुई। जब जहाज़ मक्का और जद्दा के पास से गुज़रने वाला था, तो आपने दो रकात नमाज़ बा जमाअत पढ़ाई जिसमें अत्यधिक भावुक प्रार्थनाएँ कीं। फिर दमिश्क में, आपने प्रार्थना की कि अल्लाह, दमिश्क की भविष्यवाणी कैसे पूरी होगी, तो अल्लाह ने उसे पूरा किया और बड़ी सफलता दी। इसके बाद विक्टोरिया स्टेशन पर क्राफिले के साथ प्रार्थना की।

लंदन से वापसी के दौरान भी, यात्रा के दौरान आपकी और जमाअत के सदस्यों की प्रार्थनाएँ जारी रहीं। यहाँ तक कि मुंबई पहुँचने पर आपने जमाअत के नाम अपने संदेश में इन प्रार्थनाओं की स्वीकृति का उल्लेख करते हुए फ़रमाया

"मैं अपनी ओर से और अपने सहयात्रियों की ओर से सभी जमाअत के सदस्यों का दिल से आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने हमारे मिशन की सफलता के लिए प्रार्थनाएँ कीं। मुझे पूरा विश्वास है कि जो अद्भुत सफलता हमें इस यात्रा में मिली, वह केवल अल्लाह के फज़ल और करम के कारण थी। उसने हर कदम पर हमारी मदद की और ऐसे समय में हमारे लिए दरवाज़े खोले जब हमें कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा था। मैं सभी सदस्यों से अनुरोध करता हूँ कि वे अपने रब और मावला के इस विशेष फज़ल को याद रखें और उन बड़ी कुर्बानियों के लिए तैयार रहें, जो पिछले चार महीनों के काम के परिणामस्वरूप अल्लाह की ओर से दिखने वाले हैं। अल्लाह हम सभी पर अपनी बरकतें नाज़िल फ़रमाए।"

(तारीख-ए-अहमदियत, भाग 4, पृष्ठ 462)

क्रादियान में आगमन पर हज़रत मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम की मजार पर अकेले दुआ के लिए गए। थोड़ी देर बाद अपने सहयात्रियों को भी बुलाया, फिर सबने मिलकर दुआ की। जब बहिश्ती मकबरा से क़स्बा में प्रवेश करने लगे, तो आपने फ़रमाया, "हाफ़िज़ रोशन अली साहिब शहर में प्रवेश की दुआ पढ़ेंगे।" सभी लोग इसे ऊँची आवाज़ में दोहराते चले। इस पर हाफ़िज़ साहिब दुआ का हर शब्द ऊँची आवाज़ में पढ़ते और सारा समूह इसे दोहराता। यह दुआ थी

أَبُوْنَ تَائِبُوْنَ عَائِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ صَدَقَ اللهُ وَعَدُّهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ
وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَحَدَّهُ

"आइबूना ताइबूना आबिदूना लिरब्बिना हमिदूना सदक़ अल्लाहु वअदहु व नसरा अब्दहु व हजमा अहजाबा वहदहु।"

अहमदिया चौक पर पहुँचकर हज़रत ने पूरे समूह के साथ वापसी की दुआ पढ़ी। उस समय का दृश्य अत्यधिक भावुक और प्रभावशाली था। हज़रत की आवाज़ में भावुकता और आँखों में आँसू थे। उपस्थित लोग भी अत्यधिक खुशी से रो रहे थे, कुछ की चीखें भी निकल गईं। इस भावुक स्थिति में हज़रत ने आँसुओं से भरी आँखों और दर्दनाक लहजे में फ़रमाया

"देखो, रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की यह दुआ कितनी गहरी है जिसका दृश्य हम आज देख रहे हैं। यही जगह, यही स्थान और

यही घर है जहाँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जब दावा किया तो आप अकेले और तन्हा थे। कोई साथी और मददगार नहीं था। उस समय चारों तरफ से आवाज़ें आईं कि नऊजूबिल्लाह (हम इससे खुदा की शरण चाहते हैं) यह धोखेबाज़ है, झूठा है, और दुश्मन कहते कि हम इसे कीड़े की तरह मसल देंगे। लेकिन अल्लाह ने अपने वादों के अनुसार आपकी मदद और सहायता की और आज उसी बंदन में बंधे हुए हम इतने लोग यहाँ जमा हैं। उन्हीं की बदौलत अल्लाह ने हमें हर मैदान में विजय दी। उन्हीं के माध्यम से, उनके वादों के अनुसार अल्लाह ने हमें वह सम्मान दिया, जो वास्तव में उन्हीं के लिए आया और अल्लाह ने हमें उन पुरस्कारों का वारिस बनाया जिनका वादा उनसे किया गया था। यदि सच्चाई और वास्तविकता को ध्यान में रखा जाए तो सच यही है कि सारी महानताएँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लिए हैं, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए हैं और अल्लाह के लिए हैं।"

6. तौहीद के गढ़ में खुदा की उपासना के लिए मस्जिद 'मस्जिद फज़ल' की नींव

मस्जिद के उद्घाटन और इस महत्वपूर्ण अवसर का अधिकतम लाभ उठाने के प्रति ध्यान दिलाते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं

"इस अवसर और इस शानदार उद्घाटन पर जिस प्रकार अल्लाह ने दुनिया में हलचल और कंपन उत्पन्न कर दिया है और एक शोर मचा दिया है और सभी की निगाहें इस ओर मोड़ दी हैं, ऐसा दृश्य पहले इंग्लैंड के इतिहास में नहीं देखा गया। यूरोप के बड़े-बड़े अखबारों ने भी यह माना है कि इंग्लैंड में इस प्रकार का महान दृश्य पहले कभी नहीं देखा गया। यह उन लोगों की आवाज़ है जो इंग्लैंड के ईसाई हैं। एक तो वे लोग इंग्लैंड के निवासी, फिर ईसाई, और ईसाई भी दृढ़ और अपने क़ौमी मतभेद में सभी दुनिया के ईसाइयों से बढ़े हुए हैं, और अपने पक्षपाती रवैये के कारण किसी अन्य क़ौम की ओर किसी अद्वितीय बात को नहीं जोड़ना चाहते। इसके बावजूद भी, इंग्लैंड के बड़े-बड़े अखबारों ने यह माना है कि ऐसा शानदार आयोजन पहले कभी इंग्लैंड में नहीं हुआ... और केवल इंग्लैंड में ही नहीं, बल्कि सभी देशों और सभी भाषाओं में इस घटना का उल्लेख हो रहा है... कुछ अखबारों में तीन दिनों तक उद्घाटन की खबरें छपती रहीं। यूरोप के अखबार इतनी शक्ति रखते हैं कि एक-एक खबर को प्रकाशित करने में वे हज़ारों रुपये खर्च कर देते हैं और फिर एक बार प्रकाशित करने के बाद दोबारा उसे कभी प्रकाशित नहीं करते... लेकिन मस्जिद के उद्घाटन के विषय में, इंग्लैंड के एक-एक अखबार, जैसे टाइम्स ने भी, तीन दिन तक लगातार खबरें प्रकाशित कीं। और उन्होंने यह नहीं सोचा कि अब यह खबर पुरानी हो गई है, क्योंकि वे जानते थे कि इंग्लैंड के हर घर में मस्जिद के बारे में चर्चा हो रही है और यह सबके बीच एक चर्चित विषय बन गया है।"

(सवानेह फज़ल-ए-उमर, भाग 3, पृष्ठ 91-90)

हज़रत मौलाना शेर अली साहिब ने इस मस्जिद की उपयोगिता और बरकतों पर लिखा

"अल्लाह के फज़ल से मस्जिद फज़ल लंदन का वजूद भी तब्लीगा का एक बड़ा साधन साबित हो रहा है। जो लोग बाहरी मुल्कों जैसे यूरोप, अफ्रीका, एशिया, अमेरिका और द्वीपों से लंदन घूमने आते हैं, उनमें से कई लोग मस्जिद को देखने के लिए आते हैं। इनमें कुछ बहुत शिक्षित और समझदार लोग होते हैं। इसके अतिरिक्त खुद इंग्लैंड के विभिन्न शहरों के लोग जब लंदन आते हैं, तो उनमें से कुछ मस्जिद को देखने आते हैं। जैसे कि हमारी मस्जिद अब लंदन के दर्शनीय स्थलों में से एक हो चुकी है और लंदन की गाइड बुक्स में भी हमारी मस्जिद का उल्लेख है। मस्जिद की प्रसिद्धि का एक कारण वे जलसे हैं जो समय-समय पर मस्जिद में बड़ी सफलता के साथ होते हैं, जिनमें लंदन के हर वर्ग के प्रमुख लोग शामिल

होते हैं और जिनका उल्लेख लंदन के विभिन्न अखबारों में छपता है। मस्जिद लंदन केवल लोगों के लिए एक बड़ी आकर्षण का साधन ही नहीं है, बल्कि इसका अस्तित्व खुद ही एक तब्लीगा का ज़रिया है। जिस इस्लामी शिक्षा को हमारे प्रचारक शब्दों के माध्यम से लोगों के सामने प्रस्तुत करते हैं, मस्जिद उसे एक चिन्तात्मक रूप में प्रदर्शित करती है। इसलिए तब्लीगा के उद्देश्य में मस्जिद लंदन बड़ी सहायक और सहायक है। यह स्वयं एक स्थायी प्रचारक है और इसका वजूद बहुत ही मुबारक है।"

(अल्-फ़ज़ल, 28 अगस्त 1937, सवानेह फज़ल-ए-उमर भाग 3, पृष्ठ 95-92)

इस केंद्र ने इस्लाम के प्रचार और मुस्लिमों की शिक्षा में ऐसे अविस्मरणीय कार्य किए हैं जो हमेशा इस्लाम अहमदिया के इतिहास में याद रखे जाएंगे। प्रमुख उलेमा ने इस केंद्र की असाधारण सेवाओं की सराहना की। हज़रत खलीफ़ा-तुल-मसीह राबे रहमहुल्लाह के समय में यहाँ जो नई सफलताएँ प्राप्त हुईं और फिर ख़िलाफ़त ख़ामसा के बर्कतपूर्ण दौर में इस केंद्र के माध्यम से जो तौहीद की आवाज़ें दुनिया भर में गूँजीं, यह एक स्थायी और विस्तृत विवरण की मांग करती है। यह सब उसी प्रयास का नतीजा है जो 1924 ई. में इस मस्जिद की नींव रखते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ास कुबूलियत के वक्त में कहा था

"मैं अल्लाह से दुआ करता हूँ कि वह पूरी जमाअत अहमदिया के मर्दों और औरतों की इस खालिसाना कोशिश को कुबूल फ़रमाएँ और इस मस्जिद की आबादी के साधन पैदा करे। हमेशा के लिए इस मस्जिद को नेकी, तक्रवा, इंसाफ और मुहब्बत के विचारों का केंद्र बनाएँ और यह जगह हज़रत मुहम्मद ख़ात्म-उल-नबियीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और हज़रत मसीह मौऊद नबी अल्लाह और नायब मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नूरी किरणों को इस देश और दूसरे देशों में फैलाने के लिए एक रूहानी सूरज का काम दे।"

(यूरोप की यात्रा, पृष्ठ 391,392)

7. महत्वपूर्ण व्यक्तित्वों से मुलाकात और उन्हें इस्लाम की दावत

बिलाद-ए-शाम के गवर्नर से मुलाकात

हज़रत भाई अब्दुर्रहमान कादियानी रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी डायरी में लिखते हैं "मस्जिद उमविया से हज़रत वापस मकान पर तशरीफ़ लाए और फिर मोटर द्वारा शाम के गवर्नर से मिलने गए। उनका नाम सुबहा बेग है। अरब नस्ल के मुस्लिम हैं और बड़े समझदार और बुद्धिमान व्यक्ति हैं। हज़रत ने उनसे सिलसिला का भी वर्णन किया और यह भी बताया कि हम यहाँ मुबशरीन भेजना चाहते हैं। क्या इसमें कोई कानूनी बाधा या आपत्ति है? और अगर नहीं है, तो क्या आप हमारी कुछ नैतिक सहायता कर सकते हैं? गवर्नर ने हज़रत से कहा कि आप निस्संदेह मुबल्लिग और मुबशरीन यहाँ भेजें, हम उनकी हर संभव सहायता करेंगे। अगर लोग उन पर हमला करेंगे तो हम उनकी सुरक्षा करेंगे, लेकिन अगर स्थिति हमारी शक्ति से बाहर हो जाए, तो हम आपको सूचित करेंगे कि आप अपनी सुरक्षा का इंतज़ाम खुद करें।"

छोटे गवर्नर साहिब ने हज़रत से खुद साहित्य मांगा था, लेकिन साहित्य साथ में नहीं था। केवल "इस्लामिक असूल की फिलॉसफी" अरबी में उपलब्ध थी, जो उन्हें दी गई। गवर्नर ने 'तौहफ़ा शहज़ादा वेल्स' के बारे में सुनकर उत्सुकता दिखाई क्योंकि उन्होंने इसके बारे में हज़रत से सुना था। हज़रत ने कहा कि यह तो अंग्रेज़ी में है, जिस पर उन्होंने अफसोस जताया, लेकिन फिर कहा कि इसे ज़रूर भेजें, मैं इसे अपनी बेटी को दूंगा, जो अंग्रेज़ी जानती है। तौहफ़ा शहज़ादा वेल्स भी उन्हें भिजवाया गया।"

पिछला करिश्मा दो कारों वाली चीज़ है। अल्लाह ने लड़की को भी अवसर दिया है...

छोटे गवर्नर का नाम हकी बे या हकी बेग था। उसने प्रचारकों को

भेजने और इस्लाम का प्रचार जारी रखने की खुशी-खुशी अनुमति दी और मदद का वादा भी किया। इसके अतिरिक्त, हज़ूर ने वहाँ के एक उच्च फ्रांसीसी अधिकारी से भी मुलाकात की, और वह मुलाकात भी अल्लाह के फज़ल से बहुत सफल रही। संक्षेप में, हज़रत खलीफ़ा-तुल-मसीह और महदी की इस क्षेत्र में तशरीफ़-आवरी अत्यंत सफल रही और तब्लीगा के सिलसिले के लिए एक बहुत आसान राह खुल गई। सिलसिले का परिचय स्थापित हो गया और इसकी अहमियत और महानता को मान्यता मिली। अगर एक हज़ार मुबल्लिग भी आते, तो यह प्रभाव पैदा करना मुश्किल था, जो हज़ूर की तशरीफ़-आवरी से उत्पन्न हुआ। हालांकि यात्रा का असल उद्देश्य इससे कहीं ऊँचा और महान था, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि यह भी उस बड़े उद्देश्य की ही एक शाखा थी।

(यूरोप की यात्रा, पृष्ठ 76-74)

दमिश्क में ही एक और प्रसिद्ध हस्ती से हज़ूर की मुलाकात और इस मुलाकात के नतीजे में बरकतों का वर्णन करते हुए भाई अब्दुर्रहमान क्रादियानी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं

"एक साहब, जो दमिश्क के एक प्रसिद्ध लेखक थे, हज़ूर से कहने लगे कि हम आपकी इज्जत एक सम्मानित इमाम के रूप में करते हैं, लेकिन आप यह उम्मीद न रखें कि इस क्षेत्र में कोई व्यक्ति आपके विचारों से प्रभावित होगा। क्योंकि हम लोग अरब नस्ल के हैं और अरबी हमारी मातृभाषा है, और कोई भी हिंदुस्तानी, चाहे वह कितना भी विद्वान हो, हमसे अधिक कुरआन और हदीस के मानी समझने की योग्यता नहीं रखता। यह बात सुनने के बाद, हज़ूर ने उनके विचार को खारिज किया और मुस्क्रुराते हुए कहा कि हमने अपने प्रचारकों को पूरी दुनिया में भेजा है। लेकिन भारत वापस जाने के बाद मेरा पहला काम होगा कि मैं आपके देश में एक प्रचारक भेजूँ, और देखूँ कि अल्लाह के झंडे के वाहकों के सामने आपकी क्या ताकत है।"

हज़ूर ने वास्तव में ऐसा ही किया कि वतन लौटने के बाद दमिश्क में दार-उल-तब्लीगा क्रायम करने के लिए सैयद वलीउल्लाह शाह साहब और मौलाना जलालुद्दीन साहब शम्स को वहाँ भेजा।

(तारीख-ए-अहमदियत, भाग 4, पृष्ठ 444-443)

हज़ूर ने इटली के प्रधानमंत्री मुसोलिनी से भी मुलाकात की और उसे सिलसिला अहमदिया के उद्देश्य बताए। मुसोलिनी ने निहायत ही सम्मान के साथ पेश आकर मुलाकात की।

पोप से मुलाकात के बारे में हज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं

"1924 में जब मैं यूरोप गया, तो रोम में भी रुका। वहाँ मैंने पोप को लिखा कि तुम ईसाइयत के पहलवान हो और मैं इस्लाम का। मुझे मुलाकात का अवसर दो ताकि इस्लाम और ईसाइयत के बारे में आमने-सामने बात कर सकूँ। इसके उत्तर में पोप के सचिव की ओर से मुझे पत्र आया कि पोप साहब की तबीयत ठीक नहीं है, इसलिए वह मिल नहीं सकते। उन्हीं दिनों इटली के एक अखबार का संपादक, जो समाजवादी था, मुझसे मिलने आया। यह ऐसा अखबार था जिसके दिन में बारह संस्करण निकलते थे। उसने मुझसे कहा कि आप यहाँ पहली बार आए हैं। यह बड़ा अच्छा अवसर है, आप पोप से मुलाकात की कोशिश करें। हमें मुसलमानों के नेता के विचार सुनने का अवसर मिलेगा और इसके विपरीत ईसाइयों के नेता के विचार सुनने का भी। मैंने कहा कि मैंने तो खुद उससे मुलाकात की कोशिश की थी, लेकिन उसके सचिव की ओर से उत्तर आ गया है कि पोप साहब की तबीयत अच्छी नहीं है। उसने कहा, आप एक बार फिर मेरी खातिर उन्हें लिखें। मैंने कहा कि इसका अर्थ तो यह है कि तुम मुझे अपमानित करवाना चाहते हो, क्योंकि वह मुलाकात का अवसर नहीं देने वाला। वह कहने

लगा, हमारे नज़र में इससे आपकी इज्जत बढ़ेगी, घटेगी नहीं। उसके कहने पर मैंने फिर से पत्र लिख दिया। इसके उत्तर में उसके मुख्य सचिव की ओर से पत्र आया कि पोप का महल इन दिनों मरम्मत के अधीन है, इसलिए अफसोस है कि वह मुलाकात नहीं कर सकते।

कुछ दिन बाद वही संपादक फिर मुझसे मिलने आया और पूछा कि क्या पोप की ओर से कोई उत्तर आया है। मैंने कहा, हाँ, यह उत्तर दिया है, तुम खुद पढ़ लो। पत्र पढ़कर उसे बहुत गुस्सा आया और वह कहने लगा कि अब मैं अपने अखबार में इसकी खबर लूँगा। अगले दिन अखबार छपा तो उसमें उसने एक बड़ा लेख लिखा कि यहाँ आजकल मुसलमानों का एक बड़ा नेता आया हुआ है, उसने पोप को पत्र लिखा कि मैं आपसे मिलना चाहता हूँ, मुझे मुलाकात का अवसर दें ताकि इस्लाम और ईसाइयत के बारे में आपस में बातचीत हो सके। हम समझते हैं कि यह अवसर बहुत अच्छा था और अगर मुलाकात हो जाती, तो पता लग जाता कि हमारे नेता अपने धर्म से कितने वाक़िफ हैं और मुसलमानों का नेता अपने धर्म से कितनी वाक़िफ़त रखता है। लेकिन पोप के मुख्य सचिव ने यह उत्तर दिया कि पोप का महल इन दिनों मरम्मत के अधीन है, इसलिए वह मुलाकात नहीं कर सकते। इसके बाद उसने तंज में लिखा कि हमें यकीन है कि अब पोप का महल क्रयामत तक मरम्मत के अधीन ही रहेगा।"

(खुल्बा जुमआ, 23 अगस्त 1957, मुद्रित अल्-फ़ज़ल, 7

सितम्बर 1957, सवानेह फज़ल-ए-उमर, भाग 3, पृष्ठ 72-71)

8. इस्लाम अहमदियत का व्यापक प्रचार

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक इल्हाम था, "मैं तेरी तब्लीगा को ज़मीन के किनारों तक पहुँचाऊँगा।" यूरोप यात्रा के दौरान अल्लाह ने इस बरकतभरी वहाँ को अखबारों और मीडिया के माध्यम से पूरा होते हुए दिखाया। दमिश्क में इस्लाम अहमदियत का प्रचार और प्रसार अखबारों के माध्यम से कैसे हुआ, इसका वर्णन तारीख-ए-अहमदियत में मिलता है

"दमिश्क में अपेक्षा से कहीं अधिक सफलता मिली... अखबारों ने लंबे-लंबे प्रशंसात्मक लेख प्रकाशित किए। दमिश्क के शिक्षित वर्ग ने अत्यधिक रुचि दिखाई। वे सभी अखबार जिनमें हमारे मिशन की खबरें और लेख छपते थे, तुरंत बिक जाते थे।"

(तारीख-ए-अहमदियत, भाग 4, पृष्ठ 443)

ब्रिटिश प्रेस में चर्चा

"जिस दिन हज़रत खलीफ़ा-तुल-मसीह-अल्-सानी रज़ियल्लाहु अन्हु यूरोप के यात्रा पर रवाना हुए थे, ब्रिटिश प्रेस में आपकी आगमन की खबरें छपनी शुरू हो गई थीं। लेकिन लंदन पहुँचने के बाद, चित्रमय और गैर-चित्रमय दोनों प्रकार के अखबारों ने इतनी अधिकता से आपके फोटो और अन्य जानकारी प्रकाशित की कि एक कट्टर रोमन कैथोलिक अखबार को लिखना पड़ा कि पूरा ब्रिटिश प्रेस साज़िश का शिकार हो गया है। कई लोगों ने स्पष्ट रूप से यह कहा कि प्रेस ने इतनी महत्ता और प्रसिद्धि किसी बड़े से बड़े लॉर्ड को भी नहीं दी जितनी आपकी उपस्थिति पर दी। प्रेस के अतिरिक्त, फिल्मों में भी आपके और आपके साथियों के दृश्य दिखाए गए, जिससे अल्लाह ने इंग्लैंड के एक सिरे से दूसरे सिरे तक आपकी ख्याति का प्रबंध स्वयं ही कर दिया।"

(तारीख-ए-अहमदियत, भाग 4, पृष्ठ 446)

हज़रत भाई अब्दुर्रहमान साहब क्रादियानी रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं

"वापसी पर जब हम फ्रांस में जहाज़ से उतरे, तो हज़रत के पीछे-पीछे एक और नाव घाट पर पहुँची, जिसमें से दो महिलाएँ और चार

पृष्ठ 1 संपादकीय का शेष

यकीन, ज्ञान और समझ को बढ़ाने वाली थी। और क्यों न हो, यह बरकतों से भरा इलाही यात्रा तो आरंभ से मुकद्दर था। नीचे हम इस यात्रा की कुछ अहम बातें और इसके उद्देश्यों को हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हो के शब्दों में प्रस्तुत करेंगे।

इस यात्रा का उल्लेख कुरआन करीम में
हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया

"मसीह मौऊद या उनके किसी खलीफ़ा का यूरोप की तरफ उसी उद्देश्य से यात्रा करना, जिस उद्देश्य से मैंने किया है, कुरआन करीम में भी उल्लेखित है। इससे यह बात स्पष्ट होती है कि इस प्रकार के यात्रा के बिना इस्लाम की पूरी हिफाज़त मुमकिन नहीं।

... चूंकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की लिखाई के अनुसार 'जुलकरनैन' आप हैं और पश्चिमी मुल्कों से मुराद यूरोप और अमेरिका के लोग हैं जो मसीहियत के चश्मे पर डेरा डाले हुए हैं, तो साफ़ मालूम होता है कि मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम या उनके किसी खलीफ़ा को पश्चिमी मुल्कों का यात्रा करना होगा।"

(अल्-फ़ज़ल कादियाँ दारुलअमान, 16 अगस्त 1924, पृष्ठ 7, कॉलम 3)

इस यात्रा का उल्लेख हदीस शरीफ़ में वर्णन

हदीस शरीफ़ में आता है कि अल्लाह तआला ईसा (अलैहिस्सलाम) को वही (प्रकाशना) के द्वारा यह खबर देगा कि अब मैंने कुछ ऐसी कौमों (अर्थात याजूज माजूज) उत्पन्न की हैं, जिनसे किसी के पास युद्ध की ताकत नहीं है। इसलिए तुम मेरे बंदों को पहाड़ की ओर सुरक्षित रूप से ले जाओ। इस तरह के हालात में अल्लाह तआला याजूज माजूज को अस्तित्व में लाएगा। फिर आगे कहा गया है

يَهْبِطُ نَبِيُّ اللَّهِ عِيسَى وَأَصْحَابُهُ إِلَى الْأَرْضِ فَلَا يَجِدُونَ فِي الْأَرْضِ
مَوْضِعَ شَيْءٍ إِلَّا مَلَأَهُمْ وَنَسَبَهُمْ

"याहूबितु नबी अल्लाह ईसा वा असहाबुहु इला अल-अरद फ़ला यजिदूना फ़िल-अरद मौज़िआ शिब्रिन इल्ला मलआहु ज़हूहुम वा नतनुहुम।"

इसका अर्थ यह है कि अल्लाह के नबी ईसा (अलैहिस्सलाम) और उनके साथी याजूज माजूज की ज़मीन पर उतरेंगे।

पसिद्ध है, जिससे मुराद वही ज़मीन है अर्थात याजूज माजूज की ज़मीन जिसका पहले वर्णन हुआ है। लेकिन पूरी ज़मीन पर एक बालिशत भी ऐसी जगह नहीं मिलेगी जो याजूज माजूज की लाशों और उनकी बदबू से खाली हो।

इसके बाद हदीस में यह भी आता है कि

उस पर अल्लाह के नबी ईसा (अलैहिस्सलाम) और उनके साथी दुआ करेंगे, तो अल्लाह तआला ऐसे परिंदे भेजेगा जिनकी गर्दनें बख़्ती ऊंटों जैसी होंगी। ये परिंदे उन लाशों को उठाकर वहाँ फेंक देंगे जहाँ अल्लाह तआला उन्हें फेंकने का हुक्म देगा। फिर अल्लाह तआला बारिश बरसाएगा यहाँ तक कि कोई घर या कोई तंबू न बचेगा सब धुलकर साफ़ हो जाएंगे और पूरी ज़मीन आईने की तरह साफ़ हो जाएगी। फिर ज़मीन से कहा जाएगा कि अपने फल उत्पन्न कर और अपनी बरकतों को वापस ले आ।

इस हदीस में ईसा से मुराद हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) हैं। और याजूज माजूज की ज़मीन पर आपका उतरना आपके किसी खलीफ़ा के उस ज़मीन पर कदम रखने से है। इन शा अल्लाह, हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) और उनके खलीफ़ाओं की दुआओं से याजूज माजूज की ज़मीन धुलकर आईने की तरह साफ़ हो जाएगी।

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की

भविष्यवाणी को पूरा करना

हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं

“इरादा है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उस भविष्यवाणी को, जो मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के ज़माने के बारे में है और जिसकी ताबीर हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) ने यह फ़रमाई है कि मसीह मौऊद या उसका कोई खलीफ़ा दमिश्क जाएगा, इस यात्रा में पूरा करने की कोशिश की जाए और रास्ते में कुछ दिनों के लिए दमिश्क में भी ठहरा जाए। भले ही इसके लिए अपने रास्ते से हटकर जाना होगा, लेकिन चूंकि ऐसे मौके बार-बार नहीं मिलते, इसलिए जहाँ तक हो सके इस यात्रा से लाभ उठाने की कोशिश करना ज़रूरी है, और इस्लाम की सच्चाई का एक निशान कायम करना भी तो अत्यंत सौभाग्य की बात है।”

(यूरोप की यात्रा, अनवारुल उलूम, भाग 8, पृष्ठ 381)

दो भविष्यवाणियों को पूरा करना

हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु की इस यात्रा से लाहोरी पंथ के अनुयायियों (जिन्हें 'पैगामियों' के रूप में जाना जाता है) में काफी असंतोष और गुस्सा फैल गया। उन्होंने इस यात्रा को केवल एक सैर-सपाटे की यात्रा बताया और कहा कि यह जमाअत के पैसों का अपव्यय है। उनके इन आपत्तियों का उत्तर अल्-फ़ज़ल के संपादक, अन्य लेखकों, और स्वयं हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी दिया। पैगामियों की आपत्तियों के उत्तर में दिए गए शीर्षकों को हम पाठकों के मनोरंजन के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं, जिनमें शामिल हैं “हज़रत खलीफ़ातुल् मसीह सानी का यूरोप का यात्रा और ग़ैर-मुबाईयीन का विद्वेष और ईर्ष्या,” “यूरोप का सफ़र, जो मौलवी मुहम्मद अली के गले की हड्डी बन गया,” “महमूद दमिश्क में, ग़ैर-मुबाईयीन द्वेष में,” और “महमूद यात्रा में और हासिद सकर में।” इस लेख के लेखक हज़रत डॉक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहब (रज़ि.) हैं। इन शीर्षकों से अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि ग़ैर-मुबाईयीन पर इस यात्रा का मातम इस हद तक छाया हुआ था कि उन्होंने भी इस पर लेखनी चलानी पड़ी।

इनमें से पहले दो शीर्षकों को जोड़कर हमने एक शेर बनाया है, देखें

महमूद यात्रा में और हासिद सकर (जहनुम) में

यूरोप का सफ़र, जो मौलवी मुहम्मद अली के गले की हड्डी बन गया केवल यही नहीं, बल्कि और भी कई शीर्षकों के तहत उन्हें उत्तर दिया गया। खैर, हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनके आपत्ति के उत्तर में जो फ़रमाया, उसमें से एक संक्षिप्त अंश नीचे दर्ज करते हैं, जो हज़रत के यात्रा के उद्देश्य पर रौशनी डालता है। हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया

“अगर इस यात्रा में हम कुछ भी काम न करते और केवल सैर-सपाटा ही करते रहते, तब भी यह यात्रा आलोचना के योग्य नहीं थी, क्योंकि यह दो भविष्यवाणियों को पूरा करने के लिए थी — एक वह भविष्यवाणी जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दमिश्क के बारे में की थी, और दूसरी हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) की जो इंग्लैंड के बारे में थी। इसलिए यदि हम अपने पैसों से... इस यात्रा को कुछ भविष्यवाणियों को पूरा करने के लिए अंजाम दें, तो इस पर उन्हें क्या आपत्ति हो सकती है।”

(अल्-फ़ज़ल, कादियाँ दारुलअमान, 4 अक्टूबर 1924, पृष्ठ 4, कॉलम 2)

एक संपूर्ण व्यवस्था का प्रस्ताव प्रस्तुत करना

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी यात्रा के उद्देश्य और मक़सद पर रौशनी डालते हुए फ़रमाते हैं

"मेरे विचार में इस यात्रा की आवश्यकता उन उद्देश्यों में से एक है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के रौया को पूरा करना है ... दूसरा

यह धार्मिक आवश्यकता इसकी प्रेरक है कि हमारी जमाअत का काम सारी दुनिया में इस्लाम का प्रचार करना है और चूँकि सारी दुनिया को इस्लाम के दायरे में लाना हमारा कर्तव्य है, इसलिए यह भी आवश्यक है कि इसके लिए हम एक संपूर्ण व्यवस्था का प्रस्ताव पेश करें... इस व्यवस्था को तय करने के लिए यह ज़रूरी है कि खलीफ़ा-ए-वक़्त पश्चिमी देशों की स्थिति को वहाँ जाकर देखें... यूरोप इस्लाम के सिद्धांतों को मानने के लिए तो आज तैयार है, लेकिन वह अपनी आदतों को छोड़ने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं है और न केवल वह खुद इस काम के लिए तैयार नहीं है बल्कि वह एशिया और अफ्रीका को भी अपनी ही तरह का विचारधारा बना कर इस्लाम को दुनिया से बाहर करना चाहता है। इन लोगों की जीवनशैली और उनकी रहन-सहन हमसे इतनी भिन्न है कि यहाँ बैठे हुए उनके बारे में फ़ैसला करना ऐसा ही है जैसे ज़मीन पर बैठे हुए चाँद के हालात पर राय देना बल्कि उससे भी अधिक कठिन, क्योंकि चाँद के हालात तो दूरबीन से देखे जा सकते हैं लेकिन यहाँ एक जीवित क़ौम की सुधार का प्रश्न है जिसमें उनकी बाहरी आकृति नहीं बल्कि उनके दिली विचारों और पूर्वाग्रहों पर फ़ैसला करना है।"

(यूरोप की यात्रा, अनवारुल उलूम, भाग 8, पृष्ठ 385)

सदियों की योजना बनाना

यात्रा का एक उद्देश्य हज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हु के इन शब्दों में देखें। हज़ूर फ़रमाते हैं

यह यात्रा "सदियों के प्रचार के लिए योजना बनाने के प्रस्ताव" के लिए की गई थी।

(अल्-फ़ज़ल, क्रादियान दारुल-अमान, 16 अगस्त 1924, पृष्ठ 3, स्तंभ 1)

हज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हु के एक स्वप्न की पूर्ति हज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं

"मैंने देखा कि मैं लंदन में हूँ और एक ऐसे जलसे में हूँ जिसमें संसद के बड़े-बड़े सदस्य, नवाब, मंत्री और अन्य महत्वपूर्ण लोग शामिल हैं। यह एक प्रकार की दावत का जलसा है जिसमें मैं भी शामिल हूँ। मिस्टर लॉयड जॉर्ज, जो पूर्व प्रधानमंत्री हैं, उसमें भाषण दे रहे हैं। भाषण देते हुए उनकी स्थिति बदल गई और उन्होंने हॉल में टहलना शुरू कर दिया और उनके हाव-भाव से ऐसी बेचैनी झलकने लगी कि सभी को लगा कि उन्हें पागलपन हो गया है। सब लोग कतारें बनाकर खड़े हो गए और वे जल्दी-जल्दी इधर-उधर टहलने लगे। इतने में लॉर्ड कर्ज़न आगे बढ़े और उनके कान में कुछ कहा, और वे ठहर गए और धीरे से लॉर्ड कर्ज़न को कुछ कहा। लॉर्ड कर्ज़न ने बाकी लोगों से, जो उनके आसपास थे, वही बात कही और सब लोग दौड़कर हॉल के दरवाज़े की ओर चले गए और बाहर सड़क की पूर्वी दिशा की ओर झाँकने लगे। उनके इस व्यवहार पर मुझे और भी हैरत हुई। क्राज़ी अब्दुल्लाह साहब मेरे पास खड़े हैं। मैंने उनसे पूछा कि उन्होंने क्या कहा है और ये लोग दरवाज़े की ओर क्यों दौड़े और क्या देख रहे हैं? क्राज़ी साहब ने मुझे उत्तर दिया कि मिस्टर लॉयड जॉर्ज ने लॉर्ड कर्ज़न से कहा है कि मैं पागल नहीं हूँ बल्कि मैं इस वजह से टहल रहा हूँ कि मुझे अभी ख़बर मिली है कि मिर्ज़ा महमूद अहमद, इमाम जमाअत-ए-अहमदिया की सेनाएँ ईसाई फौज को पीछे धकेलते हुए आगे बढ़ रही हैं और ईसाई सेना हार रही है और वह पीछे हटते हुए इस स्थान के करीब आ गई है।"

(यूरोप की यात्रा, अनवारुल उलूम, भाग 8, पृष्ठ 383)

"विलियम द कॉन्करर" वाले स्वप्न का पूरा होना

हज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं

"आप लोगों को पता है कि उस बादशाह, जिसके कब्जे में पूरी दुनिया का नियंत्रण है, ने मुझे स्वप्न में बताया था कि मैं इंग्लैंड गया हूँ और एक

विजेता सेनापति की तरह उसमें प्रवेश किया हूँ, और उस समय मेरा नाम 'विलियम विजेता' रखा गया... मैं इस स्वप्न के आधार पर यकीन रखता था कि इंग्लैंड की आध्यात्मिक विजय केवल मेरे इंग्लैंड जाने के साथ ही जुड़ी है, लेकिन आख़िरकार अल्लाह के फज़ल से मैं इंग्लैंड पहुँच गया हूँ और अब मेरे अनुसार इंग्लैंड की विजय की नींव रख दी गई है। आसमान पर इसकी विजय की नींव रख दी गई है, और अपने समय पर इसका ऐलान धरती पर भी हो जाएगा... इंग्लैंड जीत लिया गया है। खुदा का वादा पूरा हुआ। इसकी विजय की शर्त आसमान पर यह तय थी कि मैं इंग्लैंड आऊँ, सो मैं अल्लाह के फज़ल से इंग्लैंड पहुँच गया हूँ, अब इसकी कार्रवाई की शुरुआत इन् शा अल्लाह शुरू हो जाएगी और अपने समय पर दूसरे लोग भी इन् शा अल्लाह देख लेंगे कि जो कुछ मैंने लिखा था वह सच है। नादान लोग नहीं जानते कि कुछ मामलों का संबंध विशेष व्यक्तियों से जुड़ा होता है, और इंग्लैंड में इस्लाम की प्रगति का प्रश्न खुदा तआला के फ़ैसले में मेरे इंग्लैंड आने से जुड़ा था। मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को जो स्वप्न दिखाई गई उसमें भी यही बताया गया था कि आपके इंग्लैंड जाने पर यह विजय शुरू होगी और मुझे भी यही दिखाया गया, और चूँकि नबियों के खलीफ़ा उन्हीं के प्रतिनिधि समझे जाते हैं, इसलिए दोनों स्वप्नों का अर्थ एक ही था। हज़रत मसीह मौऊद के स्वप्न से मुराद उनके खलीफ़ा के इंग्लैंड जाने से थी, और मेरे स्वप्न से मुराद भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इंग्लैंड जाने से थी। तो जब मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने आध्यात्मिक प्रतिनिधि के माध्यम से इंग्लैंड पहुँच गए, तो अब इन् शा अल्लाह विजय का दरवाज़ा भी खोल दिया जाएगा, जो कि हमेशा से निश्चित है।"

(अल्-फ़ज़ल, क्रादियान दारुल-अमान, 4 अक्टूबर 1924, पृष्ठ 3, स्तंभ 3)

"विलियम द कॉन्करर" वाला स्वप्न सच में भी पूरा हुआ

हज़रत खलीफ़ा-ए-मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु को एक स्वप्न में दिखाया गया था कि वे समुद्र के किनारे एक स्थान पर उतरे हैं और एक लकड़ी के तने पर पैर रखकर एक बहादुर और सफल सेनापति की तरह चारों ओर नज़र दौड़ाई है और आवाज़ आई, "विलियम द कॉन्करर।" हज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हु के यूरोप के दौरे के दौरान यह स्वप्न भी पूरा हुआ। हज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस स्वप्न को वास्तविक रूप से पूरा करने के लिए 2 अक्टूबर 1924 ई. को एक यात्रा की, जिसमें उन्होंने पिर्वेंसी (Pevensi) का दौरा किया। फिर वहाँ से पिर्वेंसी खाड़ी के किनारे पहुँचे और एक नाव लेकर उस स्थान पर गए जहाँ विलियम द कॉन्करर उतरे थे।

(अल्-फ़ज़ल, क्रादियान दारुल-अमान, 20 नवंबर 1924, पृष्ठ 5, स्तंभ 2)

हज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं

"जब मैंने यूरोप जाने का फ़ैसला किया, तो मुझे वह स्वप्न याद आया जिसमें मैंने स्वयं को विलियम द कॉन्करर के रूप में देखा था... जब मैंने इंग्लैंड के तट पर कदम रखा, तो मुझे समझ में आ गया कि अब खुदा के फज़ल से यह विजय हो गई है। इसलिए मैंने उसी समय एक लेख लिखा जो अल्-फ़ज़ल में प्रकाशित हुआ। उसमें मैंने लिख दिया था कि इंग्लैंड की आध्यात्मिक विजय शुरू हो चुकी है।"

(अख़बार अल्-फ़ज़ल, क्रादियान दारुल-अमान, 4 दिसंबर 1924, पृष्ठ 5, स्तंभ 3)

दमिश्क की भविष्यवाणी कैसे पूरी हुई

दमिश्क से संबंधित हदीस के शब्द इस प्रकार हैं

بَعَثَ اللَّهُ تَعَالَى الْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ فَيَنْزِلُ عِنْدَ الْمَنَارَةِ الْبَيْضَاءِ شَرْقِيَّ دِمَشْقَ بَيْنَ مَهْرُودَيْنِ وَأَضْعَا كَفِّيهِ عَلَى أَجْبَحَةِ مَلَكَيْنِ.

अर्थात् अल्लाह तआला मसीह इब्ने मरिया को अवतरित करेगा जो दमिश्क के पूर्वी सफेद मीनार के पास दो पीली चादरें पहने और दो फरिश्तों

के पंखों पर हाथ रखे हुए उतरेंगे।"

(मुस्लिम, किताब अल्-फितन, बाब वर्णन अल-दज्जाल व सफ़ात) हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस हदीस की व्याख्या में फ़रमाते हैं

ثُمَّ يُسَافِرُ الْمَسِيحُ الْمَوْعُودُ أَوْ خَلِيفَتُهُ مِنْ خُلَفَائِهِ إِلَى الْأَرْضِ
دِمَشْقَ فَهَذَا مَعْنَى الْقَوْلِ الَّذِي جَاءَ فِي حَدِيثِ مُسْلِمٍ أَنَّ عَيْسَى يَنْزِلُ
عِنْدَ مَنَارَةِ دِمَشْقَ.

अर्थात् "फिर मसीह मौऊद या उसके खलीफ़ाओं में से कोई खलीफ़ा दमिश्क की धरती की ओर यात्रा करेगा, यही उस कथन का अर्थ है जो मुस्लिम की हदीस में आया है कि ईसा दमिश्क के मीनार के पास उतरेंगे।"

(हमामतुल बुशरा, पृष्ठ 37, उर्दू अनुवाद पृष्ठ 121)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उपरोक्त हदीस की व्याख्या में फ़रमाते हैं

"यदि इन कुछ विभिन्न हदीसों को, जो अभी तक हमारी वर्तमान स्थिति से मेल नहीं खातीं, केवल बाहरी अर्थ में लिया जाए, तब भी इसमें कोई हर्ज की बात नहीं है, क्योंकि संभव है कि खुदा तआला इन भविष्यवाणियों को इस आज़िज़ के किसी ऐसे पूर्ण अनुयायी के माध्यम से किसी समय पूरा कर दे, जिसे अल्लाह की ओर से मसीह के समान दर्जा प्राप्त हो। और हर व्यक्ति समझ सकता है कि अनुयायियों के माध्यम से कुछ सेवाओं का पूरा होना वास्तव में ऐसा ही है जैसे हमने अपने हाथ से वे सेवाएँ पूरी की हों। विशेषतः जब कुछ अनुयायी 'फ़ना फ़ि-शेख' की स्थिति अपनाकर हमारा ही रूप धारण कर लें और खुदा का फ़ज़ल उन्हें उसी प्रकार का दर्जा प्रदान कर दे जो हमें प्रदान किया गया है, तो इस स्थिति में निःसंदेह उनका किया हुआ कार्य हमारा ही किया हुआ कार्य है, क्योंकि जो हमारे मार्ग पर चलता है वह हमसे अलग नहीं है और जो हमारे उद्देश्यों को हममें होकर पूरा करता है, वह वास्तव में हमारे ही अस्तित्व में शामिल है।"

(इज़ाला औहाम, भाग 1, रूहानी खज़ायन, भाग 3, पृष्ठ 316)

सैय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु दमिश्क की मीनार में ईसा मसीह के अवतरण की भविष्यवाणी की पूर्ति के बारे में कहते हैं, जबकि वह इस यात्रा के दौरान दमिश्क में उतरे थे

"मीनार के पास आपका उतरना वास्तव में मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का ही उतरना माना जाएगा"

हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु एक बार अपने दोस्त मौलवी अब्दुल कादिर से इस्लाम के प्रसिद्ध प्रतीक मीनार (मिनार) के बारे में चर्चा कर रहे थे। उन्होंने उनसे पूछा कि वह कौन सा मीनार है जिस पर उनके अनुसार हज़रत ईसा का उतरना है। मौलवी साहब ने कहा कि यह मीनार उमैया मस्जिद में है, जबकि एक और मौलवी ने कहा कि यह ईसाई क्षेत्र में है। किसी ने यह भी कहा कि हज़रत ईसा खुद आकर इसे बनाएंगे।

सुबह हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु ने होटल में नमाज़ पढ़ाई, जिसमें उनके साथ दो साथी – जुल्फिकार अली खान और डॉक्टर हशमतुल्लाह साहब शामिल थे। नमाज़ के बाद उन्होंने देखा कि सामने एक सफेद मीनार थी और उनके तथा मीनार के बीच केवल एक सड़क का फासला था। उन्होंने कहा, "यही वह मीनार है और हम इसके पूर्व में थे। यही वहाँ का सफेद मीनार था, अन्य मीनार उमैया मस्जिद के थे जो नीले रंग के थे। जब मैंने इस सफेद मीनार को देखा और मेरे पीछे दो ही लोग थे, तो मुझे लगा कि हदीस भी पूरी हो गई।"

(अख़बार अल्-फ़ज़ल, कादियान दारुल-अमान, 4 दिसंबर 1924, पृष्ठ 7, 6)

आपका इस मीनार के पास उतरना वास्तव में हज़रत मसीह मौऊद का ही उतरना माना जाएगा, क्योंकि हज़रत मसीह मौऊद ने भविष्यवाणी की थी कि मसीह से मुराद मसीह का खलीफ़ा है। इसके अतिरिक्त, आप

मसीह के उत्तराधिकारी और मसीह के समान थे। जो लोग अहमदिया समुदाय के साहित्य से परिचित हैं, वे इस बात को अच्छी तरह समझते हैं, और एक अजनबी भी आपको मसीह कहे बिना नहीं रह सका। हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं

"अल्लाह ने शुरू से ही ऐसे हालात बनाए कि विशेष संकेत प्रकट होने लगे। जहाज़ में मेरे साथी मेरे आगे-पीछे बैठे थे। जहाज़ का डॉक्टर आया और हमें देखता रहा, फिर उसने सबको गिना। गिनने के बाद थोड़ी देर तक सोचता रहा और फिर मेरी ओर देख कर कहने लगा, 'मसीह और उसके बारह शिष्य।' ऐसे शब्द अल्लाह तआला की ओर से ही ज़बान पर आते हैं।"

(अख़बार अल्-फ़ज़ल, कादियान दारुल-अमान, 4 दिसंबर 1924, पृष्ठ 7, स्तंभ 1)

रोग का इलाज ढूँढना

विलायत पहुँचने से पहले रास्ते से ही हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु ने जमाअत के नाम जो पत्र तहरीर फ़रमाया, उसमें आपने यात्रा की उद्देश्य और गायत पर भी मुस्लिसर रोशनी डाली है। आपने फ़रमाया

"जिस काम के लिए मैं जा रहा हूँ वह अपने में बिल्कुल नीराला है, ऐसा नीराला कि अब तक हमारे कुछ दोस्त भी इसे नहीं समझ पाए। मैंने सुना कि एक दोस्त रेल में एक गैर अहमदी को समझा रहे थे कि उनके विलायत जाने की उद्देश्य तब्लीग़ इस्लाम है, हालाँकि तब्लीग़ इस्लाम हर एक का फ़र्ज़ है और मेरा भी, परंतु जैसा कि मैंने बवज़ह लिखा है तब्लीग़ के लिए बाहर जाना खलीफ़ा के लिए दरुस्त नहीं, इसका असल काम तब्लीग़ की निगरानी है। इसका मबालेग़ के तौर पर बाहर जाना सिलसिले के लिए ऐसी खतरनाक मुश्किलात पैदा कर सकता है जिनसे बाहर निकलना मुश्किल हो जाए। पास यह यात्रा तब्लीग़ के लिए नहीं है बल्कि तब्लीग़ की मुश्किलात को मालूम करने और ऐसा स्थानीय इल्म हासिल करने के लिए है जो आइंदा गरबी ममालिक में तब्लीग़ करने के लिए मददगार हो। और उन खतरनाक आफात को मालूम करने और उनका इलाज ढूँढने के लिए है जो गरबी ममालिक में इस्लाम के फैलने के साथ ही पैदा होने वाली हैं और जिन्हें अगर पहले से नज़र न रखा गया तो इस्लाम का गरब में फैलना ही इस्लाम की तबाही का सबब बनेगा।"

(अल्फ़ज़ल कादियान दारुल अमान 16 अगस्त 1924 ई. पृष्ठ 5 कॉलम 1)

यूरोप में तब्लीग़ इस्लाम के लिए क्या क्या दिक्कतें दरपेश हैं, बयान फ़रमाने के बाद हज़रत ने फ़रमाया

"अतः हम दो आगों में हैं और हमारी मिसाल वही है कि न जाए मान्दन न जाए रफ़तन। इस मुश्किल का इलाज सोचने के लिए या वहाँ के स्थानीय हालात मालूम करने के लिए ताकि मबालेग़ की सख्ती से निगरानी हो सके, और जहाज़ को चट्टानों में से बहफ़ाज़त गुज़ारा जा सके इस बात की ज़रूरत पेश आई है और गालिबन अब आप लोग समझ गए होंगे कि कैसी मुश्किल उद्देश्य है, सिवाए खुदा तआला की मदद के हम इस मुश्किल को हल नहीं कर सकते। मुसलमान बनाना आसान है परंतु इस्लाम को उनसे बचाना मुश्किल है और इस वक़्त मेरे यात्रा की यही उद्देश्य है।"

(अल्फ़ज़ल कादियान दारुल अमान 16 अगस्त 1924 ई. पृष्ठ 7 कॉलम 1)

इंग्लैंड की रूहानी फतह शुरू हो चुकी है

हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं "गौ दुश्मन हूँसेगा और तमसख़ुर उड़ाएगा परंतु मैं उसकी हँसी की परवाह न करते हुए इस बात के इज़हार से नहीं रुक सकता कि खुदा तआला के फ़ज़ल से इंग्लैंड की रूहानी फतह शुरू हो चुकी है... जो कुछ मैं कहता हूँ वह एक रूहानी अमर है जिसे केवल वही देख सकते हैं जिनकी रूहानी आँखें हों।"

(अल्फ़ज़ल कादियान दारुल अमान 4 अक्टूबर 1924 ई. पृष्ठ 3 कॉलम 3)

सोच से ऊपर की सफलता

हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं

(ऐसा ही पृष्ठ 5 कॉलम 2)

"इस यात्रा में ऐसी सफलता हासिल हुई है कि जो मानव की सोच और खयाल से ऊपर है... जमाअत को तैयार हो जाना चाहिए कि अल्लाह ने जो बीज बोया है उसकी आबपाशी करें। यह बीज मयस्सर न आ सकता था अगर हम इस यात्रा के बिना कोशिश करते रहते लेकिन खुदा तआला ने ऐसे सामान कर दिए कि बीज उपलब्ध आ गया अब जबकि बीज उसने दिया है अगर हम अपने अमाल और कुर्बानियों का पानी नहीं देंगे तो बढ़ेगा नहीं ... जो बीज सारी दुनिया में बिखेरा गया उसके लिए कितने पानी और किस क़दर देखरेख की ज़रूरत है... अब काम बहुत ज़्यादा बढ़ गया है।"

(अखबार अल्फज़ल क्रादियान दारुल अमान 4 दिसंबर 1924 ई. पृष्ठ 8,9)

मस्जिद की तामीर की शोहरत पूरी दुनिया में

दुनिया के हर तीन आदमी में से एक आदमी को यह बात पहुँच चुकी है

हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं

"इस वक्त तक करीब बीस पच्चीस करोड़ इंसान यह बात सुन चुके हैं कि लंदन में एक मस्जिद बनी है जिसका उद्घाटन हुआ और जिसे इस अहमदी जमाअत ने बनाया जिसका इमाम मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब हैं जिन्हें खुदा ने मसीह मौऊद और नबी बनाकर भेजा और जिसका काम इस्लाम का प्रचार करना है। दुनिया के हर तीन आदमी में से एक आदमी को यह बात पहुँच चुकी है और खुद इंग्लैंड के अखबार नवीसों और अन्य सरबराद लोगों की यह राय है कि अगर हम दो करोड़ रुपये भी खर्च करते तो इतनी इशात न होती जितनी अब हो गई है बल्कि कुछ ने तो यह भी कहा है कि दो करोड़ रुपये नहीं दो करोड़ पौंड भी यह काम न करते जो इस रुपये ने कर दिया जो मस्जिद पर खर्च हुआ।"

(अल्फज़ल क्रादियान दारुल अमान 9 नवंबर 1926, पृष्ठ 10 कॉलम 1)

प्रेस ने कभी किसी बादशाह के लिए भी ऐसी तवज्जो नहीं की

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं

"इन सफलताओं का जो खुदा तआला ने मुझे दीं, मुझे एक शर्क्स ने जो इंग्लैंड के एक अखबार से ताल्लुक रखता था कहा, और कुछ और ने भी कहा कि आप लोग इसका अंदाज़ा ही नहीं कर सकते जो सफलता आप लोगों को यहाँ हुई है और जिस तरह प्रेस ने आपको मदद दी है... जिस तरह हमारे मुतालिक अखबारों ने तवज्जो की है कभी किसी बादशाह के मुतालिक भी नहीं की। हमें बताया गया कि यहाँ के अखबार किसी बड़े से बड़े बादशाह के लिए तीन चार दफ़ा से ज़्यादा वर्णन नहीं करते, और फिर नहीं पूछते कि कौन है, परंतु आप दो महीने यहाँ रहे और हर मौके पर आपके मुतालिक अखबारों ने मज़ामीन प्रकाशित किए हैं... यह बिल्कुल गैर मामूली बात है... हर मौके पर बड़े बड़े अखबारों के नामा निगार और मज़मून नवीस आते और ऐसे रंग में मज़मून प्रकाशित करते कि मालूम होता उन्हें हमसे पूरी हमदर्दी है।"

(अखबार अल्फज़ल क्रादियान दारुल अमान 4 दिसंबर 1924 ई. पृष्ठ 4 कॉलम 3 शीर्षक हालात सफर)

फ़रमाया :

"यह मालूम होता था कि यहाँ (यानि हिंदुस्तान में - नकल) जो यह खयाल किया जाता है कि अंग्रेज हिंदुस्तानियों को इज़्ज़त की नज़र से देखते हैं, वहाँ पर मालूम होता था कि हमारे सिवा वह किसी की इज़्ज़त ही नहीं करते।"

फ़रमाया "बड़े बड़े देशों में लंबी अवधि में भी नाम पहुंचाना मुश्किल होता है, परंतु हमारी शोहरत बिजली की सी तेजी के साथ हो जाती है।"

पोप के खिलाफ और हज़रत के हक में अखबार का तब्बिरा इटली में हज़रत ने पोप से मिलना चाहा। पोप ने कहा "चूँकि मेरा मकान बन रहा है, इसलिए इन दिनों मुलाकातें बंद हैं।"

इटली का सबसे बड़ा अखबार, जिसकी रोजाना आठ लाख छपाई है, के संपादक को जब हज़रत ने पोप का उत्तर बताया तो हज़रत फ़रमाते हैं कि उसने अपने लेख में लिखा कि

"आश्चर्य है, एक सरदार आता है और पोप से मिलना चाहता है लेकिन पोप कहता है कि चूँकि मकान की मरम्मत हो रही है, इसलिए मिल नहीं सकता, अब हमेशा ही उसके मकान की मरम्मत होती रहेगी। यह कितना ताकतवर वाक्य है जो एक ईसाई अखबार और इस कदर प्रभावशाली अखबार पोप के बारे में लिखता है।" (ऐसा ही पृष्ठ 5 कॉलम 3 ,2)

मिस्र में सफलता

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं

"वहाँ पहुँचते ही लोगों की हमारी तरफ ऐसी तवज्जो हुई कि खिलाफ़त की दोनों पार्टियाँ आई, एक पार्टी के आदमी कहीं कि हमारे साथ शामिल हो जाओ और दूसरी के कहीं हमारे साथ। उन्हें हमारी मुखालफत याद न रही।"

"दो मआज़िज़ और बासर असर आदमियों ने कहा कि अगर आप ठहरें तो बेअत कर लें। एक तो तुर्क था जिसने कहा कि मैं यहाँ देने के लिए आया था, लेकिन मालूम हुआ कि ये लोग देने को छोड़ चुके हैं। मैं आपके साथ मिलकर काम करना चाहता हूँ।" (ऐसा ही पृष्ठ 6 कॉलम 1)

दमिश्क में सफलता

हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं "दो दिन तक किसी ने कोई तवज्जो न दी। मैं बहुत घबरा गया और दुआ की कि हे अल्लाह, भविष्यवाणी जो दमिश्क के बारे में है, किस तरह पूरी होगी... तू अपने फ़ज़ल से सफलता अता फ़रमा। जब मैं दुआ करके सोया तो रात को ये अल्फ़ाज़ मेरी ज़बान पर जारी हो गए "अब्दुन मुकर्रमुन" अर्थात हमारा बंदा जिसे इज़्ज़त दी गई। इससे मैंने समझा कि तब्लीग़ का सिलसिला यहाँ खुलने वाला है। चूँकि दूसरे ही दिन जब उठे तो लोग आने लग गए, यहाँ तक कि सुबह से रात के बारह बजे तक दो सौ से लेकर बारह सौ तक लोग होटल के सामने खड़े रहते।" (इसी से, पृष्ठ 6 कॉलम 2)

कॉलेजों के लड़के और प्रोफेसर आते, कॉपियाँ साथ लाते और जो मैं बोलता, लिखते जाते। अगर कोई शब्द रह जाता तो कहते, "या उस्ताद ज़रा ठहरिए, यह शब्द रह गया है।" गोया इंजील का वह नज़ारा था जहाँ "ए उस्ताद" करके हज़रत मसीह को संरक्षक करने का वर्णन है। अगर किसी मौलवी ने खिलाफ बोलना चाहा तो वही लोग उसे डांट देते।" (ऐसा ही पृष्ठ 6 कॉलम 3)

तब्लीग़ के उसूल तय हुए

हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं "मैंने इस यात्रा में जो तब्लीग़ के उसूल तय किए हैं, उनमें से कुछ मौलवी अब्दुल रहीम साहिब दर्द को लिखकर दे आया हूँ और कुछ लिख रहा हूँ।" (इजाज़त, पृष्ठ 8, कॉलम 1)

सेशन के अध्यक्ष का प्रभाव

हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं "सेशन के अध्यक्ष ने तीन-चार बार कहा और घर में भी आकर कहा कि इस्लाम एक ज़िंदा धर्म है और सिलसिला अहमदिया इसका ज़िंदा सबूत है।" (इजाज़त, पृष्ठ 7, कॉलम 3)

पश्चिम की बीमारी का इलाज- मसीह मौऊद का नाम और उनका वर्णन

हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं "इस यात्रा से दो बड़े अहम प्रश्न भी

हल हो गए और उनकी वजह से सबसे बड़ी खुशी हासिल हुई। एक तो यह कि कहा जाता था कि पश्चिम में मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का वर्णन मारने वाला ज़हर है, लेकिन हमें इस यात्रा के दौरान यह स्पष्ट हो गया है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वर्णन के बिना पश्चिम की बीमारियों का कोई इलाज ही नहीं है।"

(इजाज़त, पृष्ठ 8, कॉलम 2)

दूसरा प्रश्न यह हल हुआ कि मैं इस ख़तरे को अपने दिल में लेकर गया था कि यूरोप इस्लाम की नग्न शिक्षा को स्वीकार नहीं कर सकता, और अब मैं इस यकीन के साथ वापस आया हूँ कि यकीनन स्वीकार कर सकता है।"

(इजाज़त, पृष्ठ 8, कॉलम 3)

यूरोप का यात्रा और एक गैर-अहमदी का स्वप्न

हज़रत मौलाना शेर अली साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो ने 26 सितंबर 1924 ई. के जुमा के ख़ुत्बे में एक गैर-अहमदी के सपने का वर्णन किया, जो हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हो के यूरोप के यात्रा के बारे में था। क्या स्वप्न था और किस तरह से पूरा हुआ, इसका वर्णन हम हज़रत मौलाना शेर अली साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो के शब्दों में ही करते हैं। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया :

ख़ुदा तआला अपने प्यारे बंदों और रास्तबाज़ों की कई तरीकों से सहायता और मदद फ़रमाता है। उनमें से एक तरीका यह है कि वह रोया, इल्हाम और कश्फ के ज़रिये उनकी सच्चाई ज़ाहिर करता है, और इस तरह नेक दिल लोग ख़ुदा से उनकी सच्चाई और सिद्क की गवाही पाकर उन्हें क़बूल करते हैं... आज मैं इसी प्रकार की एक आसमानी गवाही आपको सुनाता हूँ। यह एक ऐसे रिसाले में वर्णित है जो कई वर्षों पहले प्रकाशित हो चुका है। इस रिसाले का नाम 'सूफ़ी' है। यह किसी अहमदी का रिसाला नहीं बल्कि गैर-अहमदियों का है। इसमें एक लेख प्रकाशित हुआ है और इस लेख का लेखक भी कोई अहमदी नहीं बल्कि ऐसा व्यक्ति है जो सिलसिला अहमदिया का विरोधी है और हमारी जमाअत उसके नाम से परिचित है, क्योंकि कुछ समय पहले उसने हज़रत खलीफ़तुल मसीह को बड़े जोर से मुबाहला का चैलेंज दिया था, लेकिन जब आपने आमादा होने का इज़हार किया तो वह खामोश हो गया। वह ख़्वाजा हसन निजामी है। इस रिसाले में उसका एक लेख प्रकाशित हुआ है जिसमें उसने भौतिकवादी दुनिया पर रोया और स्वप्न की हकीकत ज़ाहिर करते हुए कुछ ख़्वाबें लिखी हैं। पहला स्वप्न वह नवाब सैयद सदरुद्दीन खान साहिब, रईस रियासत बड़ौदा का वर्णन करता है कि "एक मकान में सामान बांध रखा है और घरवाले किसी बड़े यात्रा की तैयारी में व्यस्त हैं। इतने में देखा कि मकान का मालिक भी बड़ी व्यस्तता के साथ सामान तैयार कर रहा है। आखिर में उन्होंने फ़रमाया, जहाज़ तैयार करो और इस सामान को उस पर लादो। पूछा, हज़ूर, कहां का इरादा है? फ़रमाया, यूरोप जा रहा हूँ। इलाज करना है। यह पूछा गया कि आपका नाम क्या है? फ़रमाया, मेरा नाम उमर बिन अल-खत्ताब है।"

इस रौया (स्वप्न) की ताबीर (व्याख्या) भी हसन निजामी साहिब स्वयं करते हैं, और वह यह है कि नवाब साहिब के इस स्वप्न में हालांकि एक बात पर खास ध्यान देने की ज़रूरत है कि उमर फ़ारूक रज़ियल्लाहु अन्हो का यह कहना कि "यूरोप इलाज के लिए जा रहा हूँ," इसका अर्थ यह है कि क्या वे खुद वहां इलाज कराने जा रहे हैं, या यह कि यूरोप के लोगों का इलाज करने जा रहे हैं। लेकिन दोनों ही सूरतों में व्याख्या विज्ञान और भौतिकवाद के खिलाफ ही निकलती है। अगर पहली सूरत मानी जाए, अर्थात हज़रत खुद यूरोप में इलाज कराने जा रहे हैं, तो इसका अर्थ यह होगा कि अहले-रुहानियत (आध्यात्मिक लोग) अपनी बीमारी (अज्ञानता) का इलाज यूरोप जाकर वहां जानकारी हासिल करके करेंगे और उसके बाद भौतिकवाद की बीमारियों का वहां बैठकर इलाज करेंगे। और दूसरी

रूप में, भौतिकवादी यूरोप के इलाज की तैयारियां और उपाय किए जा रहे हैं। यह स्वप्न इतना स्पष्ट और ज़ाहिर है कि मुझे इसकी ताबीर करने की ज़रूरत नहीं... इधर आप इस स्वप्न और उसकी ताबीर को पढ़ें, और उधर हज़रत खलीफ़तुल मसीह का वह ऐलान, जो उन्होंने यूरोप के यात्रा के उद्देश्यों के बारे में प्रकाशित किया है, का अध्ययन करें, तो आपको मालूम हो जाएगा कि यह कितना सच्चा स्वप्न है और सिलसिले की सच्चाई का कितना ज़बरदस्त निशान है।

(विशेषतः जब हज़ूर का इल्हामी नाम भी उमर है)।

(अल्-फज़ल, क़ादियान, दारुलअमान, 9 अक्टूबर 1924, पृष्ठ 8)

यह इलाही यात्रा दुनिया में अहमदियत की फतेह व ज़फ़र (विजय और सफलता) के लिए एक बीज की तरह था। इसका बढ़ना, फलना और फूलना हम पूरी दुनिया में देख रहे हैं। अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक दे कि हम इसमें अपना भरपूर हिस्सा डालने वाले बनें। अल्लाह तआला हमें स्वीकृत सेवाओं की तौफ़ीक दे, आमीन।

(मंसूर अहमद मसरूर)



घोषणा ड्राइवर पद के लिए आवेदन आमंत्रित

किए जा रहे हैं - सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान शर्ते

1. उम्मीदवार की आयु 18 वर्ष से अधिक और 40 वर्ष से कम होनी चाहिए।
2. उम्मीदवार के पास कम से कम दसवीं कक्षा पास होना आवश्यक है।
3. उम्मीदवार के पास चार पहिया वाहन चलाने का वैध लाइसेंस होना आवश्यक है।
4. उम्मीदवार के लिए किसी सरकारी या निजी संस्था में ड्राइविंग का कम से कम 2 वर्ष का अनुभव होना आवश्यक है। इसके अलावा, अपनी आवेदन के साथ उस संस्थान का अनुभव प्रमाणपत्र भी प्रस्तुत करना आवश्यक है जहां उम्मीदवार ने अनुभव प्राप्त किया है।
5. उम्मीदवार को अपना जन्म प्रमाणपत्र जमा करना होगा।
6. उम्मीदवार को लिखित परीक्षा और साक्षात्कार में सफल होना आवश्यक है।
7. लिखित परीक्षा और साक्षात्कार में सफल होने वाले उम्मीदवारों का ड्राइविंग टेस्ट भी लिया जाएगा।
8. उम्मीदवार के लिए आवश्यक होगा कि वह नूर अस्पताल क़ादियान से चिकित्सा फिटनेस प्रमाणपत्र के अनुसार स्वस्थ और तंदुरुस्त हो।
9. चयनित ड्राइवर को नियुक्ति के बाद दूसरे श्रेणी के बराबर भत्ते और अन्य सुविधाएं प्रदान की जाएंगी।
10. चयन होने की स्थिति में उम्मीदवारों को क़ादियान में प्रारंभिक पांच वर्षों तक अपनी आवास की व्यवस्था स्वयं करनी होगी।
11. उम्मीदवार के यात्रा खर्च (आवागमन) स्वयं करेगा।

नोट लिखित परीक्षा, साक्षात्कार और ड्राइविंग टेस्ट की तारीख के बारे में उम्मीदवारों को बाद में सूचित किया जाएगा।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

नज़रात दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान,
पिन कोड 143516

मोबाइल 09888232530, 09682627592

दफ़्तर 01872-501130

ई-मेल diwan@qadian.in





मस्जिद फज़ल लंदन की आधारशिला के 100 वर्ष पूरे होने पर लंदन में आयोजित एक विशेष जलसे में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ ने एम.टी.ए स्टूडियो इस्लामाबाद से ख़िताब फ़रमाते हुए



ख़िताब के दौरान श्रोताओं के दो दृश्य



बिजली की लड़ियों से सजी हुई मस्जिद फज़ल लंदन की एक खूबसूरत तस्वीर

EDITOR SHAIKH MUJAHID AHMAD Editor : +91-9915379255 e-mail : badarqadian@gmail.com www.alislam.org/badr	REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553	MANAGER : SHAIKH MUJAHID AHMAD Mobile : +91-9915379255 e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
	The Weekly BADAR Qadian Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA Postal Reg. No. GDP/45/2023-25 Vol. 8 19-26 December 2024 issue no 51-52	
ANNUAL SUBSCRIPTION: Rs. 600/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue		

98 साल पहले मस्जिद फज़ल लंदन का भव्य उद्घाटन

सैय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

विरोधियों ने यह कोशिश भी की थी कि लंदन में मस्जिद ही न बने, लेकिन अल्लाह ने उनकी कोशिशों को नाकाम कर दिया। उसने न केवल मस्जिद बनाने की तौफ़ीक़ दी, बल्कि ऐसे साधन भी पैदा कर दिए कि मस्जिद पूर्ण होने के बाद उसका भव्य उद्घाटन भी हो गया। यह उद्घाटन इतना शानदार था कि हर किसी ने माना कि इसकी मिसाल पहले कभी नहीं देखी गई। लगभग 200 से अधिक ब्रिटिश अख़बारों ने इस पर जोरदार शब्दों में चर्चा की। ये अख़बार इंग्लैंड के थे, लेकिन अन्य देशों के अख़बारों में भी इसका उल्लेख हुआ। उनकी रिपोर्ट्स और कटिंग्स लगातार आ रहे हैं। इस प्रकार, इस समय तक लगभग 20-25 करोड़ लोग यह सुन चुके हैं कि लंदन में एक मस्जिद बनी है। जिस का उद्घाटन हुआ और जिसे अहमदी जमाअत ने बनाया है, जिसके इमाम हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब हैं, जिन्हें अल्लाह ने मसीह मौऊद और नबी बनाकर भेजा है। जिसका कार्य इस्लाम का प्रचार है। दुनिया के हर तीन में से एक व्यक्ति तक यह ख़बर पहुंच चुकी थी। खुद ब्रिटिश पत्रकारों और अन्य प्रमुख हस्तियों की यह राय थी कि अगर हम दो करोड़ रुपए भी खर्च करते, तो इतना व्यापक प्रचार नहीं हो पाता जितना इस मस्जिद के निर्माण और उद्घाटन से हुआ। बल्कि कुछ लोगों ने तो यहां तक कहा कि दो करोड़ रुपए नहीं, बल्कि दो करोड़ पाउंड भी यह काम नहीं कर सकते थे, जो उस धन ने कर दिखाया जो मस्जिद पर खर्च हुआ। मस्जिद के उद्घाटन में कई बड़े लोग शामिल हुए। तीन लॉर्ड्स, 13 संसद सदस्य, विभिन्न देशों के राजदूत, मंत्री, नवाब और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। इतना ही नहीं, इन उच्च वर्ग के लोगों ने न केवल उपस्थिति दर्ज कराई, बल्कि उन्होंने गहरी रुचि ली और अपनी खुशी ज़ाहिर की। कुछ लोगों ने तो इस आयोजन में काम करना अपने लिए गर्व समझा और हर काम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। फिर भारत के भी कई बड़े-बड़े लोग इसमें शामिल हुए। यहां तक कि महाराजा वर्धमान भी आए। उन्होंने इस अवसर पर भाषण देने की अनुमति मांगी और अपनी खुशी ज़ाहिर की। उन्होंने कहा, 'हालांकि मैं हिंदू हूँ, फिर भी मैं इसमें शामिल होना अपना कर्तव्य समझता हूँ। इसके अतिरिक्त, 11 सरकारों के प्रतिनिधि भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए। जर्मनी, इटली, चीन आदि देशों के मंत्री भी इस आयोजन का हिस्सा बने।

अतः यह उन लोगों के लिए जवाब है, जो पूछते हैं कि मस्जिद के लिए जो धन इकट्ठा हुआ, वह कहाँ गया। वह धन यहीं खर्च हुआ।

(अल्-फ़ज़ल, क़ादियान दारुल-अमान, 9 नवंबर 1926 ई.)